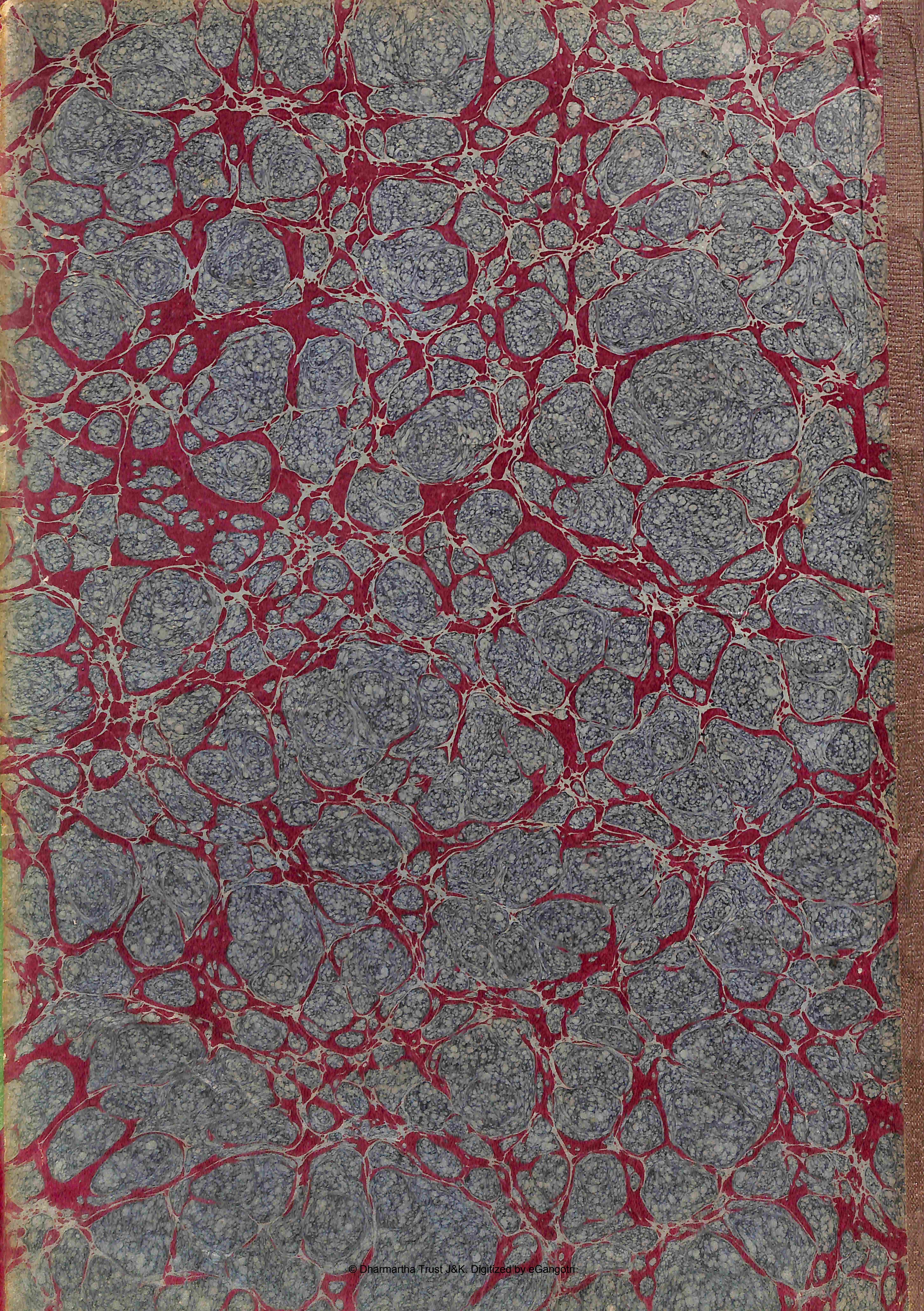
नं० ५५१५ – घ

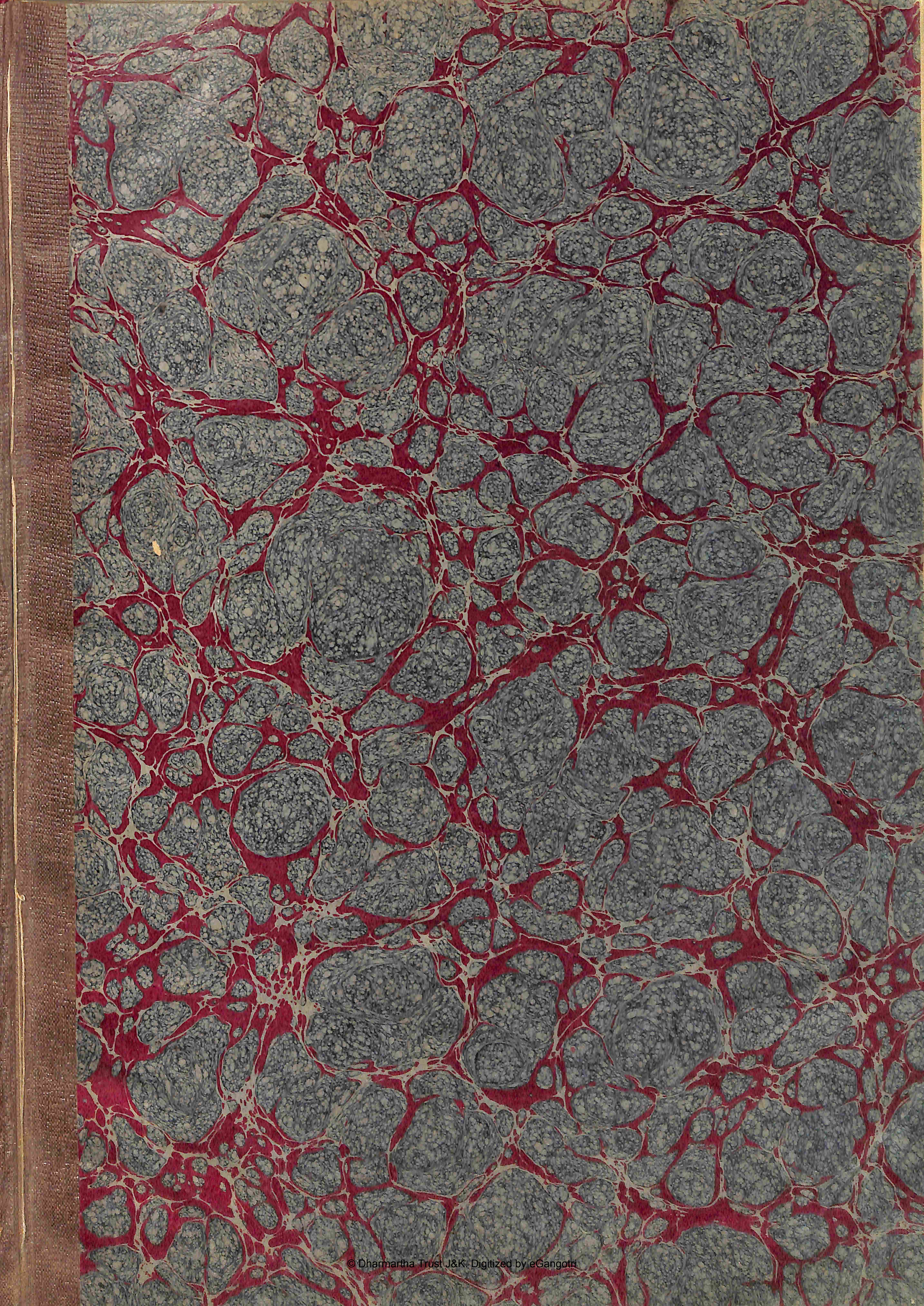
दृष्टान्तयुक्तिः (वेदान्तशास्त्रम्

पत्राणि १०१ सम्पूर्णम्

हंसो युक्ति

१५८





नं० ५५१५-घ
पत्राणि १०१ दृष्टान्त युक्ति: (वेदान्त शास्त्रम्) (सम्पूर्णम्)

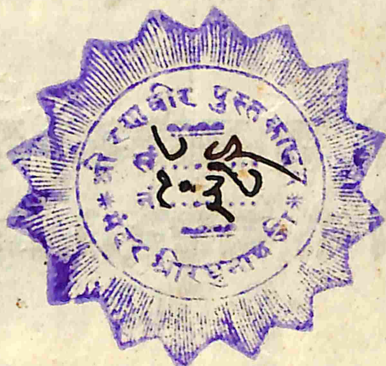
नं. १०२८-क
दृष्टान्त युक्ति
१०० पत्राणि
वेदान्त

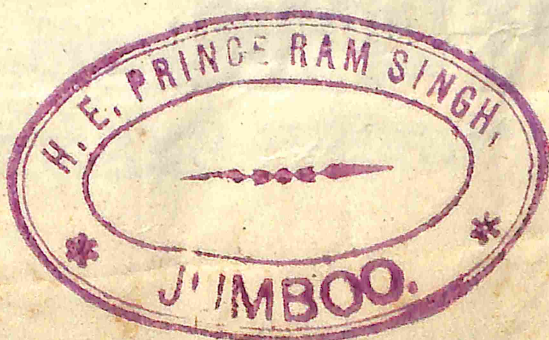
5515
100

#47 Double
#67-68 Missed
अपूर्ण

१२६

८२




H. E. PRINCE RAM SINGH,
JUMBOO.

ॐ १

ॐश्रीगणेशायनमः अथ युक्ति सूची पत्र लिख
ते॥ ॥ पत्रा॥ पंक्तिः

१ युक्तिः चार स्त्रियों की प्रथम युक्तिः
२ जीवन्मुक्त विदेह मुक्त निर्णय की युक्तिः
३ बुद्धिके निर्णय विषे तत्व ज्ञान होनेकी॰
४ कर्तृत्व भोक्तृत्व निर्णयकी यु॰
५ जीवरूपी वेश्याके नाचनेकी यु॰
६ तत्वमसी श्रुतीके अर्थ सिद्ध॰ यु॰
७ सनकादिकोंके ब्रह्माकार हूनी के निर्णय की यु
क्तिः
८ सनकादिकों के जन्मादिकी युक्तिः
९ ज्ञानी अज्ञानी के व्यवहार निर्णय की यु
क्तिः
१० विराटकी युक्तिः
११ षट शास्त्रके वादकी युक्तिः
१२ आण आत्माके निर्णयकी॰
१३ वैराग्यके निर्णय की यु॰
१४ निषेध द्वारे ज्ञान होनेकी यु॰
१५ बुद्धि और कर्म के निर्णयकी॰

पत्रा पे॰

१६ सच्चिदानंद आत्माके निर्ण॰
१७ पगड़ीके दृष्टांत विषे यु॰
१८ आत्मानंद के निर्णय॰
१९ इतनी गंडके विकल्प विषे तत्पद त्वंपद
कीयुक्ति॰
२० चरखे के दृष्टांत विषे॰
२१ स्वतः प्रमाण परतः प्रमा॰
२२ अहेडे के दृष्टांत विषे यु॰
२३ प्रारब्ध पुरुषार्थ सगुण निर्गुणके निर्ण॰
यविषे प्राप्तीस्वरूपको यु॰
२४ श्रवण द्वारे ज्ञान होनेकी॰
२५ सर्व कारणे के दृष्टांत॰
२६ सांडके दृष्टांत विषे यु॰
२७ निषेध विधिद्वारा ज्ञान॰
२८ मुदाद मिल दर्पण स्थानी
२९ सज्जा घोडेके दृष्टांत विषे॰
ईश्वर के अवतार निर्णयकी॰
३१ धर्मा धर्म कामके निर्णय॰
३२ युक्ति मनके साधन केनि॰
३३ कर्म उपासना ज्ञान इनोंती
नोंकेके उत्तम ज्ञानप्राप्त॰

३५ पत्रा पंक्तिः

जगत की उत्पत्तिके निर्णय विषे मोक्ष स्वरूप
प्राप्ति यु.

स्८ ३५ वेदके सार अर्थके निर्णयकी युक्तिः

३६ शीघ्र और चिरकाल विषे ज्ञान होने.

३७ अंतले पत्रों विषे प्रथम भेद सिद्धा.

३८ प्रथम भेद सिद्धान्ती

चोडे के दृष्टांत विषे

तीसरी वासनाकी युक्तिः

चौथी उलूकी युक्तिः

दो इसत्रियों की युक्तिः

गधाकी युक्तिः

सतमी गंधर्व नगरकी.

अष्टमी एक घोडा के दृष्टां

भेदके दृष्टांत विषे नवमी.

ॐश्रीगणेशायनमः॥अथ युक्ति लिख्यते॥दृष्टांत
दृष्टां- कहेहें एक पुरुष द्रव्यकी इच्छा करके घरसें नि
१ कला बनमें गया बनमें एक पुरुष बैठा था
वांतें इसनें प्रार्थना करी किहे प्रभो ऐसी कृपा
करो कि मोकों द्रव्य प्राप्त होवे उस पुरुषनें उ
सकों एक कुदाल और खड्ग दिया और पास ए
क मंदिर बनाया और कहा कि इस मंदिरमें जा
तुझ कों द्रव्य प्राप्त होवेगा वह पुरुष उसके
अंदर गया देखता क्याहे किचार स्त्री उसमें
खडी हें उन्सें पुरुषनें पूछा कि तुम कौनहो किसकुल
कीहो क्या नामहे स्त्रियां बोली हम स्त्रियां हें ब्राह्मण
के कुलकी हें जोनाम था सोबताया फेर पुरु
षने पूछा कि रहती कहां हो एकनें कहा में
अग्नि शाला में रहती हूं दूसरी ने कहा मेंद्वा
रमें रहती हूं तीसरी ने कहा में धर्मशालामें
रहती हूं चौथी ने कहा में अंतः पुरमें रहती
हूं यह कहके स्त्रियां गुमहो गईं और चार पुरु
ष निकस आये फेर उन्सें पूछा कि तुमकौन
हो क्यानाम हे किसकुल केहो उनों ने कहा
कि हम पुरुषहें क्षत्रीकुलहे और अमुके अमु

के नाममेंहैं फेर एछाकि रहते कहांहो एकनै कहा
में अग्निशाला में रहताहूं पुरुषनै कहा कि वा
हांतो अमुकी स्त्री रहती है उस्नें कहाकि मेरी।
स्त्रीहै प्रथमतो उस्का कामक्याहै औरजो रहै तो
दासीहो के रहै दूसरेसें एछाकि तूं कहां रह
ताहै उस्नें कहाकि मैं द्वार में रहता हूं पुरुषने
कहा उहांतो अमुकी स्त्री रहै है उस्नें कहाकि
मेरी स्त्रीहै प्रथम तो उस्का काम क्याहै औरजो
रहै तोदासी होके रहै तीसरेनें एछा कि तूं
कहांरहै है उस्ने कहा किमें धर्मशाला में रहा
ताहों उस्ने कहा उहांतो अमुकी स्त्री रहै है उ
स्ने कहा वहतो मेरी स्त्रीहै प्रथमतो जहां में
तहां उस्का काम क्याहै औरजो रहै तो दासीहो
के रहै चौथे सें एछा किंतूं कहां रहताहै उस्ने
कहा किमें अंतः पुरमें रहताहूं पुरुषने कहा
कि वहांतो अमुकी स्त्री रहती है उस्नेकहा कि
मेरी स्त्रीहै प्रथमतो उस्का कामक्याहै औरजोर
है तो दासी होके-तव पुरुषने सुनके कहा
कि तुमने वडा अनर्थ किया स्त्रीहोकर्के ब्रा
ह्मणी योंको त्रासमें गेरी तुमको दंड देनायोग्य
है तव पुरुष ने खड्ग काढके एयक एयक।

चारोंका शिरछेदन किया तब फेर चारों स्त्रियां प्र
यु॰ २ गट हुई स्त्रियोंने कहाकि ये हमारे पुरुषहैं हमा
सती होवेंगी यबये स्त्रीयां जलने लगी तब अं
2 तः पुरमें जोस्त्री रहतीथी सोपुरुषनें रखलीनी
और कहा कितू मेरेपास रहा कर उसको राखके फे
रतीनों स्त्रीयोंको चारों पुरुषों सहित दाह दिया।
फेर वह पुरुष स्त्रीको साथलेके कुदाल में खो
दने लगा प्रथम द्वार खोदा फेर अग्निशाला खो
दी फेर धर्मशाला खोदी फेर अंतः पुरमें गया
क्यादेखता है कि एक शिला लगरही है तबउ
स शिलाके कुदाली मारी तब उसमें से एक पु
रुष निकला तब निकल के उस पुरुष विषे॰
लय होगया फेर उसके लय होतेही वहस्त्री बु
ढिया होगई उसके बुढिया होतेही पुरुषकोद्र
व्यकी इछा जाती रही और उसी स्थानमें बैठ
रहा फेर चार स्त्रियां और निकली उनचार स्त्रि
योंको पास अपने रखलिया अब उनके संग
विलास करै है और बुढिया टहलमें है खड़्ग
और कुदाल उसके पास है उस पुरुषको अरक्त
कहिये॥यह दृष्टांत हुवा॥अबदार्ष्टांतिक क
हते हैं पुरुष कौन है कि सुमुत्त है इसकी स्त्री

छा क्योंकि अपने स्वरूपकी प्राप्ति गृह रूपी वर्णा
कों त्यागके आश्रम रूपी वर्णकों आश्रम स्थानी
वनमें गया पुरुष जो मिले सोकौंन किसद्गुरु द्रु
मस्थानी प्रार्थना क्या कि हे प्रभु मुझें स्वरूपा
की प्राप्तिहो गुरुनै विचार रूपी कुदाल और वै
राग्य रूपी खड्ग उसकों दीनी मंदिर स्थानी दे
ह बनाया और कहा कि इसमें प्रवेश कर तु
झै द्रुमस्थानी स्वरूपकी प्राप्ति होगी इसनें जो
संघात रूपी मंदिर में प्रवेश किया अंतर इसी
नें चारस्त्री देखी चारोंसें पूछा कितुम कौंन हो
क्याकुल है क्यानामहै कहांरहो हो सोउनोंनै
कहा कि हमउत्तम कुलकी हैं ब्राह्मणी सों ए
क स्त्री ने कहा कि नाममेरा लज्जाहै नेत्रमें रह
तीहूं प्रमत्त दीखैहै दूसरीने कहा किमें ^ रहती मुखमें ^
हूं और मेरानाम दयाहै तीसरीने कहाकि मेरा
नाम कीर्त्ति है हृदयमें रहतीहूं चौथीने कहा
कि मेरानाम धृतिहै अंतः पुरस्थानी अंतः क
रणमें रहती हूं उत्तम कुलकी कों कहाकि बडे
पुण्यों करके होती हैं यह कहके चारों स्त्रियां
गुम होगई फेरचार पुरुष प्रगट हुवे एक पु
रुषसें पूछा कि तू कौन है तेरा नाम क्याहै

उस पुरुषनें कहा किमें तत्रीहूं मेरानाम कामहै
नेत्रमें रहताहूं पुरुषने कहाकि नेत्रमें तो लज्जा
पु॰ रहती है उसनें कहाकि जहां में तहां लज्जाकै
३ सी इस्काप्रमाण कि जिससमें इंद्रकाम करकें व्या
3 कुल हुवा तब गौतम ऋषी एजनीयथे तिनकी
स्त्रीके अर्थ गृहमें लज्जा त्याग कर प्रवेश किया
काम करकें क्याफल हुवा कि देहमें सहस्र भग
हुए इसप्रकार दूसरे पुरुषको पूछाकि तूंकौन
है कहांरहताहैं क्यानामहै उसनेकहा कि मेरा।
नाम क्रोधहै मुखमें रहताहूं उस पुरुषनें कहा
कि वहां दया रहतीहै फेरउसने कहाकि जहांमें
तहां दया कैसी कहा कि इस्का प्रमाण क्याहै।
सोकहेंहैं किपरशु रामजी पूजनेके पात्र भीष्म
पिता महके थे पर जिस समें क्रोध आया तबा
दया नहीं रही और सन्मुख युद्ध किया जेमें एक
तत्री भीष्मपितामह रहाथा तिसनें परशुरामकों
नीचा दिखाया इसीप्रकार वैराग्य वान्को कोई।
जगत्का विषय रहजावै तोदुःखदाई होताहै फेरतीस
रेनें पूछा कि तूं कौनहै कहां रहताहैं उस क्यानाम
ने कहा किमेरा नाम लोभहै तत्री कुलहै हृ
दयमें रहताहूं उसपुरुषनें कहा कि वहांतो की

त्तिरहतीहै उसने कहाकि जहांमें तहां कीर्त्ति कै
सी इसका प्रमाण क्याहै सोकहेहैं हैं भृंगी ऋा
षी नें जिस समें लोभ किया तभी तपकी की
र्त्ति जाति रही चौथेसें पूछा कि तुम कौनहै
और क्या नामहै उसने कहा मेरा नाम मोह है अं
तः करणमें रहता हूं पुरुषने कहा कि अंतः
करण में धृति रहती है उसने कहा कि जहां में
तहां धृति कैसी धृतिनाम धैर्यकाहै इसका प्र
माण कहांहै गीतामों है कि जिससमें अर्जुना
कों अपना परिवार देखके मोह हुवा तबधैर्य
नरहा कोई प्राणोंका कौरे कियह कामादि क
हत्री कैसें हैं तिस्पर गीताका प्रमाणहै॥काम
एषः क्रोधएषः रजोगुण समुद्भव इति इस्का।
अर्थ कहेहैं यहकाम और यहीक्रोध रजोगु
णतें उत्पन्न हुवा यहवार्ता सुन कै पुरुषनें वै
राग्य रूपी खड्ग खैंचकर विचार किया कि वै
राग्यवान कों काम कैसा विचार होरे कामकों
निषेध किया जैसें शिवजीनें फेर इसनें विचार
किया किजब कामकों निषेध किया तब वैरा।
ग्य वान कों क्रोध कैसा फेर विचार होरे क्रोधकों
भी निषेध किया जैसें विसृनै कि भृगुजीनें ला

नमारी और फेरभी चरन पकड़ लिया किमहारा
पृ. ५ ज आपके चरनकोमल हैं औरमेरा हृदय कठोर
है आपके चरन कोमलहैं और मेरा हृदय कठोर है
आपके चरनमें दुःखहुवा होगा फेरलोभके नि।
षेध पर खड़ाहोकर लोभ कैसा निषेध किया।
किजैसें नचिकेता ने फेर इस प्रकारमोह कानि
षेध किया जैसें शुकदेवजीने मुमुक्षुनें जबच्या
रोंका निषेध करा तब च्यारों स्त्री त्यागी लज्जा।
दया कीर्त्ति धृति प्रगटहुंई फेर इस पुरुषने विचा
र किया कि वैराग्यवान्कों लज्जा कैसी लज्जाभी।
मति बंधहै जोकरै तोगोपियों कामा हो किजै।
सें गोपियां लज्जाकरके कृष्ण भगवान् पे नंही गई
लज्जा त्याग करके सब कुबजानें भोगा फेर वि
चार कि वैराग्य वान् कों दया कैसी और जो द
या करै तो जड भरतकीसी दशा होवे दयामें
दालसा नेंत्यागी फेरविचार किया कि वैराग्य।
वान्का कीर्त्ति कैसी औरजो कीर्त्ति चाहै तोकैसी
दशाहो जैसे दुर्योधन की कि भगवान् नेकहा
भी पांच ग्राम पांडवन को देवो उसनें नमानां।
और कहामें ऐसा महान् राजाकेसें मानूं तोनमा
नने तें शिरभी नरहा कीर्त्तिका त्याग करयेनें।

किया फेर धैर्य्य रूपी स्त्रीकों धारण किया जैसें ध्रुवजीने और त्यागा शिशुपालनें फेर उ स पुरुषनें धैर्य्यकों धारण करके विचार रू पी कुदाल लेके संघात रूपी मंदिरकों ढाहने लगा प्रथम द्वारस्थानी स्थूल शरीका निषेध किया विचार करके कि दृश्यहै जडहै अनित्य है इसी प्रकार अग्निशाला स्थानी इंद्रियोंका निषेध किया और धर्मशाला स्थानी प्राणोंका निषेध किया कैसीहैं इंद्रियां और प्राण कि पां च भूतोंके विकार हैं दृश्यहैं जडहैं में इसका दृष्टाहूं फेर विचार रूपी कुदालकों लेकर अंतः पुरस्थानी अंतःकरण पर दृष्टी कीनी तब अं तःकरण कोंभी जाना कि पंच भूतोंका विका रहै जडहै में अंतःकरण नहीं हूं इनकाभी निषेध किया तबवादीने आशंका करी कि अं तःकरण कैसे पंच भूतों के विकार हैं पंचभू तों कें पांच गुण भिन्न भिन्नहैं शब्दस्पर्श रू प रस गंधसा इनपांचों मेंतें कोई भी गुणना हीं पाया तो इनतें विलक्षण संकल्प निश्च य गर्व स्मरण रूपहै फेर पंच भूतों का विका र कैसेकहते हो तुम्हारा कहना नहीं संभव

होताहै तहां सिद्धांती उत्तर कहैहैं कि सत भाई
पु॰ ५ पंच भूतों के समष्टी सतोगुणके अंशोंते अंतःक
ण हुवा इसतें विलक्षण पायेहैं प्रश्न इसमें प्रमा
णक्याहै उत्तर इसपर युक्ति प्रमाणहै जैसें पान
चूना कत्था सुपारी तमाखू इनपांचों के भिन्न
भिन्न पांच रूपहैं और लालरूप किसीकाभीन
हीं है जिससमें पांचोंकोंमिलाय दिया तवसभ
का लालरूप होगया इसी प्रकार दार्ष्टांति सम
झ लेनां जबउस पुरुषनें अंतः पुरस्थानी अंतः
करणकों निषेध किया फेर विचार रूपी कुदाल
नें बुद्धि रूपी शिलाका निषेध किया तवपुरुष
स्थानी बुद्धि प्रति विंबित चिदा भासथा सो असे
विंबमें लयहो गया और उसके लय होनेंहीं द्रव्य
स्थानी स्वरूपकी इच्छा पुरुषकों निवर्त्त होगई।
और असे स्वरूप विषे स्थित होगया धैर्य स्थानी
जोस्त्री संगथी सोवुडिया स्थानी प्रारब्धहोगई।
फिर च्यारों स्त्रियां जोप्रगट हुई सोकोन है मैत्री
करुणा मुदिता उपेक्षा च्यारोंकों धारण कियें
हुवे है प्रश्न मैत्री आदिक का प्रमाण कहो उ
त्तर पतंजलिका सूत्र प्रमाण कहैहैं मैत्री करु
णा मुदितो पेक्षाणां सुख दुःख पुण्या पुण्य वि

षयाणां भावना तश्चित्त प्रसादनम् इसका अर्थक
हैहैं सुखी साधु पुरुषों विषे मित्रता दुखीज
नों विषे कृपा पुण्यात्मकों विषे प्रीति पापियों
विषे त्याग ऐसी भावना नें चित्त प्रसन्न होहै
यह वार्ता कहीथी कि उसकों अरक्त कहिये।
कि विरक्त कहिये सोइसकों वीतराग कहें हैं॥इ
ति युक्ति चार स्त्रियोंके दृष्टांत विषे यथार्थ ज्ञा
न होनेकी पूर्ण हुई॥१॥ॐ नमस्तु ब्रह्मणे नमः
वादीनें प्रश्न किया कि सुषुप्ति विषे और ज्ञा
नीकी अवस्था विषे क्या भेद है और तुमज्ञान।
किसका मानते हो उत्तर हम जगत्के अस्पंता।
भावकों ज्ञान मानते हैं प्रश्न जगत्का अभाव
तो सुषुप्ति विषेभी होयहै उत्तर सुषुप्ति में जग
त्का अस्पंता भाव नहीं होता कार्यका अभाव
होताहै कारणका अभाव नहीं होता औरसु
षुप्ति जैसा अभाव तो और कहीं भी होयहै प्र
श्न और कहां होयहै उत्तर मूर्छा में होय है
और प्रलयमें होय है इतनी जगों जो अभाव।
होयहै सो अनित्य करकें होयहै नित्य करकें।
नहीं होता यातें अनित्य अभाव होयहै नित्य।
नहीं होता काहेतें कि इन जगों अभाव होकर

के फिर जगत उदैभी होय है यातै अत्यंता भावन
यु० हीं होता यातें हमने भावरूपंही अभाव सिद्ध कि
६ याहै इसका तात्पर्य यहहै किज्ञानीकी दृष्टीमें ज
6 गतका अभावहै और अज्ञानीकी दृष्टिमें भावहै
जैसें रज्जुका रूपजानने वालेकै सर्प्पका अभावहै
और रज्जुका रूप नंही जानने वाले कै सर्प्पका भा
वहै प्रश्न इसमें प्रमाण क्याहै उत्तर स्मृति प्रमा
णहै यथैव द्विविधा रज्जुः ज्ञानिनो ज्ञानिनो स्तथ
म इसका अर्थ कहैं हैं जैसेंही ज्ञानीकों और अज्ञा
नीकों भी यही दोप्रकारकी रज्जु भानहोय है प्रश्न
स्मृति विषै कहाहै क्रीडेयं मति युक्तस्य जाग्रत्या
पि सुषुप्ति वत्।।चेष्टते बालवत् ज्ञानी ब्रह्मा नंदे
न तोषितः।। इसका अर्थ कहैं हैं जाग्रत अवस्था
विषै निश्चै करकै सुषुप्तिकी न्यांई ज्ञानीबुद्धिहै उ की
न्मनकी न्यांई क्रीडा करैहै और बालककी न्यांई
ज्ञानी चेष्टा करैहै ब्रह्मानंद करकै तृप्तहै उत्तर
इसका अर्थ तूंनंही समझा जाग्रत विषै सुषुप्ति
की न्यांई सुषुप्तिही नंहीकही सुषुप्तिकी न्यांई
कहीहै सुषुप्तिविषै मिथ्या भास नंही रहता औ
र ज्ञानीको अवस्था विषै मिथ्या भास रहताहै
सुषुप्ति सरीषी ज्ञानीकी अवस्था हुई तो उपदे

श कैसें करै प्रश्न हम मिथ्याभास रहनेको ज्ञा
न नहीं मानते जिसमें मिथ्या भास नहीं रहै
जिस्को ज्ञान मानते हैं उत्तर जोमिथ्या भास न
हीं रहै तोजीवन् मुक्त नहीं बनैगी प्रश्न जी
वन मुक्त नहींतो विदेह मुक्त तोहोगी उत्तर जी
वन मुक्त ही नहीं हुई तोविदेह मुक्त काहेतें
होयगी काहे तें जो जीवन मुक्त ज्ञानी होयसो
उपदेश करै तिसहीं कों विदेह मुक्तहोयहै श
स्ते जो जीवन मुक्त नहोवे तो औरका कल्याण
कैसें होवे प्रश्न औरके कल्याण तें हमको क्या
प्रयोजन है अपना कल्याण हुवा चाहिये उ
त्तर तुम्हारा कल्याण कहांसें हुवा क्योंकि तु
म्हारे गुरों कों तो विदेह मुक्त हुई तोतुम्हें कि
सनें उपदेश किया यातें विदेह मुक्त भी नहीं
बनी जिस्को जीवन्मुक्त होयहै तिस्को विदेहमु
क्त होयहै प्रश्न हमनें मिथ्या भासहीं कों ज्ञा
न माना कि मिथ्या भासहोने हीको मुक्त मा
ने हैं इस्के विना नहीं मानते उत्तर अब विदेह
मुक्त नहीं बनैगी जो विदेह मुक्त नहीं तो नि
र्विकल्प नहीं सिद्धांत होगा प्रश्न तोतुमहीं क
हो किसप्रकार अवस्था बनें हैं उत्तर साधन चा

रों करकै संपन्न समस्त गुरोंके समीप जायकै जो श्र
पृ. ८ वण मनन निदि ध्यांन करकै साक्षात्कार होना
है सोजीवन मुक्त होताहै सोजीवनमुक्त ही विदे
ह मुक्त होतीहै इसतें अर्थ यह स्पष्टहुवा किजा
ग्रत विषे सुषुप्तीसी ज्ञानीकी अवस्था है सुषु
प्तीही ज्ञानीकी अवस्था नंहीहै फेरकैसीहै ज्ञा
नीकी दशा जैसें मतवारेकी क्रीडा किसर्व व्या
वहार करैहै औरकुछ सुध नंही क्याहै किजो
कुछ सुध नंहीहै सोतो सुषुप्ति है औरजो कुछ
क्रीडा करैहै सोमिथ्या भासहै सुषुप्ति विषे मि
थ्याभास होना नंही इसतें जाग्रतही विषे सुषु
प्तिकी न्यांई वर्तैहै ज्ञानीकी अवस्था फेरकै
सीहै ज्ञानीकी अवस्था बालककी न्यांई चेष्टा
करैहै मतवारेका दृष्टांत तो सूक्ष्महै और बाल
कका दृष्टांत स्थूलहै काहेतें मतवारे के भीतर
की इच्छाकी किसीकों खबर नंही होती और बा
लक कों भूख लगे तो रुदन सुनाई देहै फिरकै
साहै ज्ञानीकि ब्रह्मानंद करकै तृप्तहै प्रश्न इसतें
प्रतीत यह हुयी कि ज्ञानीकी अवस्था जाग्रतकी
न्यांई है काहे तें कि जाग्रत विषे स्वप्न और सुषु
प्तिका मिथ्या भास होयहै और सुषुप्ति विषें जा

ग्रत और स्वप्नका मिथ्या भास नहीं उत्तर ऐसा
नहीं कहो जाग्रत तो दीपककी न्यांई है और ज्ञा
नीकी अवस्था सूर्यकी न्यांई है काहे ते दीपक
थोड़ा प्रकाशै है और अपनी सुध नहीं और सू
र्य सभकों प्रकाशै है और आपकों भी जाने है
यातें औरही दशा है ज्ञानीकी जाग्रत सी भी नहीं
प्रश्न सूर्यकी न्यांई जो ज्ञान कहो हो ऐसा ज्ञा
न अंतः करणकों हुवा सो अंतः करण अनि
त्य है इस्तें ज्ञानी भी और ज्ञानीकी अवस्था भी
अनित्य हुई उत्तर हमक्या तयाकों शुद्ध मानें हैं
तयां तीतकों शुद्ध मानें हैं तिसपर एक दृष्टा
त कहैं हैं जैसें किसी राजाके आगे वेश्याने
नृत्य किया फिर नटवे नें तमाशा किया सो
भी राजाने देखा इतने में जो आई आंधी दीप
क बुझ गये सभका खिल्ल विगड़ गया तिनस
भोंका तमासाभी देखा राजानें और आपकोंभि
न्न माने है अब दार्ष्टांतिक कहैं हैं जैसें ही राजा
रूपी चैतन्य वेश्या और नटवा और आंधी रूपी
जाग्रत और स्वप्न और सुषुप्ति कों प्रकाशै है औ
र आप ज्ञान स्वरूप है प्रश्न तुमतो कहते थे
हमक्या तयां कों शुद्ध मानें हैं और वरनन शु
द्ध करके किया उत्तर तयाकों हम ज्ञान स्वरू

यु॰ ८

प जानते हैं परंतु इसके जानना कहिये सातित्वता
सोई मलीन तो है प्रश्न फिर शुद्ध किसको मानते है
उत्तर शुद्ध मानते हैं तुर्यातीत को प्रयही शुद्धवा स्म
औरहै उत्तर विचार द्वारे यही तुर्यातीत होता है।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिके अभावतें प्रश्न विचार तो
अंतःकरण को होता है सो अंतःकरण अनित्य
है यह तो पहले निषेध कर आये थे तुम उत्तर
अनित्य करके नित्यकी प्रतीति होय है प्रश्न कि
स प्रकार होय है अनित्य में कभी नित्यकी प्रतीति।
हुई हो नहीं उत्तर जैसे दर्पन अनित्य है तिसके दे
खने करके मुखजो नित्य है तिसकी प्रतीति हो
यहै प्रश्न जैसें दर्पन विषै प्रति विंब दीखता है
सो मिथ्या है तैसें ही बुद्धि प्रति बिंबित मिथ्या है
इसतें सत्य स्वरूपकी प्राप्ति किस प्रकार भई उत्तर
है तो झूठा परंतु प्रतिबिंब बिन देखने करके बिंब
की प्रतीति होय है जैसे नेत्र दर्पन विषै अपने मि
थ्या प्रतिबिंबको देख करकें अपनी सत्य प्रतीति।
करै है फेर कोई पुरुष नेत्र विषै विकार कहै तो।
प्रतीति में नहीं आवता संशय रहित है प्रश्न इसमें
प्रमाण क्या है उत्तर स्मृति प्रमाण है सोई कहै हैं
यथा नेत्रं दर्पणे स्वकं रूपं स्वयमेव लक्षयति ता
था आत्मापि शुद्ध बुद्धौ स्वकं सांवर सच्चिदानंदा

स्वरूपं स्वयमेव लक्षयति॥इस्का अर्थ कहैहैं हृष्टांत जैसें नेत्र दर्पण विषें अपने रूपकौं आपही लखैहैं दार्ष्टांत कहेंहैं॥तैसें ही आत्मा भी शुद्ध बुद्धि विषे अपने अखंड सच्चिदानंद स्वरूपकौं आपही लखैहैं प्रश्न जो हैत्रा पत्ति हुई काहेतें बुद्धी भीरही इस्तें उत्तर अद्वैतकी सिद्धी हुई ज्ञानबुद्ध्यादिक कौं बाधक होहैं प्रश्न तुम कपोल कल्पित कहो हो ऐसा प्रमाण कहा है उत्तर हस्तामलजीका वचन प्रमाणहै सोई कहैहैं॥यथा दर्पण भाव आभास हानौ मुखंविद्यते कल्पना हीन मेकं तथाधी वियोगे निराभास कोयः सनित्योप लब्धिः स्वरूपोह मात्मा॥इस्का अर्थ कहैहैं जैसें दर्पण का अभाव होनें विषे आभासकी निवृत्ती होने सेती कल्पना रहित एक मुख मात्रहै तैसें ही बुद्धीका अभाव होने सेती जो आभासरहित सोमें आत्मा हूं सोकौन नित्य प्राप्ति स्वरूप और हम इसीकौं ज्ञान मानें हैं यही समझ्ज्ञानियोंका अनुभव है यहजीवन्मुक्त और विदेहमुक्तके निर्णयकी युक्ती पूर्ण हुई॥२॥सिद्धांती

कि ने कहा आत्मा विषे जगत् ऐसा फुरैहै जैसें जल विषे तरंग वादीनें आशंका करी कि जल विषे तो अवकाश पावैहै तिस विषे तरंग फु

रै है कांहेतें किजल एकदेश विषे है और आत्मा
प० सर्व व्यापी है आत्माविषे अवकाश कहां है कि।
१ जिस विषे जगत फुरै और जो अवकाश कहो है।
तो आत्माभी एकदेश [illegible] भिन्न हुवा सर्वव्या
पी नहुवा उत्तर यह दृष्टांत मुमुक्षुकी दृष्टी केर
ह रावने के अर्थ दियाहै कितरंग के दृष्टांत करके
मुमुक्षु की दृष्टी रहैरे किसी प्रकार कि जैसें दो।
पुरुष जलके किनारे बैठे हैं एक पुरुषकी दृष्टी
विषे जलहि मात्रहै तरंगादिक नहीं भानहोतेहैं
और एक पुरुषकी दृष्टीविषे जलस्थानी आत्मा।
मात्रही भानहोय है तरंग रूपी जगत नहीं भा
न होता और दूसरे अज्ञानी पुरुष की दृष्टी वि
षे तरंग स्थानी जगत ही भान होतेहै आत्मा ना।
हीं भानहोता इस्तें जिज्ञासू के प्रति कहा कि
जगत तरंग की न्यांई है सत्यनहीं है प्रश्न तु
म कहते हो कितरंग सत्य नहीं है तरंग तो प्र
त्यक्ष भान होतेहै उत्तर तंवादर हमारी लेकरके।
जल जलकी तरंगोंमें ते एकड ल्याउ सोपुरुष चाद
र लेकरके गया और जलमें मारे फेरी तरंग एक
कि० भी नहीं पाई तब उस्ने कहा महाराज तरंग को
[illegible]गता ई नहीं हाथलगे जलमात्रहै तब पुरुष ने कहा
कि भला भाई तूंनेंदेख तूं तरंग कहै था कित

रंग सत्यहै सो कहांगई इसतें जल रूपी चिदानं
दही सत्यहै तरंग रूपी जगत् किंचित् मात्र नंही
है प्रश्न चादर स्थानी क्यादिया उत्तर गुरों ने श्र
मी विचारात्मक दृष्टी रूपी चादर दीनी तिसवि
चारात्मक दृष्टी नें तरंग रूपी जगत् कुछ भीन
हीं पाया अस्ति भाति प्रियता मात्रही पाया
प्रश्न ऐसा विचार किस करके होता है सोकैसी
है शुद्ध बुद्धी सूक्ष्मतें सूक्ष्म ओर महान् नें महा
न है काहेतें सर्व व्यापीही सूर्य सर्वत्र प्रतिबिं
बित है ओर जैसें शरीरके एकदेश विषें तिलहै
ओर तिलके एकदेश विषे प्रकाश है सोप्रका
श सूक्ष्मतें सूक्ष्महै ओर महान् कैसाहै कि संपू
र्ण ध्रुवादिक तिसी करके देखे जावे हैं जहां दृ
ष्टी जाय तहांही नेत्र व्यापक है नेत्र व्यापक क्या
है किप्रकाश ही व्यापक है इसी प्रकार बुद्धि श्रा
ति सूक्ष्मतें सूक्ष्महै किकुछ नंही भानहोती कि
तने लोक इसमें वाध करें हैं कोई कहे है किबु
द्धि सावयव है ओर कोई कहे हैं कि निरावयव
है ओर महान् तें महान् है कि संपूर्ण का श्रा
नुभव करे है प्रश्न तो तुम निर्णय करके कहो
कि बुद्धि सावयव है किनिरा वयव है उत्तर॥

बुद्धि सावयव है प्रश्न सावयव काहेतें निश्चे करी
रूपतो कुछ दिखाई नहीं देता उत्तर मतवादी जो
बुद्धि सावयव नहीं वै तोयोगी कहां वेद करके दे
खैहें यातें सावयवहै प्रश्न जोबुद्धी ऐसी अति सूक्ष्म
है किरावयव समान है तोप्रतिबिंब कों कैसें ग्र
हण करैहै उत्तर किजैसें वायू सुगंधकों ग्रहणक
रैहै प्रश्न ऐसी बुद्धि स्वतःही होवैहै अथवा बना
येतें बनैहै उत्तर विचार रूपी बुद्धी बनाये तें होय
है स्वतः नहीं होती इसके बनावनेकी दोयुक्ती हैं
एक प्रकार शीघ्रहीं बनैहै ओर एक प्रकार चिर
कालमें होयहै प्रश्न कोई इसपर दृष्टांत कहो।
उत्तर दृष्टांत कहै हैं जैसें दोपुरुषों कै इच्छा हुई
न्यारे न्यारे दोबंगले बनावने की एक पुरुषनें।
तो बहुत कारी गरलगाय दिए ओर एकपुरुष।
नें तो एकहीं कारीगर लगाय दिया जिसपुरुष
नें बहुत कारीगर लगाये हैं तिसका बंगला शी
घ्रहीं बनगया ओर जिसनें एक कारीगर लगाया
है तिसका बंगला चिरकाल मेंबना अबदार्ष्टांति
कहैं हैं एकपुरुषने बुद्धि रूपी बंगला बनावने
के अर्थ सतसंगत रूपी बहुत कारीगर लगाए।
तिसका बुद्धी रूपी बंगला शीघ्रहीं बनगया है

सेरे समस्त पुरुषने योग रूपी एकंही कारीगरा
लगाया बुद्धी रूपी बंगला बनावने के अर्थ ति
स्का बुद्धि रूपी बंगला बहुत काल विषे बना प्र
श्न भलाजी बंगले के बनावनें विषे तो हथियार
होवे हैं कारी गरोंके यहां हथियार स्यानी क्या हैं
वेतो विरक्तंही वैठे हैं उत्तर यहां श्रुति स्मृति युक्ति
क्ति और अनुभव और दृष्टांति रूपी हथियारों
कर्के बुद्धि रूपी बंगला बना प्रश्न ऐसी बुद्धि
कर्के प्रयोजन क्या सिद्ध हुवा अथवा कोन होव
नावोहा उत्तर ऐसी बुद्धि करके ज्ञान होता है॥
प्रश्न तो ज्ञान बुद्धी जन्य हुवा जो उत्पत्ति हुवा
है सो नाशभी होयगा उत्तर यह ज्ञान रूपी पु
त्र बुद्धि रूपी माता का अभाव कर्के होय है प्र
श्न ऐसा तो कंही अनर्थका वचन सुना नंही
जगतमें कि माता का अभाव कर्के पुत्र होय।
उत्तर सुन वादी केकड़ा जो होताहै सो अपनीमा
ताकों नाशकर्के होता है तैसें ही बुद्धि रूपी
माता का अभाव कर्के केकड़ा रूपी ज्ञान होता
है प्रश्न बुद्धि की शुद्धी और अभाव विषे योग
और ज्ञानका प्रमाण कहांहै उत्तर स्मृति प्रमा॥
ण है॥ श्लोकमें॥ चित्त नाशस्य योगो ज्ञानंच राघव

योगस्तु इति रोधोहि ज्ञानं सम्यगवेक्षणं॥ अस्यार्थः
यु० ११ हेराघव चित्तके नाशके दोक्रमहैं योग और ज्ञान।
योग जिस चित्तकी वृत्तीका रोकने वालाहै निश्चय
करके ज्ञान भले प्रकार साक्षात्कार का साधन है ज्ञा
नकी विचार करके प्राप्ती है॥ इति युक्ति बुद्धिके निर्ण
यविषे तत्वज्ञान होनेकी पूरण हुई॥ ३॥ अथ युक्ति।
अन्या लिख्यते॥ प्रश्न सिद्धांती नेकिया कि अहं क
र्तृत्व भोक्तृत्व जोहै साधनको भिन्नमानते हो कि।
अभिन्न मानते हो वाभिन्ना भिन्न मानतेहो जोतु
म भिन्नमानते हो तो इनके सुख दुःखहोने करके।
तुमको सुख दुःख नहीं हुए चाहिये और जोतुम
कहो कि अभिन्न हैं तोउनके अभाव होनें करके।
तुम्हाराभी अभाव हुवा चाहिये औरजो कहो कि
भिन्ना भिन्नहैं तोबनता नहीं तमऔर प्रकाशका
विरोध है अथवाकिसी पुरुषने कहा कि फला
ना जीवैभी है और मराभी है उत्तर वादीकहै है।
कर्तृत्व भोक्तृत्व जोहै सो आकाश विषे घटकी।
न्याईं है प्रश्न आकाशको भिन्न मानते हो उत्तर
कहा कि अभिन्न मानते हैं प्रश्न जो अभिन्नमा
नतेहो तो अभिन्न तो हम आगेही निषेध किय
है याते अभिन्न नहीं बनता और जोतुम अभिन्न

मानते हो तो घटका नाशहोने तें घटाकाशका
भी नाश हुवा चाहिये इसें कर्तृत्व भोक्तृत्वका
नाश होनेतें तुम्हाराभी नाश हुवाचाहिये उत्तर
घटका नाश होनें करके घटाकाश का नाशना
हीं होता महदाकाशमें लय होताहै प्रश्न बडे
घटस्थानी ब्रह्मांड का अभाव होने तें महदाका
श कहां रहताहै महदाकाशभी नहीं रहताहै
यातें यह तुम्हारा उत्तर नहीं बना उत्तर अहंक
र्तृत्व भोक्तृत्व जोहै नभिन्नबने नअभिन्न बने
ते न भिन्नाभिन्न बनते हैं काहेतें वास्तवतें क
ल्पित है प्रश्न जोकल्पित हैं तोगुरु शास्त्रकि
सलियें खडेहैं उत्तर कि केवल भ्रांतिके निवृ
त करने कोहै जिस प्रकार रज्जू विषे सर्पकी
भ्रांति होहै सो उजाले करके निवर्त होतीहै
सिद्धांती कहे है कितुमतें यथार्थ निर्णय न
हीं हुवा इसें हमने श्रवण कर कहाकि आ
हे जोहै सोसत्यहैं और कर्तृत्व भोक्तृत्व जोहै ते
मिथ्याहै नभिन्न बनते नअभिन्न बनते नभि
न्ना भिन्न बनते हैं प्रश्न वादीका इसें प्रमाण
क्याहै उत्तर इसें स्मृति प्रमाण है अहं हृत्विवि
षयो ह्यात्मा अस्यार्थः इसका अर्थ कहै हैं ही

ति निश्चयेन अहं वृत्तिका विषय आत्मा है अथ
वादी कहाहै अहं कर्तृत्व भोक्तृत्व जोतुम मि।
थ्या कहते हो तो गुरु शास्त्र क्यों खंडेहैं उत्तर
इस मिथ्या की निवृत्ति करने लिये प्रश्न वादीका
जोमिथ्याहै सोभान किस प्रकार होवे औरजो।
भानभी होय तिसकी निवृत्ति क्याहुई उत्तर ॥
मिथ्याभी भानहोता है जिस प्रकार रज्जुविषे।
सर्प सिपी विषे रजत्व तादिक मिथ्याहै और।
भान होहै प्रश्न रज्जू और सर्पादिक की तो सा।
दृश्यताहै यहां प्रपंच और आत्माकी न्यांई क्या
सादृश्यता है यातें तुम्हारा दृष्टांत नहीं बना
औरभी इसमें दोषहै सर्व देश आवर्ण होताहै।
और आत्माके अज्ञान एकदेशमें कहाहै इसतेंतु
म्हारा कहना नहीं बनता उत्तर और दृष्टांतदे
वेहैं जिसप्रकार स्फटिक शुद्धहै जिसके समीप
काले पीले पुष्पहोनें करके कालापीला रंगभा
नहोता है यातें इसमें काला पीलारंग स्फटिक वि
षे मिथ्याहै यातें स्फटिक और पुष्पकी सादृ।
श्यताभी नहीं और सर्वदेशी आवर्ण भी नहीं
बना परंतु काला पीला भानहोता है दार्ष्टांति।
कहैं हैं इसी प्रकार स्फटिक स्थानी आत्माशुद्ध

हुये है काले पीलेपुष्पस्थानी अंतः करण के संबं
ध करके प्रारब्धके वशतें सुख दुःखादि भाना
होते हैं प्रश्न इसमेंप्रमाण क्याहै उत्तर स्मृति प्र
माण है यथा स्फटिकं शुद्ध मपि ज्ञातं रक्त पु
ष्पादि समीपकं संबंधा ल्लोहितत्व वद्भाति ता
द्वज्ञानिना मात्मा शुद्ध मपि ज्ञातं प्रारब्धवशात
विश्वकर्तृत्वादि अंतःकरण संबंधात प्रपंचादि
वद्भातीति सोपाधिको भ्रमः॥ अस्यार्थः इस्का
अर्थ कहेंहैं यथाकि जैसें स्फटिकको शुद्धभी
जाना रक्त पुष्पादिक के समीप संबंधतें लाल
कीन्यांई भानहोइ है तैसेंही ज्ञानियों को आत्म
स्वरूपभी जाना प्रारब्धके वशतें जगत्का कर्तृत्वा
दिक अंतःकरण के संबंधतें प्रपंचकी न्यांईभा
नहोइ है यहसोपाधिक भ्रमहै ज्ञानियोंके प्रति
कहा है इतिकर्तृत्व भोक्तृत्व के निर्णयकी युक्ति
की समाप्त हुई॥४॥ दृष्टांत राजाके रिझावने
के अर्थ एक वेश्या दोसखियां कोंलेके साथ
नाचे है परंतु अपने और सखियों के वृत्तांतको
नही जाने है जब नाचनेतें थक गई तब राजा
तें विनती करी कि मुझेबैठने की आज्ञा करो
जब राजाने आज्ञा दीनी तब आपनाचने ते नि
वर्त हुई तबदोनो सखियों के नाच कोंदेखेहै

यु॰
१३

औेर तिनके गुण औेर अगुणों कोंभी देखेहै अोरस
जाकोंभी देखेहै अोर वजंत्रीयों कों अोर गावनेकों
अोर तिनके वस्त्रोंकों औेर गहनेंकों भी देखेहै इन
सभतें जुदीहोकरके साखीहोत भई अवदार्षोंति।
कहें हैं राजारूपी ईश्वरके प्रसन्न करनें के अर्थ।
जीव रूपी नायका मन औेर बुद्धी रूपी सखियों
कों लेकरकें कर्मादिक साधन रूपी नाचनाचे है।
परंतु असे औेर सखियों के वृत्तांत रूपी स्वरूपकों
नहीं जानेहै जब नाचने तें थके रूपी कर्मादिक
उपासनां अलकसाई तब राजा रूपी ईश्वरतें बि
नती रूपी प्रश्नकिया अोर कहाकि हेभगवन् मु
के बैठनेकी आज्ञा रूपी आत्मज्ञान का उपदेशक
रो तबराजाकी आज्ञा रूपी उपदेशकों प्राप्त हुई
तब कर्मादिक रूपी नाचने तें निवर्त्त हो करकें म
न औेर बुद्धि रूपी दोनों सखियों के अब ह्मार रू
पी नाचकों देखेहै औेर तिनके गुण औेर अगुण
रूपी सुख दुःखों कों देखे है औेर ईश्वर रूपीरा
जाकों भी देखे है औेर इंद्रियां रूपी वजंत्रियों कों
देखे है औेर प्राण रूपी गावनेकों औेर तिनोंके अ
वस्त्र गहने रूपी स्थूल देहकों भी देखने रूपीअ
नुभव करेहै इनसभतें भिन्न करकें आनंद रूपस
खीहै सोई एक ब्रह्महै मम इसमें प्रमाण कहेहै

उत्तर स्मृति प्रमाण है सोई कहै हैं ॥ देहेंद्रिय।
मनोबुद्धिः प्रकृतिभ्यो विलक्षणम् तद्वृत्तिसा
क्षिणं विद्या दात्मानं राजवत्सदा इसका अर्थक
हैं हैं देह और इंद्रियां और मन बुद्धि और प्रकृति
कहिये अज्ञान इनोंतें विलक्षण है तिनोंकी वृत्ति
योंका साक्षी आत्माकों राजाकी न्यांई सदा जान।
नैष्कर्म्यहै प्रश्न आत्माको स्त्रीकरके क्यों वरनन
किया उत्तर पुरुष होकरके विपरीत वर्ते सोई
स्त्रीहै काहेतें पुरुषतें विपरीत धर्मवान् स्त्रीहै
इसतें यह जीव रूपी वेश्याके नाचनेके निर्णय।
विषे नव ज्ञानकी युक्ती पूर्ण हुई ५ प्रश्न त
म्हारे मोक्ष किस प्रकारहै उत्तर हमारे मनवि
षे मोक्ष आत्मज्ञान करके होयहै प्रश्न आ
त्म ज्ञान किस प्रकार होताहै कि जिसमें मन
और वाणीकी गामी नहीं इहां श्रुति प्रमाणहै
अवाङ्मनस गोचरम् इसका अर्थ कहे हैं वा।
णी और मनका नहीं है गोचर कहिये मार्ग।
जिस विषे उत्तर कि सत्यहै मन वाणी कागोच
र नहीं है परंतु लक्षणा द्वारे ज्ञान होता है
प्रश्न लक्षणा किसप्रकार उत्तर जहत् अजहत्
जहल्लक्षणा दोनोंका त्याग करके जहदजह

हलक्षण करकें ज्ञान होताहै प्रश्न जहद्ऽजहल्ल
क्षणा किस प्रकार उत्तर तत्पद और त्वंपद दोनों
के वाच्यार्थ कों त्याग करकें लक्षणार्थ विषे एक
ता होयहै सोई आत्मज्ञान है प्रश्न जिस प्रकार
त्वंपद प्रत्यक्ष है इसी प्रकार तत्पद प्रत्यक्ष होयतो
वाच्यार्थ कात्याग होय और जो तुमने कथन मा
त्र कहिदिया किहमनें तत्पद औरत्वंपद के वाच्य
र्थका त्याग करदिया सोनहीं होता जैसें किसीद
रिद्री नें कहदिया मैं राजाहूं किसीने कहा कि।
अच्छा दश सहस्र रुपया हमें देवो तब कहांसें
देवे यातें कथन मात्र राजाहै ऐसें तत्पदके प्र
त्यक्ष किये विना वाच्यार्थका त्याग होता नहीं।
यातें तुम्हारा सिद्धांत नहीं बना उत्तर सुनभाई
तेरी समझमें नहीं आया जिस प्रकार त्वंपद प्र
त्यक्षहै ऐसेंही तत्पद भी प्रत्यक्षहै अबतत्पद।
कों प्रत्यक्ष करकें दिखावे है और नया प्रकरण
खड़ा करै है तेरे अर्थको भला किसी प्रकार ते
रा अज्ञान नष्टहोय पहिले आचार्यों नें भी बाव
न मत वेदांत के सिद्ध किये हैं किकिसी प्रका
र मुमुक्षकों ज्ञान होय सोइस विचार विषे ता
त्पद रूपी गुरु प्रत्यक्ष हैं काहे तें कि गुरुकों।

मुमुक्षुनैं भक्ति पूर्वक साक्षात् ईश्वर मानाहै या
म इसमें प्रमाण क्याहै यहां भक्तिका प्रकरण
है ज्ञान कांड विषे ऐसा अर्थ सिद्ध नहीं होता
उत्तर सुनभाई तैंने ज्ञान कांड सुना काहेकों है
हमारे अर्थ विषे श्रुति प्रमाणहै सोई कहै हैं
यस्यदेवे परा भक्ति र्यथा देवे तथा गुरौ तस्यैते
कथिता ह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः इसका अ
र्थ कहै हैं जिस पुरुषकों देव कहिये ईश्वर।
विषे परा भक्तिहै जिस प्रकार ईश्वर विषे है ति
सी प्रकार गुरौं विषे होय तिसही महात्मा कों
यह कहे हुवे अर्थ प्रकाशे हैं अब तत्पद और
त्वंपद के वाच्यार्थ कों त्याग करकें लक्ष्यार्थ विषे
एकता दिखावैं हैं इसही पक्ष विषे तत्पद रूपी।
गुरोंका वाचार्थ क्याहै किदेह और इंद्रियां औरप्रा
ण और मन और तत्वमसि श्रुति करकें उपदेश।
किया जोज्ञान अब शिष्यका वाच्यार्थ कहै हैं
कि देह इंद्रियां प्राण मन और अज्ञान इन दो।
नों के वाच्यार्थ कों त्याग करकें अहं ब्रह्मास्मि
ऐसा भया जो अनुभव कि मैंही ब्रह्महूं अहं
ब्रह्म गुरोंका लक्ष्यार्थ है इस प्रकार जहत् अ।
जहत् लक्षणा सिद्ध हुई इसका तात्पर्य यहहै

कि गुरोंका ज्ञान शिष्यके अज्ञानकों नाशकरके
पु० आपभी लय होजावे है शिष्य ज्ञान स्वरूपही
१५ रहा इति अब विचारले वादी कि मन वाणी।
कौ गम्यभी नहीं हुई और शिष्यको ज्ञान हुवा
इति श्रुती तत्वमसि श्रुतिके अर्थको और प्रका
र करके सिद्ध करने वाली पूर्ण हुई ॥८॥ दृष्टांत
कहे है कोई पुरुष विचारता हुवा नदीके निक
ट गया तहां लोग पारकों जावें थे इसने कहाकि
मेंभी तुम्हारे संग पारकों चलूंहूं सोउनके संग
पारकों गया जब पार पंहुचा तो उधर से लोग।
इधरकों आवें थे उनसें पूछा कि तुम कहांजा
वोहो उनोंने कहाकि हम पारकों जावे हैं इसनें
उनकों कहाकि तुम बावला हुवोहो पारसें तो
या० में आंहूं पारके लोगोंने कहा किंतू बावला हु
वोहे हम पारकों जावें हैं जब सोपचास मनुष्यों
नें एसा कहा तब इसने ऐसा जाना कि पारवो
ही होगा फिर उलटा फिर आया जब इधरआ
या तो फिर लोग उधरकों जाते देखे उनसें पूछा
कि तुम कहां जावो उनोंनें कहाकि हम पार
कों जावेंहें इसने कहाकि पारतो यही है तुम्हा
री बुद्धीकों काहुवा उनोंनें कहाकि पार यहन

हीं है पार वोहीहै हम पारही कों जावें हैं उनके
साथ फिर पार गया इसही प्रकार कितनी वार इ
धरसें उधर और उधरसें इधर आया गया परंतु पा
र निश्चे कोई नहुवा जब अपने मनमें उदास होकर
शोच मान बैठगया किसी महा पुरुषनें इसकों
दुःख देख करकें और दया करकें पूछा कि तूं दुः
खी कोंहैं तब इसनें कहा कि महाराज पारका
ठिकाना नहीं लगता इधर वाले उधरकों पारक
हते हैं और उधर वाले इधरकों पार कहे हैं तब
उनों नें कहा किहम तुजसें पूछें हैं कि बाप ब
डा वा बेटाबडा उसनें कहा कि महाराज बाप ब
डाहै फिर उनोंनें कहा कि औरोंनें भीपूछले कि
बाप बडाबेटा सभोंने कहा किमहाराज बापहीब
डाहै जब महात्मावने कहा कि जहांतूं बैठाहै
यही पारका पारहै अपनें अनुभवनें देखले कि
उसपर लेकिनारे कापार यही है जहां तूंबैठाहै।
और पारजानें की क्याइछा करे है सोपुरुष जा
न करकें अत्यंत प्रसन्न हुवा अथवा दार्ष्टांति मो
घटावे है॥ कि कोई पुरुष कर्मादिकों के साधनक
नें वालोंके संग कर्मादिक करकें स्वर्गादिक की।
प्राप्तिके अर्थ अज्ञान रूपी नदीके पारगया उध

पु॰
१९
16

तैं और लोग मर्त्यलोककों आवें थे स्वर्गके भोगों
कों भोग करके फिर कमाई करनें कों मर्त्यलोक विषें
रहते समझाथा कि मैं अज्ञान रूपी नदीतें पार हो
गया स्वर्गादिक की प्राप्तीके अर्थ और स्वर्ग सें आ
वनें वालोंनें मर्त्यलोक ही श्रेष्ठ कहा प्रश्न इसका
प्रमाण कहां लिखाहै उत्तर शास्त्र विषे कहाहै
गायंति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारत
भूमि भागे स्वर्गापवर्गास्य फलार्जनाय भवंति भू
यः पुरुषाः सुर त्वात ॥ इसका अर्थ कहैं हैं निश्चे
करके स्वर्गविषें देव इसगीत कों गावें हैं कि धन्य
हैं जोपुरुष मर्त्य लोक विषे भरत खंड विषेंहै सो
कैसाहै भरतखंड स्वर्ग और मोक्षके फलका देनेंवा
लाहै इसें देवताओं नें मनुष्य श्रेष्ठ हैं फेर मर्त्यलो
क विषें और यज्ञादिक कर्मनें स्वर्गा दिक कों जावें
और आवें हैं सो पुरुष थक करके बैठ रहा और अ
ज्ञान नष्ट नहीं हूवा यातें दुःखी बहुत हूवा कोई
ज्ञानी पुरुष आये तिनोंनें दया करके एछाकि तूं
दुःखी कों है प्रश्न ज्ञानी तो निर्विशेषहै तिसके
दया कहां ते आई उत्तर ज्ञानी के मैत्री और करु
णा और मुदिता उपेक्षा येचारों रहैं हैं इनचारोंका
अर्थ कहैं हैं मैत्री कहिये सुखी साधु पुरुषों वि

षे मित्र दृष्टी करुणा कहिये दुखी जनोंपर द
या मुदिता कहिये पुण्यात्मकों विषे आनंदहो
र उपेक्षा कहिये पापीविपरीत अवहार वालों।
का त्याग इस प्रमाण करके उनोंने दयाकरी सो
वह पुरुष साधन करके संपन्नथा उसेकहाकि।
महाराज इसलोक वाले उसलोक को श्रेष्टकहें
हें और उसलोक वाले इसलोक को श्रेष्ट कहें
हें इनमें श्रेष्ट कौनसा हे यह निश्चे नहीं भया।
सो उनों नें वाप और बेटे स्यानी निर्गुण और सा
गुण वर्णन कीये और स्वर्गादिक की प्राप्ती सगुण
की उपासना नें होती हे और अज्ञानकी निवृ
त्ति निर्गुणके विचारनें होती हे सोसगुणकी उ
त्पतीका कारण निर्गुण ही हे सोनिर्गुण रूपतें
ही हें ऐसा सिद्ध किया प्रश्न इसमें प्रमाण हे
अय मात्मा ब्रह्म॥इसका अर्थ कहें हें यहीआ
त्मा ब्रह्महे सो ऐसा विचार करके परमानंदा
को प्राप्त हुवा॥इति पारा पारके निर्णय विषे।
तत्व ज्ञान प्राप्त होनेकी युक्ती पूर्ण हुई ७ वा
दी ने आशंका करी किसनका दिक ज्ञानियों
का जन्म किसप्रकार हुवा प्रमाण भीहे अपांत
रत मव सिष्ट सनत्कुमारा दीनि निर्गुण ब्रह्म
विदो पुनः पुन रुत्पत्ति स्मर्यते अपां तरतमः

मी^

यु॰ १८

17

कलिद्वापरयोर्संधौ विस्र नियोगात्कृत्त है पाथ
नः संबभूवे त्यादिना॥३॥ इस्का अर्थ कहै हैं अ
र्थांतरतम ऋषि और वसिष्ठ और सनत्कुमारादि
क निर्गुण ब्रह्मके जानने वाले तिनोंकी वारंवार
उत्पत्ति स्मरण करिये है अर्थांतरतम ऋषि का
लियुग और द्वापर दोनोंकी संधिविषे विस्नुके सं
योगतें व्यासजी होत भये इस्कों आदिले कर उत्त
र व्यासजी का सूत्र प्रमाण हैं ^ यावदधिकार सोई कहै हैं ^
मवस्थितिराधि कारिकाणां इस्का अर्थ कहै हैं अर्था
नरतम ऋषिकों आदिले कर अधिकारियों की
वेदकी प्रवृत्ति आदिकों विषे और जगत्की अवस्था
के हेतुवों विषे और अधिकारों विषे परमात्मा क
रकै संयुक्त जबतांई प्रारब्ध कर्मकी स्थितिहै तब
तांई अनेक शरीर धारकै स्थित रहैंगे सनकादि
क ईश्वर कोटी विषें हैं यातें ईश्वरका जन्म कर्मों
लीलामात्र हैं ^ के बंधन करकै नहीं है ^ ईश्वरकों जन्मका लेनाज्ञा
न विषें बाधक नहीं है कि स्वतंत्र जन्महै और ई
श्वर ज्ञान स्वरूपहै और प्रकारभी कहै हैं उन्केप्रा
रब्धका भोग इसी प्रकार था औरजो कहोकि औ
रोंकाभी प्रारब्धहै तोऔरोंका और उन्का बराबर न
हीं काहेतें इन्का ज्ञान विस्मरण नहीं हुवा औरों
कों तो पूर्व जन्मकी भी सुध नहीं है इसलें जन्हा

ज्ञानियोंमें जन्मादिक कहे हैं तहांईश्वर कोटी विषै
ही कहे हैं कहीं ब्राह्मणा दिकों के नहीं कहे श्रु
तिस्मृति और पुराण और इतिहास में कहीं प्रमाण नहीं क
हा इसतें सनकादिकों विषै विकल्प नहीं चाहिये।
यह सनकादिकों के जन्मादिकों के निर्णय कीयु
क्ती संपूर्ण हुई ॥८॥ प्रश्न सनकादिकों को ब्रह्मा
कार वृत्तीथी तिनकों शिवजी नग्नकैसे दीखे
शिवजी कै देखने विषै ब्रह्माकार वृत्ती नहीं रही
और जो तुम कहोकि ब्रह्माकार वृत्ती रही औरशि
वजीकों भीदेखातो एककाल विषै दोवृत्ती नहीं
फुरती इसपर एक युक्ति कहे हैं किजैसें कोई पुरु
ष ज्येष्ठ के महीने विषै मध्यान्हके समें गंगाजी
के जलविषै खड़ाथा सोजिस काल विषै चरणों
की शीतलताका अनुभव करैथा उसकाल वि
षै शिरकों धूपतें जलनका अनुभव नहीं करै।
था और जिसकाल विषै शिरकी उष्णता का अ
नुभव करैथा उस्काल विषै चरणों की शीतलता
का अनुभव नहीं करैथा इसतें दोविकल्प एक
काल विषै नहीं होते उत्तर हम पूछें हैं कि आ
त्मा किस प्रकार व्यापक है प्रश्न वादी कहै है
कि तुमही कहो किस प्रकार व्यापक है उत्तर
आत्मा ज्ञान मात्र व्यापक है ज्ञान कहैं हैं ज्ञान·

यु॰ १९ 18

नेकों इस्कें जाननें मात्र सर्वव्यापी है जिसकाल
विषे शिवजी कों देखा तब जाननें मात्र साक्षी
था कि नहीं था जैसें राजा सभाके विषे बैठा
सारी सभाकों देखे है क्या आपकों नहीं जानता
राजा इनमें अधिकता यह है कि ये ज्ञानी हैं अ
ज्ञानी में तो विकल्प होभीजाय ज्ञानीमें विकल्प
संभव नहीं होय है काहेतें कि शरीरादिक कों
बाधक करकें ज्ञान स्वरूप ही स्थित रहा है कुछ
जानने मात्रतें भिन्न विकल्प नहीं संभव होय है
जोतेरी इच्छा होय तो देखलै उक्त निमिषार्द्धं न
तिष्ठंति वृत्तिं ब्रह्ममयीं विना यथातिष्ठंति ब्रह्मा
द्याः शुकाद्या सनकादयः॥इस्का अर्थ कहें हैं
जैसें ब्रह्मादिक और सनकादिक और शुकादिक।
ब्रह्माकार वृत्ति विना आधी पलभी नहीं स्थित र
हे हैं सदा ब्रह्माकार ही स्थित रहे हैं और ब्र
ह्मादिक जगत्का संपूर्ण व्यवहार भी करें हैं इस प्र
कार अपरोक्षा नुभव नाम ग्रंथ विषे श्रीशंकर
स्वामी जीनें कहा है और सिद्ध समाधीभी वाक्य
सुधा विषे कही है सोभीश्रवण कर देहाभिमा
ने गलिते विज्ञाते परमात्मनि यत्र यत्र मनोया
ति तत्र तत्र समाधयः॥इस्का अर्थ कहें हैं देह
अभिमान निवृत्त होने सेती और ब्रह्मात्म स्वरू

य जानने सेती जिन जिन विषयों विषे मनजा।
य तहां तहां ही समाधियांहैं इतिसनकादिकोंकी।
ब्रह्माकार हुत्तीके निर्णयकी युक्ती पूर्ण हुई॥ ९
युक्ती लिखते केतान् पुरुष आपकों ज्ञानी कहैं
हैं और व्यवहार विपरीत वर्तेहैं उनको कोई कु।
छ कहैतो वे कहै हैं किहम असंगहैं अकर्ताहैं
हमकों कुछ पुण्य पाप नहीं लगता हम ब्रह्म
स्वरूपहैं और ब्राह्मण पर तर्क करें हैं कि येकाहे
तें ब्राह्मण हैं ब्राह्मण हमहैं और इसपर प्रमाण
देतेहैं क्योंकि ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः ऐसा कह्या
कि स्मृति विषे इसका अर्थ करैं हैं कि जो ब्रह्म
कों जानैं सोई ब्राह्मण है ऐसा कहने सेती जा
नाकि उन पुरुषोंनें यथार्थ विचार नहीं किये
काहेतें देहकों ब्रह्म जानाहै इसतें ऐसा नहींजा।
ना कि ब्रह्म चैतन्यहै और असंग है सोमें ब्रह्म
चैतन्य हूं जैसें इसदेह विषे असंग हूंतैसेंही।
संपूर्ण ब्राह्मणादिक देहगेहों विषे असंगहूं
आपकों अपने देह विषे ब्राह्मण मानैं हैं इसतें
ब्राह्मण तौ वर्णका नामहै अपनी चिदानंद
ता और असंगता कों और आश्रम ताकों त्याग
करकै वर्ण धर्म वान ब्राह्मण केधर्म कोंमानेहै

प्र. १९

आत्म स्वरूप कों नहीं जानते स्वरूप तो बिगड़ियाहै
र कबेकाभी नहीं बिगड़ा अवहार बिगड़ा है सो
अवहार हीका सुधरना है जैसें आकाश मोरीके
जलविषे भी असंग है प्रश्न इसें प्रमाण क्या है
उत्तर मनीषा पंचक विषे शंकर स्वामीजीके प्र
ति आक्षेप कियाहै चंडाल रूपधार करकें शिव
जी नें सोई प्रमाण कहै है किंगंगांबुनि बिंबिते
बर मणौ चंडाल वाटी पयः पूरेवांतर मस्ति कां
चन घटी मृत्कुंभयो वांबरे प्रत्यग्वस्तुनि निस्त
रंग सहजा नंदाव बोधां बुधौ विप्रायं श्वपचोय
मित्यपि महान् कोयं विभेदो भ्रमः इसका अर्थो
कहै हैं गंगाजल विषे सूर्य प्रतिबिं वितहोनें से
तो तैसेही चंडालकी कुंड विषे जोजल चर्मको
धोनें सेती दुर्गंधित होवे तिस विषे प्रति बिंबि
त सूर्य होने सेती क्याकछु भेदहै कछुभी नहीं
अथवा स्वर्ण के घट विषे ओर मृत्तिकाके घ
ट विषे जो अवछिन्न आकाशहै तिस आका
शविषे क्याभेद है कछुभी नहीं तिसें प्रकाश
परमात्मा वस्तु संसार रूपी तरंग रहित स्वभावि
क आनंद समुद्र विषें यह ब्राह्मण है यह चं
डालहै यह महान् विशेष करकें भेद भ्रमका

है कुछभी नहीं इसी प्रकार शंकर स्वामीजीनें मा
नाहै प्रश्न इसमें कोई दृष्टांत कहो उत्तर दृष्टांत क
हैं हैं जैसें कोई पुरुष मूर्तीकी इच्छा करके काष्ट
का थंभा खाती के पास लेगया और कहाकि इ
सकीमूर्ती बनादे उसखाती नें थंभा खोद करके मूर्ती
बनाई अधिक काष्ट मूर्ति नें जोथा सोछील गेरा औ
र अंग भंग नहीं होने दिया और खडाई जो मांगीसो
दीनी इसीप्रकार दार्ष्टांत कहैं हैं कि मुमुक्षु रूपी
पुरुषनें मूर्ति रूपी स्वरूपकी इच्छा करके संघात
रूपी काष्ट लेगया उस खाती रूपी गुरुनें विचार
रूपी हथियार नें देह इंद्रियां प्राण मनरूपी अधि
क काष्टको छीलने रूपी निवर्त किया और मूर्ति
रूपी विदा नेदता उपदेश करदीनी और अंग भंगरू
पी अस्ति मात्रता नहीं छीण होनें दीनी और छुट
वाई रूपी गुरु दक्षिणा मांगी सो अभिमान रूपी
धन दिया गुरु दक्षिणा में इसतें स्वरूपतो किसी
काभी नहीं बिगडा व्यवहार बिगडाहै वैसे पुरु
ष विपरीत धर्म वान उभय भ्रष्ट होय हैं प्रश्न
उभय भ्रष्ट कैसें कहो हो इसमें प्रमाण क्याहै उ
त्तर इसमें स्मृति प्रमाण है गृहकर्म समा सक्तो
अहं ब्रह्मेति वादिनम् कर्म ब्रह्मोभय भ्रष्टं तंत्य
जेदंत जेयथा॥ इसका अर्थ कहैं हैं व्यवहार कि | कर्मीविषे है

प्र॰ २०

आशक्ति जिस्की और अहं ब्रह्म कहताहै स्वभाव।
जिस्का कर्म और ब्रह्मदोनें ते भ्रष्ट हूवा तिस्पुरुष
कों नीचकी न्यांई त्यागदे प्रश्न ज्ञानके होनें तें सं
घात कहाजाता है उत्तर तिसही चैतन्य विषे लीन
होवे है प्रश्न जोचैतन्य विषे ऐसी मलीनता ला
य होयतो सुद्ध कैसा उत्तर अज्ञान काल विषे चि
दानंदता कर्तृत्व भोक्तृत्वादिक संघात विषे आछा
दित रहे है ज्ञानहोनें तें कर्तृत्व भोक्तृत्वादिक सं
घात चिदानंदता विषे लीन होवे प्रश्न इसें प्रमा
ण क्याहै उत्तर दृष्टांत सोईकहेहैं है जैसें किसीपु
रुषनें काष्टका हस्ती बनाया उसकाष्ट कों प
हले हस्ती कोई नहीं कहेथा काहेतें हस्ती का
ष्ट विषे लीन होरहाथा अब उस हस्तीकों कोई
काष्ट नहीं कहता संपूर्ण काष्ट हस्ती विषे लय
होगया अब दार्ष्टांत कहे है साधन चतुष्टय संप
न्न मुमुक्षु रूपी पुरुषनें संघात रूपी काष्ट खोद
करकें चिदानंद रूपी हस्ती निकला पहले संघा
त रूपी काष्टकों हस्ती रूपी चैतन्य कोईभी नहीं
कहेथा अब चिदानंद रूपीहस्ती विषे कर्तृत्वभो
क्तृत्वादिक संघात रूपी काष्टलै होगया इसें का
ष्टरूपी संघातकोंई नहीं कहता संपूर्ण ज्ञानीपु
रुष हस्तीरूपी चिदानंद ही कहैहै प्रश्न जोचि।

दानेंदकी प्राप्ती कहाँ मेंहुई उत्तर कहींभीनहीं ।
हुई प्राप्ति सरिखी कहेंहैं किजैसें किसी पुरुषके ।
कंठमें हारथा सोविस्मरण होगया वह पुरुष ढूं।
ढता फिरा किसी पुरुष ने कहा कितेरे कंठमें है ।
सोहारकों देखकर प्रसन्न हुवा औरेंकिसी पुरुष
ने पूछा कितेरा हार पाया वह कहै है कि हां पाया
पाये की न्यांई पायाकहै है इसी प्रकार दार्षांत जा।
न लेना किचिदानंदकी प्राप्तीकी न्यांई प्राप्ति का।
हिये है प्रश्न जिस्के इसप्रकार ज्ञान हुवा सोपुरु।
ष जैसा चाहै तैसावर्ते इसपर गीताका प्रमाण है वचन ४
यस्यनाहं कृतो भावो बुद्धिर्यस्य नलिप्यते हत्वापि
सइमां लोकां न्नहंति ननिबध्यते इस्का अर्थ क।
हैं हैं जिस्को अहं कृतभाव नहीं है और जिस्की।
बुद्धी लेपकों नहीं प्राप्तहो सोपुरुष इनें लोकों।
को मारकर्के भी आत्म दृष्टीकर्के नहीं मारै है औ
र तिन कर्मों के फलों कर्के बंधनहीं प्राप्त होवै
रहोशेष जीका वचनभी प्रमाण है हयमेध श।
त सहस्राण्यथ कुरुते ब्रह्म घात लक्षाणि पर
मार्थ वित्न पुण्यै र्नच पापैःस्पृश्यते विमलः इस
का अर्थ कहैं हैं ज्ञानी सौ सहस्राणि अश्वमेध
यज्ञ करै अथवा लक्ष ब्राह्मणों कोंमारै तिनके ।
पुण्य और पापों के स्पर्श नहीं कियाजाय मा॰

यातूपी मलकरिके रहित है इसतें उत्तर जोकहा सो
पु. सत्यहै परंतु इहांशास्त्र कहै है सोभी श्रवण कर॥
२१ तेषां वचनानां विद्वत्स्तुति परत्वेन तत्कर्तृत्व सि
त्यत्र तात्पर्या भावात्॥इसका अर्थ कहै हैं तिन।
वचनों कों ज्ञानीकी स्तुति परत्व करिके जानियो।
तिनका जो कर्ता तिसका जो तात्पर्य तिसके अभाव
तें तदुक्त माचार्यैः सोकहा है आचार्यों करिके अ
धर्माज्जायतेऽज्ञानं यथेष्टा चरणं ततः धर्मकार्यक
थं तस्या यत्र धर्मोपि नश्यति॥इसका अर्थ कहै
हैं अधर्म तें अज्ञान होयहै तिस अज्ञानतें जैसीइ
छा होय तैसा वर्ते जहां धर्मभी नाशकों प्राप्तहो
वे तहां धर्मकार्य किसप्रकार होय नैष्कर्म सिद्धी
विषे भी कहाहै बुद्धाद्वैत सतत्त्वस्य यथेष्टा चरणं
यदि शुनां तत्त्व दृशां चैव कोभेदो अशुचि भक्षणे।
इसका अर्थ कहै हैं जाना है अद्वैत आत्म स्वरू
प जिसनें तिसकों जो यथेष्टा चरण होय जैसीइ
छाहोय तैसा वर्ते तौ कुत्त्योंकों और ज्ञानियोंकों
कूरा भोजन करनें विषे क्याभेद है कछभी नहीं।
औरभी कहाहै नैष्कर्म सिद्धी विषे रागोलिंग मबो
धस्य चित्तव्यायाम भूमिषु कुतः शाड्वलता तस्य
यस्याग्निः कोटरे तरोः॥इसका अर्थ कहै हैं चित्त
के फलनेकी जोभूमी शब्दस्पर्श रूपरस गंधादि।

क तिनों विषे जोप्रीति होवै सो अज्ञानका चिन्हहै
इहां दृष्टांत कहै हैं जिस वृक्षकी जड़के नीचे आ
ग्निहोवै तिसकों हर्याली कहां थोनें जिन साधनों
करके ज्ञानहुवा तेही साधन भूतरहैं हैं प्रश्न इसें स्वरूप
प्रमाण कहांहै उत्तर स्मृति विषे कहा है सोई क
हैं हैं तदानी ममानित्वा दीनि ज्ञानसाधनानि अद्वे
ष्टृत्वादयः सद्गुणाश्चालंकार वदत्र वर्तंते ॥ इसका
अर्थ कहैं हैं तिस्का ज्ञान अवस्था विषे अमानित्वा
दिक ज्ञानके साधन वहुतः अद्वेष इत्यादिक श्रेष्ठ
गुण भूषणोंकी न्यांई वर्ते है इहां वार्तिक कारका
भी संमत कहैं हैं उत्पन्नात्मा वबोधस्य ह्यद्वेष्टृत्वा
दयोगुणाः अयत्नतो भवंत्यस्य नत्व साधन रूपि
णः ॥इसका अर्थ कहैं हैं उत्पन्न हुवा है आत्मज्ञा
न जिसकों तिस पुरुष कों अद्वेष इत्यादिक गु
ण किसीतें वैरनहीं कर्ना इसकों आदि लेकरगी
तामें साधन कहें हैं तेसाधन विनाही यत्नके ति
स्के होंहैं नही साधन रूपहै स्वभाव भूतही रहे
अ हैं इति ज्ञानी और ज्ञानीके निर्णयकी युक्ती पूर
र्ण हुई ॥अथऔर युक्ती विचारकी कहेहैं सिद्धांती
कहें हैं किविराट रूपऐसाहै कि जिस्के एकएक
रोम रूपविषें अनंत कोटि ब्रह्मांड उडैंहैं और पू

कतें एक नहीं मिलता परंतु चैतन्यके एकदेशवि
यु॰ २२ षें कल्पित है काहेतें मायाका विलास है इस्तें ज
ब विचारतें विराट् का अभाव हुवा अज्ञान सहित।
तब शुद्ध चैतन्य पूर्ण महान् रह्या प्रश्न इसेंप्रमाण
कह्या महान् कैसें है औरचैतन्य कैसें है उत्तर श्रुति
कहै हैं ॥ महतो महीया निति श्रुतिः ॥ अस्यार्थः ॥
महान् तें महानहै स्मृतिभी कहै है एको विशुद्ध
बोधोह मिति निश्चय वह्निना प्रज्वाल्या ज्ञान गहनं
वीतशोकः सुखीभव ॥ अस्यार्थः एक विशेष करकें
शुद्ध ज्ञान स्वरूप में हुं इस निश्चे रूपी अग्नि करकें
अज्ञान रूपी बनकों जलाय करकें शोक रहित हु
सुखी हो प्रश्न महानतें महान् नहीं बनता काहे
तें जैसें सर्प रज्जूका आवर्ण करै है परंतु रज्जूही।
के समानहै जोरज्जू सर्पतें बडी होयतो एकदेश।
में सर्प दीखे और शेष रज्जू दीखे और तम अंधेरे
का दृष्टांत तमानो तोचांदने काभी कहै है जैसें।
सर्व सिपी विषे रूपेका आवर्ण भासता इस्तें महाना
तें महान् तोनहीं संभव होयहै विराटके तुल्यही
है उत्तर सुनरे वादी इसी बुद्धी पर सन्माव आया
है मेरे अभिप्राय कों नहीं समझा मैंने सिद्धांत।
कहाहै तैने अध्यारोप में आशंका करी तोभीश्रव

ण कर जैसें रज्जूके अज्ञान काल विषे रज्जू प्रमाण
सर्प्पभान होवे परंतु हैनहीं काहेतें रज्जूका अज्ञा
न नष्ट होणे तें समय रज्जु ही है सर्पका खंडभी
नहीं रहे है तैसेंही आत्मा के अज्ञान तें संपूर्ण
आछादित सरीखा भान होयहै अज्ञान नष्टहोने
ते पूर्ण आत्माही शेष रहे है विराटका अंकुरभी
नहीं रहता जैसें रज्जुविषे सर्प कल्पित है तैसेंही
आत्मा विषे विराट कल्पित है और प्रकारभी उत्तर
कहें हैं जैसें कुंड भरे जलका होवे तिस विषेया
डासोरेत मलीनता करे है सारे जलकों परंतु जल
के तुल्य रेत नहींहै जब ज्ञान रूपी निर्मली डालि
ये तब अज्ञान रूपीरेत निवर्त होयहै तबनिर्मल
जल स्थानी शुद्ध स्वरूप ही रहे है प्रश्न द्वैतापत्ति
त्ति हुई एक आत्मा रहा और एक ज्ञानरहा याते
सिद्धांत नहीं बना उत्तर सतभाई अद्वैत ही सि
द्धांत हुवाहै अज्ञान रूपी रेतकों ज्ञानरूपी निर्म
ली निवर्त करके ब्रह्मरूपी जल विषे आपभी ल
य होय है इति यह विराटकी युक्ती पूर्ण हुई॥
एक समें षट शास्त्र वादियोंकी सभा हुई तिनों
विषे वेदांतिनें प्रश्न किया किसार वस्तु काहै
उत्तर तब पतंजल वाला बोला किनिरोध भूमि
विषे चित्तकों लयकरके जीवात्मा कों परमसुखा
भुगावना सोई सारहै यह कहा प्रश्न वेदांतीका

तुम्हारे मतका साधन क्या और मोक्ष क्या है उत्तर
पु० यमकों आदि लेकर निर्विकल्पक समाधी पर्यंत
२२ आठों अंग साधन है और पंचक्लेशकी निवृत्ती कों
२३ मोक्ष कहेंहैं तबनैय्या यक बोला जीवतो जडहै
प्रश्न पतंजली वादीका किस प्रकार जडहै उत्तर
और जडहै और विभुहै प्रश्न पतंजल वादीका तु
म्हारे कहने मेंभी नहीं बना काहेतें किजीव ज
डहै सोकर्ता और भोक्ता और विभु किसप्रकार होय
उत्तर श्रवण कर जब पूर्व कर्म मन कों प्रेरैहैं ता
व मनका अरु आत्मा का संयोग होय है तबआ
त्मा ज्ञान गुणी होयहै मनके विना आत्मा जडहै
जडहै जबज्ञान गुणी हुवा तब कर्ता और भोक्ता
और विभु हुवा प्रश्न पतंजल वादीका तुम्हाराका
मत है और मोक्ष क्याहै उत्तर शमदमा दिक साध
नों करकें ईश्वर केमनुग्रह होयकरकें सुखकों प्राप्त
होय है तब राज पुरोहित की न्याँई आत्मा सुखकों
१ प्राप्त होय है औरकीस दुःखकी निवृत्ती कों मोक्षक
हैं हैं यही सारहै तब मीमांसक बोला कि तुम्हाराईश्वर
स्वतंत्र है कि परतंत्र है उत्तर नैयायक कहै है ईश्व
र स्वतंत्र है और सर्व शक्ति मानहै फेर मीमांसक क
हैं है ऐसा नहीं बनै है और जीव स्वतंत्र है और ईश्व
र पर तंत्रहै काहेतें जीव अपनी इच्छाकरकें कर्मक
रैहै चाहे पुण्य कर्म करे चाहे पाप कर्म करें इसलें।

कर्मोंके करों विषे स्वतंत्र है और ईश्वर कर्मोंके फ
ल देन विषे पर तंत्रहै काहेतें जीवजैसा कर्म करे
है ईश्वर तैसाही फल देहै यातें कर्मही मुख्यहैं कि
कर्म करके जगतकी उत्पत्यादिक होहै प्रश्न तुम्हा
रे क्या कर्तव्यताहै और क्या मोक्ष है उत्तर हमारे ये
सा कह्याहै किविधि पूर्वक यज्ञादिक कर्म करे जा
व स्वर्गादिक की प्राप्ती होय तब दुःख रहित सु
खको भोगै है जबकर्मों का फल होय चुका तब
मर्त्यलोक विषें आय कर विचार करे है किकर्मो
करके दुःख रहित सुख भोगा अब कोई पेसाक
र्म कीजिए जिसकर के अक्षय सुखको भोगिये
दुःख रहित सुखको मोक्ष कहै हैं यातें कर्मही
सारहै यहसुन कर वैशेषिक वादी बोला कि
तुम्हारे कर्मोंका फल कुछ शेषभी रहाहै उत्त
र कर्मोंका फल अनेक प्रकारका भोगना शे
षहै प्रश्न तोभोगो क्यों नहीं उत्तर समाआ
वेगा तब भोगेंगे वैशेषिक वाला कहैहै जो
कर्मोंका फल हमारे ही आधीन है प्रश्न मी
मांसीका तुम्हारा क्यामत है और किसप्रकारमो
क्षहै उत्तर हमकाल वादीहैं कालको नित्यमा
नेहैं और अखंड माने हैं यही हमारे मोक्षहै
और यही सार है तब सांख्यवो बोला किका
लतो प्रकृतिके आधार है प्रकृति विषे फुरैहै दी

और अनित्यहै और क्षणिक है काहेतें भूत भविष्यत
वर्तमान तीन भाग करके वर्ते है और भूत काला
दिक भिन्न भिन्नहैं यातें क्षणिक है यातें प्रकृति
श्रेष्ठ है प्रश्न वैशेषिक का तुम्हारा क्यामत है और
क्या मोक्षहै उत्तर हमारे चौबीस तत्व मायाके और
पचीस वां पुरुष असंग है मायाही जगत्के आका
र परिणाम कों प्राप्त हुई है जगत्की उत्पत्ति अरु
स्थिति अरु लयका कारण मायाही है इसीकों
मोक्ष कहैं हैं औरयही सारहै तब वेदांती बोला
कि माया तौजड है स्वतः मायाका परिणाम न
ही संभव होता विना चैतन्यके जैसें कुम्हारके वि
ना मृत्तिका घटके आकार नहीं होता इसें तुम्हारा
मत नहीं बनता पांचोंके मत विषे मोक्ष कथनमा

और तुम्हारे पांचोंके मतविषे सारनहि पाया इसेंतुम्हारा मतनहिबनता

त्रहै जैसें आकाशका पुष्पकाहैतें तुम्हारे सभनोंके
मतकी मोक्ष पंचकोशों के अंतर है इसें प्रश्न
सांख्य वादीका तुम्हारा क्यामत है और क्यामोक्षहै
उत्तर श्रवण कर हमारे एकजीव वादहै और साध
नच्यारों करकें संपन्न मुमुक्षु संसार दुःखकी निवृत्ति
के अर्थ श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरोंतें प्रश्न करै तब सा
त गुरु श्रवण और मनन और निदिध्यासन द्वारे शा
रीर तीनोंतें विलक्षण पंच कोशों तें परे अवस्थाती
नोंका साक्षी सच्चित आनंद स्वरूप तूहीहै ऐसाउ
पदेश करै तब संसार दुःखकी निवृत्ती और परमानं

दकी प्राप्ती होय इसीकों मोक्ष कहे हैं यहीसारहै।
प्रश्न इसमें प्रमाण क्याहै उत्तर वेद प्रमाण है तत्त्वा
मसीति श्रुतिः अस्यार्थः तद्ब्रह्म त्वं असो ब्रह्मतू
है प्रश्न ऐसें मुख मात्रके कहवे तें ब्रह्म नहीं हो
ता उत्तर सत्यहै सुनरे वादी तत्पदका अरु त्वंपदा
का वाच्यार्थ कात्याग करके लक्ष्यार्थ विषे एकता
होयहै इसकों जहत अजहत् लक्षण कहे हैं इससि
द्धांतकों श्रवण करके शून्यवादी बोला भला सि
द्धांती सिद्धांत किया जो बीचमें ही पडे लडकोहो
थोडे औरचलो तो मेरे सुखकों प्राप्त होवो काहेतें
संपूर्ण का अभाव करके एकचैतन्य शेषमान लि
या इसतें अर्द्धनास्तिक हुवा भला सर्वके अभावमें
शेष कहां रहे है इतना उपदेश मेरा मानले जब
अभाव ही सिद्ध करेगा तब मोक्षकों प्राप्त होयगा
उत्तर सिद्धांति कहे हैं अरे सुनमूढ तेरीआधार प
र दृष्टी नहीं जाती है जोचैतन्य शेष नरहै तोअ
भाव सिद्ध कौन करें यातें भाव अरु अभावका सा
क्षी है प्रश्न साक्षी रहितभी अभाव हो उत्तर साक्षी
के विना अभाव नहीं ही बने है काहेतें अभावका
करणे वाला चैतन्यहै सोई शेष रहे है इसपर एक
दृष्टांत कहे हैं किसी पुरुषने घरकी सामग्री बाह
र काढ कर गेरदीनी दूसरे पुरुषनें पूछा किइस

घरमें कुछ औरभी है भीतर वालेनें कहा इसघर विषे
कुछभी नहीं है बाहर वाले नें कहा कि कुछ नहीं
पु. क्यों कहैं हैं तोतोहै इस घर विषे इस्के अभाव का सा
२५ ती चैतन्य सिद्ध हुवा इतिषट् शास्त्रके वादकी युक्ती
25 पूरण हुई ११ अथ विचार युक्ति लिख्यते प्रश्न सिद्धां
ती कहै है बुद्धि किस्के आश्रेहै और किस्करके परि
णामको प्राप्तहोय है उत्तर वादी कहै है बुद्धि चैतन्य
के आश्रे है अथवा अज्ञानके आश्रे है तहां सिद्धांती
कहै है जोचैतन्य के आश्रेहोय बुद्धीतो विपरीत क्यों
वर्तै अरु जो अज्ञान के आश्रे होयतो व्यवहार नहींसि
द्ध हुवा चाहिये प्रश्न तहांवादी कहैहैं कितुमही
कहो किस्के आश्रेहै बुद्धी उत्तर सिद्धांती कहै है क
र्मके आश्रे बुद्धीहै काहे तें कर्मो के अनुसार बुद्धी
वर्तैहै और देह करके बुद्धी परिणामको प्राप्तहोयहै
पश्वादिकों विषे देखिये है प्रश्न कर्म जडहै कि चै
तन्यहै उत्तर कर्म जडहै प्रश्न जोकर्म जडहै तोजड
बुद्धिको चेष्टा किसप्रकार करै है उत्तर जडकोभी ज
ड चेष्टा करे है जैसें वेगवान् वायु वृक्षको कंपावै है
प्रश्न कर्म किसके आश्रेहै उत्तर कर्मचैतन्य के आ
प्रश्न जोचैतन्य के आश्रयहै॰ श्रेहै तोकर्म बीचमें क्यों लाये हमनें कहाथा चैतन्य
के आश्रे बुद्धी है सोतुम नें चैतन्यही आश्रय माना।
तुम्हारा कहणा ऐसा हुवा जैसें कोई पुरुष चोरीये॰

चढाहुवा घासका गड्डा शिर पर धर रहाहै किसी।
नें पूछा घास शिर पर क्योंधरा उसनें कहाकि घो
डी ग्याभनहै इस्सें बोझ नहीलादा उत्तर जोहमक
र्तृत्वता नमानैं तौ कर्म उपासना ज्ञान नही बनै
कर्मादिक नही बणै तौ वेदकों अर्थता आवेहै
इस्सें कर्म माना प्रश्न तौ कर्म विपरीत क्यों वर्ते हैं^
उत्तर अज्ञानोपहित चैतन्यहै इस्से विपरीत नताहै जैसेंमदराके संयुक्त पुरुष विपरीत वर्त्तेहै प्रश्न इसे प्रमाण क्याहै^
उत्तर वेद प्रमाण है वेदविषे कहाहै दृष्टांत कि।
एक कलालनें मदिरा बनाय करकें स्त्री सेती का।
हा किमें मदिरा पीऊं हूं जो बेसुध होऊं तौमुझै
खटाई दीजिए सो पीकरकें विपरीत वर्तनें लगा ज
बस्त्रीनें खटाई दीनी तब सुधमें आया दार्ष्टांतिक
हैं हैं चैतन्य रूपी कलाल अविद्या रूपी मदिरा
को बनाय करकै बुद्धीरूपी स्त्रीनें कहाकि मैंअ
विद्यारूपी मदिरा पीऊं हूंम जोमें मोह रूपी बेसु
धहोऊं तौतत्व मस्यादिक वाक्यों के विचार रूपी
खटाई दीजियो जिस्सें ज्ञानरूपी सुधकों प्राप्तहो।
ऊंगा सोमदिरा रूपी अविद्याकों ग्रहण करत भ
या इस्सें विपरीत तारूपी कर्त्तृत्व ताकों प्राप्तहो
त भया जब बुद्धी रूपी स्त्रीनें विचार रूपी खटा
ई दीनी तब सुध रूपी ज्ञानकों प्राप्तहुवा प्रश्न
तुम्हारा दार्ष्टांति नही बनता काहेतें अविद्या अ
नादि अजन्मा नरही उत्तर आत्मा सबका कारण

यु.
२६
26

है यातें अविद्याका भी कारण है प्रश्न इसमें प्रमाण
क्याहै उत्तर शारीरक भाष्य विषे कहा है ह्यात्मावै
सर्व कारणम् अस्यार्थः ह्रीति निश्चयेन आत्माही
संपूर्णका कारण है प्रश्न जोचैतन्य के आश्रय क
र्म विपरीत वर्त्ते है तो बुद्धीही चैतन्यके आश्रय वि
परीत वर्त्ते ऐसा बनाहै परंतु कर्मकी हठकरे हो
ऐसा नचाहिये उत्तर कर्मो विना प्रकर्ण नहीं संभव
होता नर्क और स्वर्गादिक का गमनादिक नबनैगा
और बंध मोक्षकी व्यवस्थानहीं बणैगी इसे बुद्धीना
ही बनैहै चैतन्यके आश्रय यातें बुद्धीकों पुरुषार्थ रू
पी कर्तव्यता करके ज्ञानहोय है तब अज्ञान नाश
होयहै पश्चात् कर्म अरु बुद्धीका अभाव होयहै प्र
श्न तुम्हारा कहना सभ व्यर्थ हुवा काहेतें कारणका
नाश होणे सेती कार्य नहीं रहै है जैसें तंतुका नाश
होणे सेती पट नहीं रहैहै उत्तर तेराकहना असत्य
है कारणका नाश होने सेतीभी कार्य रहैहै जैसें रज्जु
विषे सर्पका भ्रम निवृत्त होनें सेती भय करकै उत्प
न्न हुवा कंपादिक रहै है इसप्रकार लोक विषे प्रसि
द्धहै इति यह बुद्धी और कर्मके निर्णयकी युक्ती पू
र्ण हुई २३ अथ सूक्ष्म विचारकी युक्ति लिख्यते
प्रश्न आत्मातु मनें कैसा सिद्ध कियाहै उत्तर कहै हैं
अस्तिमात्र सिद्ध कियाहै प्रश्न जोअस्तिमात्र हैतोकों

नभान होवै उत्तर आत्मा सूक्ष्म है प्रश्न इसका प्रमाण उत्तर अणो रणीया निति श्रुतेः इसका अर्थ कहै हैं अणुनें अणु है ऐषोणु रात्मा चेतसा वेदितव्यः इसका अर्थ कहै हैं यह सूक्ष्म आत्मा चित्त करके जानवे कों योग्य है प्रश्न तौ एक देश वछिन्न हुवा उत्तर तेरा कहना नहीं बनै है काहे तें व्यापक है। प्रश्न अणु व्यापक किस प्रकार होवै तुम कहते हो अणु रूप होकर आत्मा व्यापक है सो नहीं संभव होना जैसें किसी पुरुष ने गंगा में गोता मार्या संपूर्ण शरीर की अनुभव कर्ता शीतलताका तिस्सें अणु प्रमाण कहना नहीं बनता इस्सें शरीर प्रमाण आत्मा है उत्तर सुनवादी जो देह प्रमाण आत्मा होयतो हस्तीका आत्मा चींटीके देह विषै प्रवेश करै तब चींटी मात्र तौ चैतन्य होवै और बाकी देह बाहर पड़ा चाहिये अथवा चैंटीका आत्मा हस्तीके देह विषै प्रवेश करै तब चैंटी प्रमाण तौ चैतन्य होवै बाकी जड़ होय ऐसा तो नहीं दीखता इस्सें अणु मात्र ही है इहां दृष्टांत कहै हैं जैसें चंदन की बिंदी अणु मात्र है एक देश में देह के संपूर्ण देह में शीतलता अनुभव होवै है तैसें ही अणु मात्र सिद्ध हुवा प्रश्न इसका प्रमाण कहो उत्तर व्यासजीका सूत्र प्रमाण है अविरोधश्चंदनवत् अस्यार्थः दृष्टांत जैसें चंदन बिंदु शरीरके एक देश विषै स्थित सर्व शरीर व्यापी सुखकों

शीतलताकाः

जनावे है दार्ष्टांत तेसेंही जीवभी देह आपी शीतला
तादिक का अनुभव करेहै ह्यां अविरोध अर्थ है प्रश्न
पृ· २७ जो चित्त करके आत्मा देखा जाय तौचित्त द्रष्टा हुवा
27 और आत्मा दृश्य हुवा चितकों आत्मता आई औरचि
त्त कर आत्मा जाणा तिसें हमने चितकोंही आत्मा
माणा तुम्हारे आत्मातें क्याप्रयो जनहै उत्तर कहैहैं
ऐसा तेरा कहना बनै है इसपर दृष्टांत कहैहैं जैसेंसू
व र्यका प्रतिबिंबसमान अंश नेत्रोंमें है और विशेष अं
श सूर्यका आपहै परंतु मलीनता नेत्रोंकी तें तिससम
मान अंसतें विशेष अंश नंही दीखियेता जब नेत्रकी
मलीन ता अंजन देनें करके दूर होवे तब सामान्य
अंश अपनें विशेष अंशकों देखैहै दार्ष्टांत कहैहैं।
सूर्य रूपी ब्रह्मका सामान्य अंश नेत्र रूपी बुद्धीवि
षे जीवहै और विशेष अंश ब्रह्महै परंतु नेत्र रूपीबु
द्धीकी मलीनता तें अपनें विशेष अंश ब्रह्मकों नंही
देख सकेहै जब नेत्र रूपी बुद्धीकी श्रवणादिक वि
चार रूपी अंजन करकें मलीनता रूपी अविद्या नि
वृत्त होवै तब सामान्य अंश रूपी जीव अपने वि
शेष अंश रूपी ब्रह्मकों देखै है प्रश्न तुम्हारा अद्वै
त सिद्धांत नंही हुवा काहेतें जब नेत्रके सामान्य
अंशनें विशेष अंश सूर्यकों देखा तब घट पटा
दिक कोंभी देखा उत्तर श्रवण कर जबनेत्र के सा
मान्य अंशनें विशेष अंश सूर्यकों देखा तब आंख
डाकार वृत्तीहुई फेर जिधरदेखा उधर सूर्यही देखा

ऐसेंही दार्ष्टांत जानलेना यांतें ऐसेंतहीं सिद्धांत हुआ
वा इति यह अगर आत्माके निर्णय कीयुक्ती पूर्णहु
ई ॥ अथ वैराग्यके निर्णयकी युक्ती लिखते सा
धन चारों करके संपन्न जो पुरुष होय तिस्कों सं
न्यासका अधिकार है सो वैराग्य संन्यास की पर
म अवधिहै सोवैराग्य तारतम्य ताके भेद करके।
चार प्रकार होत भया कुटीचर कवहूदक हंस प
रमहंस सोई वैराग्य दोप्रकारका पर ऊैर अपर।
अपर वैराग्यके चार भेद कहैं हैं यतमान व्यतिरेक
एकेंद्रियत्व वशीकार अव यतमान का स्वरूप क
हैं हैं एकांत बैठ के सारा सार वस्तुका विचार करें
इस जगतमें सारक्याहै और असार क्याहै सोई यत
मान है व्यतिरेक कास्वरूप कहैं हैं एकांत बैठके
अपने चितमें देखे इतनें कषाय मेरे चित के परिपा
क हुयेहैं ऊैर इतनें नहिं हुये ऐसा विचार करके
जे नहिं परिपाक हुये तिनों कों दोष दृष्टी करके नि
वृत्त करै सोव्यतिरेक एकेंद्रिय त्व का स्वरूप कहैं हैं
विषयोंकी इच्छा होत संतेंभी मनकरके इंद्रियोंकों
रोकणा सो एकेंद्रिय त्वहै वशीकारका स्वरूप क
हैं हैं एहिका मुष्मिक विषय जिहासा इस्का अर्थ
कहैं हैं इस लोकके ऊैर परलोक के विषयोंकात्या
ग करै सोवशी कारहै सोवशीकार तीन प्रकारका
है मंद ऊैर तीव्र ऊैर तीव्रतर स्त्रीपुत्रादिकों के वि
योग सेती धिकु संसारहै इस बुद्धी करकें विषयों

पृ. २८

कों त्यागै सोमंद वैराग्यहै इस जन्म विषे पुत्रादिक मत होओ इस स्थिर बुद्धी करके विषयों का जोत्याग सो तीव्र वैराग्य फेर आवनें सहित ब्रह्मा लोकादि पर्यंत मतहोओस्थिर बुद्धि करके विषयोंका जो त्याग सोतीव्र तर तहां मंद वैराग्य विषै संन्यासका अधिकार नहीं है तीव्र वैराग्य होनें सेती फिरनेकी शक्ति नहीं हो तो कुटीचक संन्यास का अधिकार है जोफिरने की शक्ति होतो बहूदक संन्यास का अधिकारी है तीव्र वैराग्य होनें सेती हंस संन्यासका अधिकारी है ओर कछु कहें हैं तीव्रतर वैराग्य होनें सेती मुमुक्षुकों परम हंस संन्यास का अधिकार है सोपरम हंस संन्यासदो प्रकारका है एक विविदिषा संन्यास ओर विद्वत्संन्यास है साधन संपन्न होनें सेती तत्त्व ज्ञान की इच्छा करके करनेंकों योग संन्यास सो विविदिषा संन्यास है गृहस्थाश्रमादि कोंविषे श्रवणादि कों करके उत्पन्न हुवा ब्रह्म साक्षात्कार गृहस्थादिक करके चित्तकी विश्रांति लक्षण जीवन्मुक्ति के उदेश करके करने कों योग्य संन्यास है इसहीकों परवैराग्य कहे कहें इतियह वैराग्य के निर्णयकी युक्ति पूर्ण हुई १५ दृष्टांत कहैं हैं किसी पुरुषनें किसी एक पुरुषनें बीनती करीकि हेमहाराज जिसा करके मेरी कल्याण होवै एसा कोई उपाय कहो तब उसपुरुषनें कहा कितें भूमियोंका एजन किया

कर और इतनी वार्तो विचार लीजो किजो बलवान्
होताहै सोई कल्याण का दाताहै ऐसा श्रवण का
कै वह पुरुष भूमियां की उपासनां लगा करनें
और पदार्थ भोजनादिक भेट चढाया करै एकदिनां
जो देखै तो उस भोजन कों चूहा पावै है तब उसपु
रुषनें विचार किया कि भूमि यातें तो चूहा बलवा
न है काहेतें भूमियाका भोजन चूहा पावैहै और
भूमिया कछुनहीं कह सक्ता तब वहपुरुष चूहे
की उपासनां करनें लगा काहेतें चूहे कों बलवान
जाना इस्से एकदिनां जोदेखै तो बिल्लीनें चूहेकों
उठाय लिया तब उस पुरुष नें विचार किया कि
चूहे तेंतो बिल्ली बलवान् है इस्से बिल्लीकी उपास
ना करनें लगा फेर एक दिनां जोदेखै तोकुत्ते नें बि
ल्लीकों उठाय लिया तब वह पुरुष कुत्तेकी उपास
नो लगा करनें बलवान् जान करकें फेर एक दिनां
देखै तो उस पुरुषकी स्त्रीनें कुत्तेकों मारा रोटीखा
ने हुवें तब वह पुरुष स्त्रीकी उपासनां लगा करनें
एक दिनां स्त्रीका ब्यवहार मलीन देख करकें उसपु
रुषनें स्त्रीकों मारा तब विचार करकें देखा सभतें
बलवान् तोमैंही हूं ऐसें विचार करके आपही
कल्याण कों प्राप्त हुवा अब दार्ष्टांत कहैं हैं किसी
मुमुक्षु नें किसीएक विवेकी पुरुष नें विज्ञापना क
री औरकहा कि हेभगवन् जिस्करकें मैं कल्याण रू

यी सुखकों प्राप्त होवें ऐसा कोई उपाय रूपी साथ
यु. न कहो तब उस विवेकी पुरुषनें कहने रूपी उपदे
२९ श किया किंतू भूमियां रूपी उपास्य देवका पूज
29 न किया कर औरयह कहाया कि इतनी बातवि
चार लीजो कि जोबल वान् होता है सोई कल्याण
कर्ता है यातें उपास्य देव कों बलवान् जान करकें उ
पासना करनें लगा भोजना दिक आगै धरदेवै एक
दिनां विचार करकै देखै तो भोजन कों देह रूपी
चूहा जीम जावै है औरभूमियां स्यानी उपास्य देवा
कछु नहीं करसक्ता तब देह रूपी चूहे की उपासा
नां करनें लगा कि देह ही बलवान् रूपी महान् है
फेर एक दिनां विचार करकें देखै तो देह रूपी चूहे
कों बिल्ली रूपी इंद्री नें उठाय लिया तबउस पुरुष
नें इंद्री रूपी बिल्ली की उपास नां करनें लगा कि बि
ल्ली रूपी इंद्री ही बलवान् है फेर विचार करकें देखे
तो प्राण रूपी कुत्तेनें बिल्ली रूपी इंद्रीकों उठाय लि
या इस्तें वह पुरुष कुत्ते रूपी प्राणकी उपासना क
रनें लगा और जानाकि प्राणही बलवान् हैं तब फेर
विचार करकें देखै तो बुद्धी रूपी स्त्रीनें प्राण रूपी
कुत्तेकों अन्न पानादिक आहार करनें हुवें देख क
रकें तिरस्कार रूपी पीट गेरा तब उस पुरुष नें बुद्धी
रूपी स्त्रीकों बलवान् जाना कि स्त्रीरूपी बुद्धी हीश्रे
ष्ठ है फेर उसपुरुष नें विचार करकें देखा कि बुद्धीरू

पी स्त्री प्रपंच कोभी निश्चय करै है यही इस्का व्यवा
हार मलीन है यातें उस पुरुषनें बुद्धी रूपी स्त्रीका
मारनें रूपी तिरस्कार किया फेर विचार करके देखा
कि मेंही बलवान् रूपी महान् हूंम् प्रश्न निश्चय बु
द्धी तो सभका अनुभव करै है बुद्धीतें आत्मा महान्
कैसें कहिये इसमें कुछ प्रमाण भी है उत्तर सुनभा
ई बुद्धी चैतन्य की प्रकाशी हुई घट पटादिक कों नि
श्चै करै है इसते आत्मा ही महान है और इस्का प्रमा
णभी श्रवण कर श्रीभगवान् नेंकहा है गीता विषे सो
ई कहैंहैं इंद्रि याणि पराण्याहु रिंद्रिये भ्यः परं मनः म
नसस्तु परा बुद्धि र्योबुद्धेः परतस्तु सः इस्का अर्थ क
हैं हैं इंद्रियों कों विषयों तें श्रेष्ठ कहैं हैं और इंद्रि
यों तें मन श्रेष्ठ है फिर मन तें श्रेष्ठ बुद्धी है फेर जो
बुद्धी तें श्रेष्ठ सोई परमात्मा है इति निषेध द्वारे ज्ञा
नके होनेंकी युक्ती पूर्ण हुई १८ सिद्धां तीकहै है
आत्मा आनंद रूपहै काहे तें सर्वत्र आनंद ही आ
नंदहै आनंद विना कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता
प्रश्न सारे व्यवहार सिद्ध होते हैं ऐसा कहांलिखाहै
कि आनंद ही तें संपूर्ण व्यवहार सिद्ध होते हैं उत्त
र सुन भाई श्रुति प्रमाण है आनंदा द्देव खल्विा
मानि भूतानि जायंते आनंदेन जातानि जीवंति आ
नंदं प्रयंत्यभि संविशंति ॥ इस्का अर्थ कहैं हैं आनं
द तें हिं खलु इति निश्चये न ये प्राणी उत्पन्न होते हैं ।

यु.
३०
30

आनंद ही करके उत्पन्न हुये जीवें हैं आनंद ही को।
प्राप्त हों हैं और आनंद ही विषे प्रवेश करे है प्रश्न
भला जो आनंद ही मात्र संपूर्ण व्यवहार को सिद्ध क
रैहै तो दुःखकी प्राप्ती काहे तें होय हैं उत्तर हैतो सं
पूर्ण आनंद रूपही परंतु संसारके किसी विषय केऊ
पर चढाय कर आनंद कों लेवें है आनंद तो अपना।
ही है परंतु नाशमान वस्तुके ऊपर चढाये सेती आ
नंद भीगिर जाय हैं जिस वस्तुपर आनंद चढाय करा।
लियाथा उस वस्तुके अभाव विषे आनंदका भी अभा
व होय है जब आनंद का अभाव हुवा तब आनंदके
विरोधी दुःख हुवाही चाहिये प्रश्न जो आनंदका अ
भाव होगया तो आनंद स्वरूप नहिं रहा उत्तर अध्य
स्त आनंद का अभाव होताहै काहेतें कि अध्यस्त
कल्पित कों कहैं हैं और स्वरूप आनंद तो सदा एक
रस है देखले अज्ञान काल विषेभी आनंद ही कों
चाहै और अवण कर जो आनंद विषेय पर चढायक
रलेता है किजैसें पुत्र पर चढाय कर लेताहै किजै
सें पुत्र पर चढाय कर आनंद लियाहै आनंद तोदे
खले तूंएक रसहै जो तेरी हृष्टी होय कि तैंने जोपु
त्र पर अपना आनंद चढाया है वह आनंद और ते
रा आनंद एकरस होरहा है प्रश्न हम किस प्रकार
जाणें कि स्त्री पुत्रादिकों विषे अपना आनंद चढा।
य कर लेवै है येतो आनंद रूपही हैं जोइनो विषे

आनंद नहोय तौ कोईभी स्त्रीपुत्रादिकों कों अंगीका
र नकरै उत्तर सुनवादी जिस्काल विषै यही पुरुष
दुःखित होताहै किदुःखकों प्राप्त होताहै उसका
ल विषै स्त्रीपुत्रादिक आनके पुकारैं हैं किमहारा
ज हमारी ओर देखो हम तुम्हारे परम प्यारे हैं उस
पुरुष कों किसीका बोलनाभी नहीं सुहावता आ
व देख लेवो वादी जो अपना आनंद नहीं चढायाहै
तौ स्त्री पुत्रादिक आनंद कों नहिं देते प्रश्न भला
तौ अपना आनंद कैसा वह तौ दुखी होगया उ
त्तर इस्का उत्तर पहलें हि देआये हैं हम किनाश
को वान् वस्तु पर आनंद चढाय कर लेना है सोआनं
द नाशमान है उस आनंदके भोगणे तें दुःखकों
प्राप्त होता है ह्यांभी नाशमान् शरीर पर जोआनं
द को चढाय कर लिया है तिस्के अभाव के दुःख
विषै वह आनंद भी नाश होगया यातें ज्ञानी पु
रुष नाम रूपकों बाधकर परमानंद रूपही रहै है
और वस्तु पर चढाय कर जो आनंद लेते हैं सोउ
पास कों का धर्महै काहेतें कि एक मूर्ती पर आ
नंदकों चढाय कै लेते हैं उस मूर्ती के वियोगतें
दुःखकों प्राप्त होवै है याहीतें जन्म मरणकों प्रा
प्त होवैं हैं [illegible] और जोकोई कहै किउपा सि
क सर्व व्यापी मानैहै ईश्वरकों तौ आपकों तौ
जीव ही मानै हैं तौ अखंड नहीं भया प्रश्न जो

सर्व आपी मानें तो उनकी दृष्टी में सर्व व्यापी होइर
यु॰ होईहे उत्तर सर्वव्यापी किसी प्रकार सिद्ध नहीं होता
३१ ता उपासिक के मनविषे भी इस्वर एक युक्ति कहे
31 हे जेसें उपासिक इकटे हुये एक स्थान विषे किसी
पुरुष ने आन कर पूछा कि परमेस्वर को कैसा मा
नो हो उन सभोंने कहा कि परमेस्वर को सर्वव्यापी
मानें हें और हम दास हें तब उसपुरुष नें एक पुरु
षतें पूछा कि तू कौन हें उसनें कहा किमें दासहूं
दूसरे तीसरे तें पूछा अर्थ क्या सभनें कहा किहा
म दासही हें सभनोंके मध्य विषे परमेस्वर कहीं भी
नहीं पाया सभोंनें न्यारे न्यारे आपको जीवही बता
या यातें सगुण सर्व आपी नहीं होता निर्गुण ही
सर्व व्यापी हे प्रश्न तो आत्मा आनंद मात्र रहा सो
आनंद तो जड वस्तु विषेभी पावे हे जेसेंही रेलाल
विषे जो बालक भी देखे तो प्रसन्न होजाय उत्तर
सुन भाई ही रे लाल विषे जो आनंद हे सो और को
प्राप्त होता हे हीरे लाल आप के आनंद रूप नहीं
जानते और यो आत्मा चेतन्य आनंद रूप हे चेतन्य
मात्र सर्व आपी हे चेतन्य कहें हें ज्ञानमात्र को प्रश्न
तो ऐसा चिदानंद सदास्थित नहीं रहेगा काहेतें म
न करके जाना जाय हे उत्तर सुनवादी मनके भाव
और अभावका साखी तीनों काल विषे स्थित रहा
सो वाला तू आपही को देख कि देहादिकों तें तू

पहले भीया ओर अब भी ओर इनदेहा दिकों के अ भाव होनेतें भी रहैगा यातें आत्मा अस्ति मात्र सि द्ध भया सो सच्चिदा नंद स्वरूप स्वयं प्रकाश स्वतः सिद्धही है इसतें विवेकी पुरुष देहादिकों का बाध करके पूर्ण आनंद स्थित रहैं हैं ओर जो वस्तु परा वहाय कर आनंद लेते हैं तेदुःखकों प्राप्त होतेहैं ओर उनका अज्ञान नष्टनहीं हुवा सत वादी श्रो वैराग्य ही कारणहै प्रश्न इस विषे प्रमाण क्याहै उत्तर स्मृति प्रमाण निषेध्य निखिलो पाधीन् नेति नेतीति वाक्य तः विद्या देक्यं महावाक्ये जीवात्म परमात्म तोः ४ इसका अर्थ करैं हैं नही यह नही यह इन वाक्यों करके संपूर्ण उपाधियों को निषे ध करके महा वाक्यों करके जीवात्मा ओरपरमा त्मा दोनोंकी एकता जानवेकों योग्य है प्रश्न जो सत चित आनंद मात्र ही आत्माहै तोस्त्री पुत्रादि क क्या बाधक हैं उत्तर सत भाई स्त्री पुत्रादिक बं धनके कारण हैं यातें बंधन रूप हीहै प्रश्न स्त्री पुत्रादिक तो भिन्न दीखें हैं फेर बांधे कैसें है इस विषे प्रमाणतो कहो उत्तर स्मृति प्रमाण है लो ह दारु मयेः पाशैः पुमान्वद्धो विमुच्यते पुत्रदार मयेः पाशैः मुच्यतो पि नमुच्यते इसका अर्थ करैं हैं लोह ओर काष्ट मय फांसि यों करकें पुरुष ब धा हुवा छुटैहै ओरस्त्री मे फांसी यों करकें छुटाहु

भी नहीं छूटे है यांते ज्ञान तो सभकों बाधकरके हो

यु- यहै किसी वस्तु विषे जो आसक्ति होय तोभी ज्ञान

४२ का होना दुर्लभ है याते आशक्ती ही त्यागणी है

प्रश्न भला संपूर्ण के बाध विषे कभी आत्मा काभी

तै.^ बाध होय जाय, और जो बाध नहोय तो इसवि

षे प्रमाण क्या उत्तर स्मृति प्रमाण है सर्व द्वैत बा

धेप्य बाधरूप नः ॥ इसका अर्थ कहै हैं संपूर्ण द्वै

तका बाध होतसें तें भी आत्मा अबाध्य रूपहै

सर्वके बाध्यतें अखंड आनंद रूपही शेष रहै है

और भीप्रमाण पंच दशी विषे कहा है सोभी श्रव

ण कर सत्यत्वे बाध राहित्यं जगद्बाधैक साक्षिणः

बाधः किंसाक्षिको ब्रूहि नत्व साक्षिक इष्यते इसका

अर्थ कहैं हैं बाधकरकें रहित सोई सत्यहै प्रश्न

इहां प्रसंग विषे क्या आया उत्तर जगत्के बाधका

एक साक्षीहै जगत्का बाधकहि ये सुषुप्ति मूर्छा

समाधि विषे अविद्य मानता प्रश्न जगत्के बाध

विषे साक्षी का भी बाधहो उत्तर जगत्के बाधवि

षे जोसाक्षी का बाध होवे तो बाधका कौन सा

क्षीहै नहीं कोईभी नहीकहै प्रश्न साक्षी विना

भी आत्माका बाध क्यों नहोवे उत्तर साक्षी रहि

त बाध नहीं प्राप्तहोवे ओर प्रकार अति प्रसंग

आवे है इसतें सर्वथा सच्चिदा नंद ही स्वतः सिद्ध

हुवा इति सच्चिदा नंद आत्मा के निर्णय की युक्ती

पूर्ण हुई ९ दृष्टांत कहैं हैं किसी पुरुषके बुलाव
नेकों किसी राजाने दूत भेजा उस पुरुष नेंकहा
कि मेरा मंत्री कोई नहीं किसें में संमत करुं कि म
झकों राजाके निकट जानों उचित है नहीं उचित है
सोयह चाकर से वकत तें तोका संमत करें इसकों
वह युक्ति याद आई कि किसीनें कहाहै कि जोको
ई मंत्री नहोय तो अपनी पगडी तें संमत करिये
तब यह पुरुष अपनी पगडी कों सन्मुख करके
संमत लगा करनें इतनें में इसके चित्त विषे फुरी कि
जिस वार्त्ता विषे गुण बहुत होवें औगुण तुच्छहो
य सोकीजिये तब इसके चित्त विषे ऐसी फुरी कि
राजाके निकट नहीं जाने तें इतनांही तोगुण है
कि आराम बना है और श्रम नहीं होता है अरु अ
व गुण बहुते हैं कि पहली अवज्ञा तो बनीही हु
ई है और नहीं जानेते नई अवज्ञा बनेगी और वा
ह राजाहै किस प्रकार ताड़ना करे अरुजो जाऊंगा
तो जानेका श्रमतो होयगा परंतु राजा अपराध कों
क्षमा कर देवेगा इस विषे सुख अधिक होयगा
इसें जानाही उचित है तब यह पुरुष उस राजाके
सन्मुख गया राजानें कुछ कागद बनाव नेकी आ
ज्ञा करी सोउस पुरुष नें पहर छह बीतनें पर्यंत
उस कागद कों भले प्रकार बनाया अरु राजाकों
दिषाया राजा कागद कों देखके बहुत प्रसन्नभ-

या और उस पुरुष कों प्रसाद दिया तब वह पुरुष
यु॰ निर्भय होइ के आनंद कों प्राप्त भया अब दार्ष्टांति
३३ कहैं हैं जीव रूपी पुरुष कों ईश्वर रूपी राजानें शा-
स्त्र रूपी दूत भेज करकें बुलावनें रूपी सन्मुख होनें
की आज्ञा करी तब उस जीव रूपी पुरुषनें कहाकि
मैं किसें संमत रूपी विचार करूं किमुझकों ईश्व
ररूपी राजाके निकट जाना उचित है वानंही है ई
द्रिय रूपी सेवक कोंतें क्यासमत करूं तब बुद्धीरू
पी पगडी कों सन्मुख करकें विचार रूपी संमत लगा
करनें तब इस्के चित विषें ऐसी फुरी किईश्वर रूपी
राजाके निकट नंही जानेंतें इतनाही तोगुण है कि
आराम रूपी विषया नंद बना हुवा है अरु निकट
जानें तें यह विषया नंद नंही रहैगा और अवगुण
बहुत हैं कियह लेंही सन्मुख रूपी अवज्ञा कर
कें आवागमन विपत्तिकों भोगूंहूं अबऔर नयी अव
ज्ञा बनेगी तोईश्वर रूपी राजा क्या ताडना रूपी-
जन्म मरण की विशेष दुःखदिखावेगा और जो-
मैं ईश्वर रूपी राजाके सन्मुख होऊंगा तो साधना-
रूपी श्रमतो होगा परंतु ईश्वर रूपी राजा अपराध
कों क्षमा करदेवेगा इसही विषे मेरा कल्याण हो
वेगा यातें ईश्वर रूपी राजा के निकट जानाही उ
चित है तब यहजीव रूपी पुरुष ईश्वर रूपी राजा
के निकट जाने स्यांनी सन्मुख भया ईश्वर रूपीरा

जानें कागद बनावनें स्यानी कुछ साधनकी
आज्ञा करी तब जीव रूपी पुरुषनें छुपहर
बीतनें रूपी छुहो ऊर्मियां के अभाव पर्यंत
कागद के बनावने स्यानी प्रार्थना करी तब
ईश्वर रूपी राजानें सच्चिदानंद रूपी प्रसाद
दिया तबजीव रूपी पुरुष आनंद कों प्राप्तहु
वा प्रश्न इस विषे प्रमाण क्याहै पक षड्
मी ही का अभाव कियाहै कुछ विशेषता
तौ दीषती नहीं उत्तर इस विषे प्रमाण श्रु
ति है सोई कहें हैं षडूर्मि रहितः शिवः इ
सका अर्थ कहें हैं छुहो ऊर्मियां करके रहि
त सोई शिव कथिये कल्याण रूप आत्मा
नंद है षडूर्मि कहें हैं अशन पिपासा प्राणों
के धर्म हैं जरामरण स्थूल देह के धर्म हैं
शोक मोह मनके धर्म हैं इनकी निवृत्ती लिं
ग शरीर के अभाव विषे होयहै सोई लिंग भं
ग मुक्ति प्रसिद्ध है उप निषिदों विषे प्रश्न।
कारण के निषेध विनो ज्ञान नहीं होता तु
मनें ज्ञान किसप्रकार मान लिया उत्तर स
न वादी कारणका निषेध श्रवणमनन निदि।

ध्यासन विना नहीं होहै सोई मुमुक्षुनें कियेहैं और कारणके अभाव विना लिंगशरीर
का अभाव नहीं होहै प्रश्न श्रवण मनन निदि

ध्यासन के करे ते कारण का अभाव नहीं होता
कर्मादिकों के किये विनां यातें कर्मादिक कार
ण मुख्यहै और श्रवणादिक तें ज्ञान होहै इसवि
षै प्रमाण क्याहै उत्तर इहां श्रुति प्रमाणहै
आत्मावारे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासि
तव्यः इसका अर्थ कहैंहैं आत्माही साक्षात्कार
करवे को योग्यहै आत्माही श्रवण करवेकोंयो
ग्यहै आत्माही मनन करवेकों योग्यहै आत्मा
हि निदिध्यासन करवे को योग्यहै प्रश्न इस श्रु
ति करके ज्ञान नहीं सिद्ध भया काहेतें कि पह
लें द्रष्टव्य पद कहाहै कि साक्षात्कार पदका औ
र श्रवण मनन निदिध्यासन पीछें कहें इसतें
उत्तर द्रष्टव्य इस पद करकें ऐसा सिद्ध भया कि
साक्षात्कार रूपी पहलें फल दिखाय करकै ति
सकें साधन श्रवण मनन निदिध्यासन कहैं हैं
ज्ञान कांड विषै यही मर्यादा है कि पहलें फ
ल दिखाय करकें पीछे साधन दिखावैं हैं यातें कारण
के अभावकी तोपका नहीं बनेहै इतिप्रश्नोत्तर प्रकार
ज्ञानकेप्रगटीके दृष्टांतवि.१९ प्रश्न मुमुक्षु का आत्मानं
द कैसाहै जिसप्रकार आत्मानंदकालाभ होय सोई
प्रकार कहो उत्तर गुरुकहैंहैं जैसें एक राजा चक्रवर्ती
हो तिसको ॥

षोडश वर्ष की अवस्था हो और सर्व कला कुशा
लहो अति सुंदरभी हो और कोई अंग भंग नहीं भ
याहो और तिस राजा की स्त्री षोडश वर्ष की अति सुं
दरी हो और जिस राजा की आज्ञा को ई भंग नहीं क
र सकै और धन ऐसा हो कि पर्वत सरीखे ढेर लगे
होवें वनों विषें और महान शास्त्रज्ञ हो और धर्मज्ञ
भी हो और सर्व कला कुशल हो अति सुंदरभी
हो काम देव कैसा स्वरूप ऐसे पुरुष को एक म
नुष्या नंद कहै हैं तिसें सहस्र गुणा आनंद भूलो
क का है और तिसें सहस्र गुणा आनंद भुवलो
क का है और तिसें सहस्र गुणा आनंद स्वर्ग लोक
का है और तिसें सहस्र गुणा आनंद जनलोक का
है और तिसें सहस्र गुणा आनंद तपलोक का है
और तिसें सहस्र गुणा आनंद सत्यलोक का है औ
र तिसें सहस्र गुणा आनंद ब्रह्मलोक का है और
तिसें सहस्र गुणा अधिक आनंद ब्रह्मा का है सो
ई ब्रह्मा दिक का आनंद ऐसा है आत्मा नंद जो भ
या महान समुद्र तिसका लेश मात्र है यहां इस
विषे प्रमाण क्या है ब्रह्मादिक तो महान आनंदी
सुनिये हैं उत्तर स्मृति प्रमाण है सोई कहै हैं अ
खंडा नंद रूपस्य तस्या नंद लवा स्सृताः ब्रह्माद्या
स्तार तम्येन भवंत्या नंदिनो लवाः॥ इसका अर्थ क
हैं हैं ब्रह्मा इंद्रादिक परिछिन्न आनंदी ही हैं तुप
नः ब्रह्म अखंड आनंद है अनुभव आनंद रूप तें।

अपरिछिन्नहै आनंद स्वरूप जिसका तिस आनंद
पु. समुद्र के लेशकों आश्रय करकें ब्रह्मादिक भी आ
३५ नंदी होरहेहैं आनंद की तारतम्यता करकें प्रश्न श्रु
35 तिभी प्रमाण कहो तो मानें तुम्हारा वचन उत्तर
श्रुतिभी प्रमाण कहैं हैं एतस्यैवानंदस्यान्यानि
भूतानि मात्रा मुपजीवंतीति श्रुतेः इसका अर्थक
हैं हैं इसही आनंद के और प्राणी लेश मात्रकों ले
करकें आनंद हो रहे हैं इति एकी आत्मा नंदके नि
र्णयकी समाप्ति हुई १९ गुरुनें शिष्यकों कहाकि
ऊतनी रंडके शिष्यनै विनती करी कि महाराज इ
सका अर्थ कहो मैं ऊतनी रंडका किसप्रकार हूं ति
सकों गुरु उपदेश करैं हैं ऊतंनी रंडका तूंहैं काहेते
कि बुद्धी रूपी स्त्रीका जीव रूपी पुत्र और ईश्वर रूपी
पति तिस जीव रूपी पुत्रका तो जीवत्व नाश हुवा
तो बुद्धी ऊतंनी हुई और ईश्वर रूपी पतिका अभाव
हुवा तो रंड भई तिस्करके तत् पद और त्वंपदके
दोनों वाच्य अर्थोंका त्याग कर आस्ति पद तूंही शे
ष रहा याहीतें ऊतंनी रंडकाहैं प्रश्न इस विषे प्र
माण काबंध तें मुक्ति किस प्रकार हो उत्तर इस
विषे स्मृति प्रमाण है विज्ञाते साक्षि पुरुषे परमा
त्मनि चेश्वरे नैराश्ये बंध मोक्षेच नाचिंता मुक्तये-
मम इसका अर्थ कहैं हैं देह इंद्रियादि कों के सा
क्षि पुरुष त्वंपदके लक्ष्यार्थ कों चपुनः परमात्मा
ईश्वर तत्पद के लक्ष्यार्थ कों ब्रह्म मैंहूं ऐसा साक्षात्।

त्कार करने सेती नित्य मुक्त चिद्रूप आत्मा के अनुभ
व तें बंध और मोक्ष विषे भी आशा रहित होनें सेती
मुझे मुक्त के अर्थ नही चिंता है प्रश्न मुक्त के अ
र्थ तौ चिंता नहो परंतु पुण्य और पापों का तो स्पर्श
ही होगा उत्तर सुन भाई ज्ञानी कों पुण्य पापों का
नही संबंध है काहे तें ज्ञानी विधि का दास नहीं है
कहा भी है स्मृति विषें सोई कहें हैं नत्व तस्य पुण्य
पापाभ्यां स्पर्शोस्ये तत्वं जायते नह्याकाशस्य धूमेन
दृश्यमानापि संगतिः इसका अर्थ कहें हैं तत्पद औ
र त्वंपद का जो लक्ष्यार्थ तिसकी एकता जानने वाले
कों पुण्य और पाप दोनों करके सहित अंतःकरण के
धर्मों का संबंध नही होइ है इस विषे दृष्टांत कहें हैं।
जैसें निश्चे करके आकाश कों धूमें करके सहित दे
खने मात्र भी संगति नही है दार्ष्टांति कहें हैं तैसेंही
आकाश रूपी तत्वज्ञ कों पुण्य पाप कर्मरूपी धूमें
करके सहित कथन मात्र भी संगति नही है इति ज्ञा
नती रांड के विकल्प विषे तत्पद और त्वंपद के निर्ण
य की पुस्ती पूर्ण हुई २ दृष्टांत माता जो है सो अपनी
पुत्री कों रुई तूमनी चर्खी कातनी सिखावे है रु
ई की पुटकी दूर करे है प्रथम जो पुत्री चर्खी काते
है तौ तार एक रस नहीं आवती कबी मोटा कभी
पतला कबी टूट जावे है और जब उसको भले प्रका
र कातनां आवे है तब न तार मोटा न पतला न टू

टे है अंधेरे और उजाले विषे एकरस तार निकले है
अब दार्ष्टांत कहै हैं गुरु रूपी माता मुमुक्षु रूपी।
पुत्री कों रुई तूमनें स्थानी संघात काशोधन औरका
तनें स्थानी विचार उप देश करै है और रुई में जोफु
टकी निकले है तिस स्थानी अहंकार राग द्वेषादि-
क तिन कों दूर करै है और वेद रूपी जोचर्खा है।
तिस विषे संघात रूपी रुईकों विचार स्थानी का
ते है और तारस्थानी अपने स्वरूपका आनंद उत्पा-
न्न होवे है औरमोटे पतले तारस्थानी संशय अरु
असंभावना है औरतार के टूटने रूपी विक्षेपा दिक
हैं और भले प्रकार कातना क्या सीखा कियथा
र्थ विचार किया तब अंधेरे उजाले रूपी प्रवृत्ति।
और निवृत्ति विषे एक रसतार रूपी आनंद होरहे
है प्रश्न प्रवृत्ति और निवृत्ति विषे जो एकरस तानंही
रहै है इसमें प्रमाण कोई कहो तोमा नें उत्तर स्मृति
प्रमाण है सोई कहै हैं प्रवृत्तौ जायते रागो निवृत्तौ
द्वेष एवहि निर्द्वन्द्वो बालवद्धी मान्नेव मेव व्यवस्थि
त अर्थ कहै हैं रागसहित प्रवृत्ति होतसेतैं विषयों
विषे रागहोवे है और विषयों विषे द्वेष पूर्वक नि।
वृत्ति होतसेतै विषयों विषे द्वेष होय है इसही का
रण तें ज्ञानी बालक की न्याई शुभऔर अशुभके
अनुसंधान करके रहित राग और द्वेष दोनों करके।
रहित सेतैं इसही प्रकार रागतें उत्पन्न होहै निह

त्ति दोनोंतें रहित आनंद रूपही स्थितहै प्रश्न प्र
वृत्ति के व्यवहार तोदीखेंहैं ज्ञानी किसप्रकार प्रवृ
त्ति निवृत्ति मान नहीं उत्तर सुनभाई प्रारब्ध केवश
कभी प्रवर्तेहै कभीनिवर्त होंहै नहीं रागद्वेष केवश
तें प्रश्न तुमनें वेदकों चोर्ख स्थांनी कहांतो वेदकी
का उपमां रही ऐसावचन तोकहीं प्रमाणहै नहीं
वेदही वेदंसी ब्रह्महै ऐसा तोप्रमाण सुनाहै काहे
तें वेद ब्रह्मकों प्रतिपादन करैहै इसें उत्तरगीता वि
षै प्रमाण है सोईकहै हैं त्रैगुण्य विषया वेदा निस्त्रै
गुण्यो भवार्जुन निर्द्वंद्वो नित्यसत्वस्थो निर्योग क्षे
म आत्म वान् इसका अर्थ कहै हैं त्रिगुणात्मक
जे सकामी पुरुषहैं तिनोंकों त्रिगुणात्मक कर्म
फलके प्रति पादन करनेवाला है वेदहै अर्जुन तूं
तीनों गुणोंकी कामना करकें रहित हो निष्कामवि
षै उपाय कहै हैं सुखदुःख शीतोष्णा दिक द्वंद्वों
करकें रहित हो रहित होनां कहिये इनकों सह
जों तूं कहै किसप्रकार सहूं सहनेका प्रकार कहै
हैं नित्य सतो गुण विषै स्थितहोनसेंतें धीर्यकों
अव लंबन करकें सहनेसेंही योगऔर क्षेम करकें र
हित होनां कहिये इनकोसह जोतूं कहै किसप्रकार स
हूं सहनेकाप्रकारकहैंहैं नित्यसतोगुणविषैस्थितहो
होनसेंतें धीर्यको अवलंबनकरकें सहनेसेंही योगऔ
र क्षेम करकें रहितहो योगकहिये अप्राप्त वस्तुकाजो

पालन सो दोस तिनों दोनोंकरके रहित हो तैसे ही।
आत्मवान् कहिये अप्रमत्त होके प्रमादी मत हो
७. प्रसन्न हो ऐसा ज्ञान आपे विचारने करकेही होहै गु
१० रोंका क्या प्रयोजन है उत्तर गुरोंके विना ज्ञान नही
37 होता कैसाही शास्त्रज्ञ होवै शिष्य प्रसन्न इसका प्रमा
ण कहो श्रुतिस्मृतिही प्रमाण कहे हैं श्रवण क
रनेषा तर्केण मतिरापनेया प्रोक्तान्येनैव सुज्ञाना
य प्रेष्ठेत्यादि श्रुतेः इसका अर्थ कहे हैं हे नचिकेतः
यह ब्रह्मके विषय करनेवाली बुद्धी मूल प्रमाणर
हित शुष्क तर्क करके नही प्राप्त हो है किस प्रकार प्रा
प्त होहै सोई कहे हैं और सर्वज्ञ गुरु करके युक्ति द
ष्टान्त पूर्वक उपदेश करनेसेती भलेप्रकार ब्रह्मको
विषय करने वाली विद्या अविद्याकी निवृत्तीके अ
र्थ है यह यह कठवल्लीकी श्रुति प्रमाण है इसके
आदि लेके औरभी श्रुतियां कहे हैं और स्मृति।
भी श्रवण कर आचार्येभ्यो लब्ध सुसूक्ष्माच्युत
त तत्वा वैराग्येण अभ्यास बलाच्चैव दृढिम्ना भ
क्त्यैकाग्र्य ध्यानपरायं विडरीणं ते संसार ज्ञान विना
शं हरिमीडे १ इसका अर्थ कहे हैं आचार्यों
ते लब्ध कहिये पहली जानो भले प्रकार सू
क्ष्म अच्युत तत्व कहिये निर्विकार नित्य वि
ष्णु पर वैराग करके और अभ्यास कहिये वा
रं वार श्रवण करना तिसकरके प्राप्त हुवा जो
बल रूपी मनन तिनों दोनों करके कि दृढ भ
क्तिकरके दृढ भक्तिका।

हिये में ब्रह्महूं इसप्रकार एकत्व करकें जोनिदिध्या
सन एकाग्र ध्यान पर होतांतैं जिसपरमात्मा स्वरू
पकों साक्षात्करें हूं तिस हरिकी में स्तुति करूंहूं
सो कौंन हरिहै संसार कारण जो अज्ञान तिसका
नाश करनें वाला २ यातें हे शिष्य तूपरमानंद रूप
ही है तुझ विषे विकल्प नहीं संभव होता इति
चोर्वे के दृष्टांत करकें परमानंद की प्राप्ती के उपाय
की युक्ती पूर्ण हुई २१ दृष्टांत किसी पुरुष ने कि
सी महा पुरुष कों पुत्रके अर्थ टहल करी उनोंनें
कहाकि तेरे पुत्र होगा सोतिस पुरुष के पुत्रहूवा
फिर उसनें प्रार्थनां करी किमेरे पुत्र होवै महापुरु
षनें कहाकि तेरे यही पुत्र होवैगा आशंका ख्यार
ज पुत्र तो होगयाथा फेर यह कहा कि यही पुत्र
होगा यह वचन में नहीं समझा उत्तर पुत्र वहीहै
जो पिता कों नरकतें उद्धार करै सोवह पुत्र अबा
ही पुत्र धर्मकों नहीं प्राप्तहुवा इसें वारंवार यही
कहा कि तेरे यही पुत्रहो वैगा दार्ष्टांति कहें हें गु
रु ने मुमुक्षु की विज्ञापनां श्रवण करकें तत्वमा
सी वाक्य रूपी जो ज्ञानका उपदेश किया सोई ज्ञा
न रूपी पुत्र हुवा परंतु सामान्य तें हुवा उसकायथा
र्थ संशय निवृत्त नहीं हुवा इसें फिर ज्ञान रूपी
पत्र ४ पुत्रकी वांछा रूपी संशय रूपी निवृत्ती के अर्थकि
या औरवारं वार गुरौंका उपदेश करणां शिष्यकी

दृढताके अर्थहै सोवारं वार अभ्यासकी दृढता क
पु. रके वही ज्ञान परिपाक हुवा जैसें उसी पुत्रनें पुत्र
३८ धर्मको प्राप्त होकर के पिताका नरक नें उद्धारकि
38 या तैसें ही इस ज्ञान रूपी पुत्रनें जीवरूपी पिता-
का जन्म मरण स्यानी नरक तें उद्धार किया प्रश्न
इस विषे प्रमाण कहां है उत्तर स्मृति प्रमाण है
पुन्नाम नरकात्त्रै तत् त्रायतेति सपुत्रकः इसकाअ
र्थ कहैं है पुन्नामा नरकतें जो तारे सोई पुत्रहै
प्रश्न वहां तो स्त्रीकरकें पुत्र हुवाथा इहांकोनस्त्री
है उत्तर व्यवसायात्मिक बुद्धि रूपी स्त्री करके पुत्र
हुवा पुत्रजो पति ब्रता स्त्रीनें होताहै सोई पिता-
का कल्याण कर्त्ता है और व्यभिचारिणी रूपी अ
व्यव सायात्मिक बुद्धीतें जो ज्ञान रूपी पुत्र भये-
सोघट पटादि रूपी अनेक ज्ञानहैं तेचैतन्य रूपी-
पिता के कल्याण के हेतु नहींहै प्रश्न व्यवसाया-
त्मिका और अव्यव सायात्मिक बुद्धिके निर्णय विषे
प्रमाण क्याहै उत्तर स्मृति प्रमाण है भगवान-
नें कहाहै गीता विषे व्यवसाया त्मिका बुद्धि रेकेह
कुरु नंदन बहु शाखा ह्यनंतास्च बुद्धयो व्यवसा
यिनां इसका अर्थ कहैं है हेअर्जुन जगत विषेअ-
क व सायात्मिका बुद्धी एकहीहै व्यवसायात्म क कहि
ये शुद्ध बुद्धी एक परंत है बहुत है शाखा जिना
की ऐसी अनंत बुद्धियां अव्यव साई पुरुषोंकीहै

प्रश्न एवं तुमनें कहाया कि प्रथमज्ञान सामान्य तेंहोता
है ओर फेर विशेषतें होता है इस विषे प्रमाण काहै उ
त्तर दृष्टांत जैसें प्रथम सूर्यका बिंब जो उदय होवेहै
अरुण तिसका प्रकाश सामान्यतें होताहै सो अंधका
रकों यथार्थ ज्ञान निवृत्ति नहीं करसके है ओर जिस
काल विषें विशेष प्रकाश होता है सोसंपूर्ण अंध-
कारकों निवृत्ति करैहै इसही प्रकार दार्ष्टांत जानले
ना प्रश्न इस विषे प्रमाण कहो उत्तर स्मृति प्रमा
ण है सोई कहे है अरुण नेव बोधेन पूर्वं संतमसि
हृते तत आविर्भवे दात्मा स्वयमेवांशु मानिव १३
का अर्थ कहें हें जीवात्मा परमात्माके ऐक ज्ञानक
के पहली अज्ञान नाश होंनें सेती तिसके पीछे आ
त्मा आप ही उदय होहै यहां दृष्टांत कहें हे जैसे
अरुण के प्रकाशनें करके पहली अंधकार नाश
होनें सेती तिस पीछे सूर्य्य आपही उदय होहै ति
सहीकी न्याई आत्मा कों जानलेना इति ज्ञान रूपी
पुत्रके निर्णय की युक्ती पूर्ण हुई २२ सिद्धांती वि
चार करें है किकर्तृत्व भोक्तृत्व किस्के लगाये हो
वे है जोकहिये ईश्वर के लाये हुये हें तोलगावा
णे वाला तोईश्वर हुवा यह जीव भोक्ता किसप्र
कार होवे ओर जोकहि ये ईश्वर महान् है इसेंवा
स्तेकार करके लगावे है तो जिसनें कर्तृत्व भो
क्तृत्व लगायेहैं उसें कल्याण कैसें होवे गा ओर
जोकोई कहै ईश्वर कल्याण करदेवेगा तोपुरुषा

ज्ञानकांड नहि बनेगा जो ज्ञानकांड नहि बनेगा तो ?२

षार्थ मानागया इसतें ईश्वरके लगाये नहीं कर्तृत्व
यु॰ ३९ 39 भोक्तृत्व काहे तें ईश्वरकी लगाई वस्तु का अभावा
करणे का कोई उपाय है नहीं तौ कर्म उपासना
भी नहीं बनैंगी इसतें वेदकों अर्थता आवेगी और
जो कोई कहै कि ईश्वर किसी कों तौ कर्तृत्व भो
क्तृत्व लगावै है और किसीकों नहीं लगावै है तौ ई
श्वर विषे दो दूषण आवै है एक नैर्घृण्यता और पा
क विषम ता प्रश्न वादीका नैर्घृण्य ता और विषम
ता क्या है उत्तर नैर्घृण्यता कहिये उत्पत्ति काल वि
षे जगत्कों रच करकै प्रलय काल विषे अपनें
विषे लय करणां कि दया रहित और विषमता क
हिये किसीकों सुख देणां और किसीकों दुःख दे
ना और ईश्वर निर्दोष है ज्ञान स्वरूप है ईश्वर वि
षे दूषण कहणा अनर्थ पात है प्रश्न भलाजी
अविद्याके किये हुये हैं कर्तृत्व भोक्तृत्व ऐसा मान
लो उत्तर सुन भाई अविद्याके भी किये नहीं यथा
मतो अविद्या अवस्तु है और निर्वि कल्प है अविद्या
का नाम ही कूटस्थ है कूटस्थ कहिये निर्विकार
प्रश्न जो अविद्याके किये नहीं तुमें ऐसा कहो हो र
तौ रज्जु विषें अज्ञान तें सर्प भान होहै नहीं उत्तर सु
न वादी सघन अंधकार विषै तौ रज्जुभी नहीं दीखे
है सर्पका विकल्प कहां तें आया प्रश्न जो अवि
द्या तुमनें कछु वस्तु नहीं मानी तौ अविद्याका का
र्य वर्ग जगत कैसें मान लिया उत्तर सुन भाई का

रण तो निर्विकल्पही है जो कारण मैंवस्तु होती है सोभान नहीं होती जब कार्य विषे आवै है तबभा न होय है प्रश्न इसमें कोई युक्ति कहो तब तुम्हारा वचन मानें उत्तर जैसें बटका कारण बीज हैं परं तु बीज विषे बट दीखता नहीं जोबीज कों चीर करभी देखिये तो कहीं हरियाली का नामभी न ही और फेर उस बीजहीं तें जब वृक्ष उदय हुवा त ब जाण कि यह बट है प्रश्न भलाजी तुम्हारे का हनें हीं तें अविद्या के किये कर्त्तृत्व भोक्तृत्व पाये। उत्तर सुनभाई कर्त्तृत्व भोक्तृत्व काकारण औरहीं है अविद्या नहीं है हमनें कार्य कारण का जो दृष्टांत दिया है यातें केवल।अविद्यातें कर्त्तृत्व भोक्तृत्वन हीं बनतें और उभय वान् अविद्या और चैतन्य दोनों करकें संयुक्त ईश्वर तेंभी नहीं होतें प्रश्न तोशुद्ध ब्रह्मतें ही होंगे उत्तर शुद्ध तो नाम निर्विकल्पका है निर्विकल्प विषे विकल्प कभी संभव नहींहो ता प्रश्न तो हमनें जानाकि कर्मोंके करेहैं कर्त्तृत्व भोक्तृत्व उत्तर कर्मतो चैतन्य तें पृथक् ही नहीं या तें कर्मों के करेभी नहीं प्रश्न तो महाराज तुमहीं। निर्णय करकें कहो उत्तर इस चैतन्य नें आपहीं स्वाभाविक मान लिये है किसीके भी किये नहीं हैं काहेतें कि कर्त्तृत्व भोक्तृत्व वास्तव नहीं हैं स न वादी जोकर्त्तृत्व भोक्तृत्व वास्तव होते तोकिसी

तोकिसप्रकारनिवृत्तहोता

केभी मिटाये नहीं मिटते जोरज्जु विषे सर्प किसीका
वास्तव किया होता विनाही सर्प भान होवैहै यहदे
तावले^ पृ. ५८ 40 खेले चैतन्य पुरुष कों सर्प खैतेही भानहोगया कि
स्वाभाविक ही सर्प फुरै आया तुंहीं कह कि रज्जुवि आपनहि^
षे सर्प ईश्वरका किया है वा अज्ञान का कियाहै अ
थवा गुरुका कियाहै वाकर्म का किया है प्रश्न
रज्जु विषे तो सर्प जब फुराहै किपहली सच्चा सर्प दे
खा है वह सच्चा सर्प किसीका रचा हुवाहै उत्तर य
ह तेरा कहना नहीं संभव होता इस्तें केकहनेंविषे।
दो ज्ञान चाहिये हैं किसप्रकार कि रज्जु विषे सर्पका
देखनें वाला ऐसा कहै तो होवै किजैसा सर्प मैंपहि
ले देखा था वैसाही सर्प है तो दोज्ञान हुवे पहले।
सर्पका भीज्ञान और इस सर्पका भीज्ञान सो ऐसा।
तो कोई नहीं कहता जोकहै सोयह कहै कि यहस
र्प बैठाहै अनहुवा ही सर्प भान होवै है और प्रकार
भी श्रवण कर आकाश विषे जोनीलता भान होहै।
सो आकाश नें पहली नीलता कहां देखीहै इसेंक
र्तृत्व भोक्तृत्व अन हुवेही भानहोवै हैं इस्तें आपकोंक
र्ता भोक्ता मानलिया है यह यथार्थ ज्ञान निर्णय है।
जब विचार करैगा तब कर्तृत्व भोक्तृत्व कीगंध भीन
ही पावैगी जोहोते तोकहां जाते प्रश्न जोइसनें आ
पही कर्तृत्व भोक्तृत्व मान लियेहैं तोनिवृत्ति किस।
प्रकार होवैं गीकाहे तें तुम्हारे कहने विषे यहनिर्ण

प भया कि कर्मों के करने विषे तो स्वतंत्रहै परंतु भो
गने विषे तो पर तंत्रहै याते स्वतः निवृत्त कैसें होा
वैंगे अपने ही करके किसी प्रकार निवृत्त ही होते
उत्तर ज्ञान करके निवृत्त होवैंगे प्रश्न तोज्ञानकी स
हायता मानी दूसरे की उत्तर सुन वादी तूंमेरे अ
भिप्रायको नहीं समझा अरे मैंतो ज्ञान स्वरूपहीहूं
दूसरे की सहायता कैसी कहे हैं प्रश्न जोतुम नें ज्ञा
न करके निवृत्ती मांनी तो अज्ञान करके होनाभीमा
नो कर्तृत्व भोक्तृत्व का उत्तर अज्ञान तो जडहै और
ज्ञान चैतन्य है चेतन काकार्य जडतें नहीं बनता
जिस् प्रकार खोतीका कार्य थंभतें नहीं बनता प्र
श्न तोहमनें कहाथा किईश्वर नें कर्तृत्व भोक्तृत्वहो
वै है तोईश्वर को क्या तुमनें जडमानो है ईश्वरतो
सभके मत विषे चैतन्यही मानाहै यातें तुम्हारेही
कहने तें ईश्वरके करे हुवे प बनगये कर्तृत्व भोक्तृ
त्व उत्तर अरे वादी बहुत भूला तूंईश्वरके जो मा
नैंगा तो ईश्वर विषे फेर दोष आवैंगे यह एवंही
हम कह आये हैं इसतें तेरा कहना तो जब बने कि
कुछ कर्तृत्व भोक्तृत्व वास्तव पावैं जोतूं दृष्टीक
रके देखे तो कर्तृत्व भोक्तृत्व ऐसे फुरे हैं किजेसें
जल विषे तरंग सो तरंग कुछ वास्तवहैं ही नहीं
प्रश्न भला कोई इस् विषे प्रमाण कहो उत्तर स्मृ
ति प्रमाण है त्वय्यनंत महांभोधौ विश्व वीचिः
स्वभावतः उदेतु वास्तु मायातु नतेवृद्धि र्नवाक्षत

यु॰ ५९ ति: १ इसका अर्थ कहे हैं तक अनंत महान समु
द्र विषे जगत् रूपी तरंग स्वभावतें उदय हो अथ
वा लयको प्राप्त होनतैरे वृद्धि है तथा हानि है प
रंतु कोई क्षतिभी करे उत्तर अयमात्मा ब्रह्म इ
सका अर्थ कहे है यही आत्मा ब्रह्महै इति युक्ती
और प्रकार कर्तृत्व भोक्तृत्व के निर्णय की पूर्ण हुई
२३ वादी ने प्रश्न किया कि आत्मा स्वतः प्रमाण
है अथवा परतः प्रमाण है जोतुम कहोगे आ
त्मा स्वतः प्रमाण है तो तत्वमस्यादिक वाक्योंको
आद ले कर शब्दादिक प्रमाण कहे हैं वेद विषे
तो वेदको अर्थता आवे है औरजो तुम कहोगे कि
परतः प्रमाण है तोदृष्य हुवा कि और का सिद्ध
किया सिद्ध हुवा उत्तर सुन भाई आत्मा स्वतः ही
प्रमाण है काहे तें आत्माके जाननें विषे कोईकार
ण नहीं है मन और वाणी को आदिलेकर प्रश्न
इस विषे प्रमाण क्याहै उत्तर श्रुति प्रमाण है जा
तिगुण क्रिया संबंधाः शब्द प्रवृत्ति निमित्त चतुष्ट
यम् शब्द प्रवृत्ति निमित्तानां तेषां ब्रह्मण्य सत्वेन
तस्मिन् शब्दाः प्रवृतिरिति विभाव नीयम् इसका
अर्थ कहे हैं जाति और गुण और क्रिया और संबं
ध शब्दकी प्रवृत्तिके निमित्त चार है शब्दकी प्रवृ
त्तिके निमित्त तिनोंको तिस ब्रह्म विषे असत्य का
के शब्दकी अप्रवृत्ति है इस प्रकार विशेष करके।
भावना करवेको योग्य है प्रश्न जाति और गुणऔ

र क्रिया ऊैरसंबंधकों हम समझें नहीं स्पष्ट करकें क
हो प्रमाण सहित उत्तर यथा गौः शुक्ल धावतिभा
र वाहः इसका अर्थ कहैं हैं जैसें जाति कहिये गऊ
ऊैर गुण कहिये शुक्ल क्रिया कहिये धावति कि
दौडै है ऊैर संबंध कहिये भारवाहः किबोझकों
ढोवै है शब्दकी प्रवृत्तिके निमित्त येचार है ऊैरजो
तूंने कहा वेद कों अर्थता आवैहै सोवेद कों अ्या
र्थता नहीं आवै है काहेतें कि वेद सगुण परहैं
ऊैर सगुणकों ही कहैंहैं परंतु सगुण के कहने कर
के निर्गुण का लखाव होजाय है इदं शब्द करकें न
हीं कहैं हैं चंद्र शाखा न्याय करकें कहै है प्रश्न इस
विषे प्रमाण क्याहै उत्तर श्रुति प्रमाण है नेतिनेतितिनेतितेनी
तीति शेषितं यत्परं पदम् इसका अर्थ कहैं हैं य
हभी नहीं यहभीनहीं निषेध तें हुवें जोशेष र
हा सोई परं पदहै इसें वेदकों भीअर्थता नहीं
आई ऊैर आत्मा स्वतः प्रमाण सिद्ध हुवा यातें
शब्द प्रमाण मानाहै परंतु शब्दोंसे सगुण कोंनि
षेधकरकें निर्गुण शेष रहा इसें पुरुषार्थ भी सि
द्ध होगया ऊैरजो पुरुषार्थ नहीं मानों तोप्रार
ब्धके ऊपर ज्ञान रहा सो प्रारब्धतें ज्ञानहोता नहीं
तो ज्ञानकांड माराजायगा ज्ञानकांड मारेजानें
तें वेदकों अर्थता आई प्रश्न ज्ञान कांड माराजा
य तो माराजाय तो माराजाय ऊैर वेदकोंभीअ

र्थता आवे काहेतें वेदभी संघात ही है और जो तुम
पृ. कहो वेद चैतन्य है तो एक चैतन्य हुवा और एक वे
५२ द चैतन्य हुवा है ता पत्ति हुई इस्सें जो वेद कों मा
42 न तेहो तो वेद का कर्त्ता ईश्वर है ईश्वर को क्यों ना।
ही मानते उत्तर सतवादी हम ईश्वर कोंभी नहीं।
मानते और हमारे द्वैता पतिभी नहीं होती अद्वैत
हि सिद्धांत होहे और जो हम ईश्वर कों मानें तो ईश्व
र सत्य मानने विषे संपूर्ण प्रपंच कों सत्य आवेहै
काहेतें सच्चेका रचा सच्चाही हुवा चाहिये प्रश्न ईश्व
रतो ध्यानादिक व्यापार करके ब्रह्म स्वरूपही प्राप्त।
होहे तुम कैसें कपोल कल्पित अभाव करो हो
उत्तर श्रुति प्रमाण है यन्मनसा नमनुते येनाहु।
र्मनोमतं तदेव ब्रह्मत्वं विद्धि नेदं यदिद मुपासते
इत्यादि श्रुतेः इसका अर्थ कहे हैं जो मन करके न
जाना जाय और जिसकरके मन जानिये ऐसा कहें हैं
तिसही कों ब्रह्म तूं जान और जो इदं करके उपासना
करें है सो ब्रह्म नहीं है इसकों आदिले कर अनेका
श्रुतियां कहें हैं प्रश्न जो तुम ईश्वर कों नहीं मान
ते तो वेद कों क्यों मानते हो उत्तर वेद तो प्रपंच के
निषेध परहे केवल ज्ञान मात्र कों कहें हैं प्रश्न
ज्ञान मात्रही किसही प्रकार कहैं हैं कर्म उपासना
कोंभी तो कहें हैं उत्तर हम कर्म और उपासना कों।
साधन कोटि विषे मानें हैं प्रश्न इस विषे कोई दृ।

ष्टांत कहो उत्तर दृष्टांत कहैं हैं जैसें किसी पुरुषनें।
राजाके बुलावने की इच्छा करी अपनें स्थान विषे सो
प्रथम उसनें स्थानकों बुहारा और पीछे गद्दी तकिया
लगाया तब राजा आन कर बैठा है दार्ष्टांत कहैं हैं
कि मुमुक्षु रूपी पुरुषनें ज्ञान रूपी राजाके बुलाव
ने कों इच्छा करी बुद्धी रूपी स्थान विषे तहां कर्मा
के करने रूपी तो बुहारी दीनी है और उपासना रूपी
गद्दी तकिया लगाया है तब ज्ञान रूपी राजा आन।
करके बैठा इसी प्रकारण तें हम वेद कों मानते हैं
जो वेद कों नहीं मानै तो श्रवणादिक मारे जावे हैं
और श्रवणादिक विना ज्ञान होता नहीं इसें वेदकों
अर्थता आवेगी प्रश्न वादीनें कहा कि हम वेद कों
नहीं मानते वेदनें क्या प्रयोजन है उत्तर भला जो तें
वेदकों नहीं मानता तो अपनें आपकों तो मानें है
वादीने कहा कि हां आपकों तो मानें हैं सिद्धांती नें।
कहा कि भला जो आपकों मानें है तो बताव तूं कौन
है वादी नें कहा कि मैं देह हूं तब सिद्धांती नें कहा
कि देह तो पंच भूतों का विकार है जड और अनित्य
और दृश्य है फेर वादी नें कहा कि मैं इंद्रियां हूं सि। पंच
द्धांतीनें कहा कि इंद्रियां भी अपंची कृत भूतों का।
कार्य और दृश्य और जड हैं कि पंच भूतों के सतोगु।
ण अंश ते ज्ञान इंद्रियां और रजो गुण अंशतें कर्म इं।
द्रियां हुई हैं फेर वादी ने कहा कि मैं प्राण हूं तब।
सिद्धांती नें कहा कि प्राण भी पंच भूतों के समष्टि र

जोगुण अंशोंतें भये हैं और दृश्य अनित्य जड है औ
पृ. र प्राण पांच है और तूं एकहैं और प्राण कर्मो के आ
५३ धीन है तब वादी नें कहा कि में मनहूं सिद्धांतीने
43 कहा कि मनभी पंच भूतों के समष्टि सतो गुण।
अंशोंतें उत्पन्न हुवा है याहीतें दृश्य है जडहै औरअ
नित्य तब वादी बोल्या कि में आपकों नहीं जानता
कि क्याहूंम सिद्धांती नें कहा कि भला तूं आपकों
तो नहीं जानता परंतु भाव रूप कुछ्कु वस्तु तोहै तूं
अभाव रूपतो नहीं वादीनें कहाकि हांहूं तो सही।
कुछ सिद्धांती नें कहा कि नहीं जानता कहिये अज्ञा
न सोई कारण है तिस्का जाननें वाला तूंही है तेरेहि
नें विषे वेद प्रमाण है सोई कहैं हैं प्रज्ञान मानंद ब्र
ह्म अयमात्मा ब्रह्म इस्का अर्थ कहैं हैं शब्दस्पर्श
रूप रस गंधकों जो प्रकाशै सो आनंद ब्रह्म है या
ही आत्मा ब्रह्म है प्रश्न वादी नें कहा कि देखलो।
फेर वेद प्रमाण आया स्वतः प्रमाण नहीं बना।
उत्तर वेद शास्त्रादिकों का साक्षी कहैं हैं इदं करके।
तो नहीं कहता कि क्या रूपहै इतियुक्ती स्वतः प्र
माण परतः प्रमाण के निर्णयकी पूर्ण हुई २५ दृ
ष्टांत कहैं हैं एक हेडी शिकार लेकर के राजाके
पास गया राजा कों कहा किमहाराज में शिकारल्या
या हूं तुम्हारे पास आप चल करकें शिकार कों।
मारिये तब राजानें शिकार मारनें की इच्छा करी।
और रथ मंगवाया और उस रथ विषे घोडे जोडे औ

और बाण और पकड़ लीनी उस्को पूछा कि क्या शिकार है ॥ २

र सारथी को चढ़ाया फेर धनुष और बाण लेक
करके रथ विषें बैठा, और कहा है उसने कहा कि
महा राज हिरनी है और यह तुम्हारे सन्मुख है।
तब राजानें क्या किया कि धनुष के उपर चिल्ला
चढ़ा करके बाण मारा बाणके मारेनें ही हिर
नी स्वर्णकी होगई और दोबच्चे देदिये दोनों बच्चे
कूदनें लगे उस हिरनी का आश्रम जोथा सोप
थरका होगया और उन्के माता पिता का खोजनंही
पाया और जो बाण हिरनी के मारथा सोई बाण
उलटकें राजाके लगा राजाकारथ लय होगया
और वह अहेड़ी भीमर गया और राजाकी जो से
नाथी सोभी मरगई और जोदेखनें वालेथे सोस
भ मरगये इतनें में दोगुरु चेला आगये गुरुके
चरण पकड़े चेले नें और चरण पकड़नें ही गु
रु उठा और गुरुके साथ चेला भी उड़गया ऐसा
स्वप्न भया अब दार्ष्टांतिक कहें हैं अहेड़ी रूपी मु
मुक्षु व्यवसा यात्मक बुद्धी रूपी शिकार लाया
और राजारूपी नी गुरों के सन्मुख खड़ा हुवा औ
र शिकार बतावनें रूपी प्रश्न किया तब राजा
रूपी गुरु संधान रूपी रथ विषे बैठ कर के स
माधान हुवे क्योंकि संधान रूपी रथ विषे इंद्रि
यां रूपी घोड़े हैं और बुद्धी रूपी सारथी है औरम
~~न रूपी घोड़े हैं और बुद्धी रूपी सारथी है~~ औरमा

न रूपी बाग डोरहै और विषयस्थानी मार्ग है जब
शु. गुरु रूपी राजा नें वेद रूपी धनुष हाथ विषै लिया
उपनिषद् दर्शट रूपी [illegible] रूपी विला वज्र याभैवि
44 चार रूपी बाण और युक्ति रूपी भाल है जिस वि
षै तत्व ज्ञान रूपी बल लगाय कर कै बाण मारा
हिरनी रूपी व्यवसा यात्मक बुद्धी कों बाण मारा।
नेस्थानी उपदेश किया उपदेश करतें ही कंचनरू
पी शुद्ध होगई ज्ञान और वैराग्य रूपी दोपुत्र भये।
सो पुत्र आनंद रूपकहे हैं उसका आश्रम बुद्धिका
जो अंतः करणथा सो पत्थरस्थानी क्या भया कि
जिस विषै संकल्प विकल्प नहीं फुरना और इंद्रियां
प्राण मन और देह रूपी कुटुंब बुद्धि कासभ मरग
या और अविद्या रूपी माता और विचार रूपी पितादो
नोंका ठिकाना नहीं लगा कि दोनों का अभाव हो
गया जोहोते तो पावते जो विचार रूपी बाण अव
सायात्मक बुद्धिकै माराथा सोईबाण गुरु रूपीरा
स्य ^ जा विषै लैहोगया और राजाके ^लै होनें स्थानी स
माधि स्थित होगये गुरु रूपी किगुरु यथा स्थित
होगये और अहेडे रूपी अहंकार ममत्वका मरग
याकि जिसको जीव कहैं हैं और राजा रूपी गुरोंरू
की सेना स्थानी श्रवण मनन निदि ध्यासन रू
पी सेना लय होगई और शिकारके देखनें वाले
स्थानी अन्य शास्त्र वादी सभभाग गये किउनका

सिद्धांत नहीं बनां इस विचार विषे दोगुरु शिष्या
रूपी विकल्प आयेथे सो शिष्य नें प्रश्न रूपी हा
थ करके ब्रह्म रूपी श्रद्धा करी सोई चरण पक
डे सोगुरु शिष्यके उत्तर रूपी दोनों केभव हार
लय होगये ऐसा ब्यवहार अज्ञान रूपी स्वप्न वि
षे होवे है प्रश्न बुद्धि तो अनेक विकल्पों करके
अनेक होवें हैं एक बुद्धि का प्रमाण कहां है उत्त
र गीता विषे भगवान् का वचन प्रमाण है सोईक
हैं हैं व्यवसा यात्मिका बुद्धि रेकेह कुरु नंदन बा
हुशाखा ह्यनंताश्च बुद्धयो व्यवसा यिनां इसका अ
र्थ कहैं हैं हे अर्जुन व्यव सायात्मक बुद्धि मुद्दस
तो गुणी इस जगत् विषे एकही है और पुरुषार्थ
रहित पुरुषों की बहुत अनंत शाखा है जिनकी
अनंत बुद्धियां हैं प्रश्न ज्ञानी पुरुषके संचात रूपी
सामग्री काहेतें उदय हुई और इस विषे प्रमाण क्याहै
उत्तर विवेकी के संचित कर्म ज्ञान रूपी अग्नि करके
नाश होगये और तिनके संग ज्ञानके पूर्वकाल के इ
स देह विषे किये हुवे भी नाश होगये और ज्ञानतें
उत्तर कालके कर्म स्पर्श करतेंही नहीं ज्ञानी कों का
हे ते किसंचित कर्म अज्ञान के आश्रय थे और क्रि
यमाण कर्म अहंकार के आश्रय होवें हैं सो अहं
कार कानाश होगया इसें स्पर्श नहीं करते और

पृ॰ ५५

प्रारब्ध कर्म देहके आश्रय है इसतें ज्ञानीकी दृष्टि विषे मिथ्या भासै है सो गुरुमुख के प्रश्न करने तें संशय उदय होगया और प्रमाणभी श्रवण कर ज्ञानिनो ब्रह्मात्म ज्ञाने जातेतेन बाधि तस्यापि संचित कर्मणः प्रारब्ध फलस्य कर्मणो अबाधित्वं अत एव ज्ञानिन स्तु प्रारब्ध वेग वशात् देहादि प्रति भासते इसका अर्थ कहे हैं ज्ञानियों को ब्रह्मात्म ज्ञान प्राप्त होतसेतें तिस ज्ञान करके नाश हुवे भी संचितकर्म प्रारब्ध फल कर्मोंका अबाधित्व है याहीतें ज्ञानीको तपुनः प्रारब्ध वेगके वशतें देहादिक भान होहै प्रश्न तोज्ञानी के कुछ अपेक्षा रही है शिष्यको उपदेश करे है उत्तर ज्ञानी कोतो कुछभी अपेक्षा नहीं है शिष्यके प्रश्नको श्रवण करके उपदेश करै है प्रश्न कोई दृष्टांत कहो तो तुम्हारा मानैं उत्तर दृष्टांत कहै हैं जैसें नगारेको बोलन की अपेक्षा नाहीं है शब्द करके रहित है परंतु जोकोई डंका मारै तो शब्द होवै दार्ष्टांत कहै है तैसैही नगारे रूपी ज्ञानी पुरुष अपेक्षा रहित स्थित है परंतु कोई मुमुक्षु रूपी पुरुष प्रश्न रूपी डंका मारै तो ज्ञानी रूपी नगारे तें शब्द होवै है विना प्रश्न केतो निर्विकारहीं स्थित है और जो तैंनें प्रमाण पूछाथा सोभी श्रवण कर कठ वली विषे कहा है श्रुति प्रमाण

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु बुद्धिं तु सार
थिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च इंद्रियाणि हयानाहु नो
र्विषयांस्तेषु गोचरान् आत्मेंद्रिय मनो युक्तं भो
क्तेत्याहुर्मनीषिणः इति श्रुतेः इसका अर्थ कहते हैं
आत्मा कों रथी जान तु पुनः शरीर कों ही रथ जा
न तु पुनः बुद्धि कों सारथी जान और मन कों बागडो
र जान इंद्रियों कों घोडे जान और विषय रूपी मा
र्ग जान शरीर और इंद्रियां और मन इनों करके सहित
आत्मा कों संसारी कहते हैं विवेकी इस प्रकार श्रुति
कहते है इति अहेडी के दृष्टांत विषे तत्वज्ञान के उ
पदेश के निर्णय की युक्ती समाप्त हुई २५ एक पु
रुषने प्रश्न किया कि महाराज प्रारब्ध बडी है कि
पुरुषार्थ और सगुण की उपासना बडी है कि निर्गु
ण की उत्तर उनों नें कहा कि तेरे प्रश्नो उत्तर कों तो
हम जानें नहीं परंतु तेनें एक वार्ता कहते हैं तुं बु
द्धिमान होय तो समझ लीजो सोई वार्ता कहते हैं
दृष्टांत एक किसान वन विषे हल जोतेथा सो
खेत विषे लाल निकस आये उन लालों कों दे
ख करके किसान नें जाना कि इस खेत विषे अ
ग्न लग गया ऐसा जान करके हाथ लगा कर दे
खा तो कहा कि अग्नि तो नहीं है परंतु पथर हैं
सोई निकाल के खेत तें बाहर फें केथा इतने में
कोई जोहरी आगया उसने देखा कि लाल तो बडे

पृ.
५०
47

उत्तम हैं परंतु लालों वाला मूढ है और जोहरीनें
पूछा कि तुक्या करै हैं तब किसान ने कहा
कि खेतमें पत्थर हैं तिनकों गेरूं हूं बाहर तब उ
स जोहरी ने कहा कि मेंभी इनमें से लेलूं कुछ
तब किसान ने कहा कि उठाय लेवो मनमानते त
ब जोहरी नें कुछ लाल लेकर किसी राजाकी भे
ट दीनें वह राजा लालों कों देखके बहुत प्रस
न्न हुवा और कहा ऐसे लाल औरभी ल्याव तब
जोहरी नें कहा किमहा राज एक महान् राजा
है तिस्के मंदिर विषे ऐसे अनेक लाल हैं तिसेंमें
मांग लाऊंगा जोवह देवेगा तो तब राजानें कहा
कि ऐसे लालों करके संपन्न है राजा कोई तिस्कें में
अपनी पुत्रीदेऊंगा तब जोहरी नें कहाकि महा
राज जोतुम संबंध करो तो मुझे वचन प्रसाद दे
देयो तब राजानें प्रतिज्ञा करी किऐसें पुरुष कों
में अवश्य पुत्री देऊंगा तब जोहरी उस किसान
के पास आया और उस्का हल जोतनां छुडा दि
या फिर अपनें घर विषें लेगया औरलाल बहुत
से समेट लिये फिर तिस्कीसान कों विद्या पढाई
और और अच्छे वस्त्रऔर भूषण पहराये और हाथी
घोडे पर चढणां सिखाया और राजाके मिलनें
लायक बनाय करके बहुतसी सेनां साथलीनी
और बरात कों चढाय करके लालों कों लुटावता

हुवा उस राजाके पास पहुंचा तब उस राजानें विधिपू
र्वक आनंद सतीनामा अपनी पुत्री दीनी तिस पीछे
विवाहके तीन दिनो जब अतीत भये तब चतुर्थी क
र्म के अर्थ राजा महलमें बुलाया तब जोहरीनें कि
सान नृपी राजाको समझाया कि तूं किसीनें बोलि
या मत औरजो कुछ करै सो विचारके करियो ता
ब सुखकों पावेगा तब वह किसान नाम राजा म
हल विषे गया एक सखी साथ हुई अनेक प्रकार
के चित्राम बनें हैं जिस महल विषे और अनेक ।
सामग्री करके संयुक्त हैं तिनकों देखता हुवा जावे
था तिस चित्राम विषे एकस्थानों में एक रूप चा
लता हुवा बनाया था तिसकों देख करके मंदमुस
काया यह वार्त्ता सखीनें मनमें रख के और जाना ।
कियह नीचे कुलकाहै सोई राजाकी पुत्रीनें कह
दिया और किसान नाम राजा चित्र शाला विषेजा
करके बैठा तब राजाकी पुत्री संपूर्ण शृंगार करके
और बतर मुख दीपक प्रज्वलित है जिस विषे ऐ
सा थाल लेकर के सन्मुख आई तिसको देखकर
के किसान नाम राजाने ऐसा वचन कहा है कि
हां मुझे भक्षण किया ऐसा कह करके छेज को
पकड करके नीचे लटक गया तब वह राजाकी
पुत्री थाल मूंधा पटकके चली इतनेमें इस पुरु ।
षके विचार उपजा कियह तोमेरी स्त्रीहै ऐसा स

मरु करके उपर कों चढ आया और तिसस्त्रीकों प
कड कर के अंगमें लगाय लीनी जब सबकों प्रा
यु. ५० म हुवा अब दार्ष्टांति कहे हैं किजीव रूपी किसा
न संसार रूपी बन विषे हल बाहनें कर्म लगाक
रनें कर्म करते हुवें तिसपुरुष कों संस्कार रूपी ला
ल बहुत से कर्म भूमी विषे उदय कों प्राप्त हुवे।
तिनों को देख कर कें ऐसा जाना कि अग्नि के ला
गने स्थानी कर्मोंका लोप होगया फेर देखनेस्था
नी विचार करके समझा कि कर्मोंका तो लोपन
हीं हुवा परंतु पत्थर रूपी विघ्न उदय हुये हैं सो
वह पुरुष लाल रूपी संस्कारों कों कर्म भूमी में
नें बाहर गेरनें रूपी तिरस्कार करत भया प्रश्न क
र्मों नें तो संस्कार महान् हैं तिनका तिरस्कार के
से किया उत्तर सत भाई कर्महीं संस्कार की सार
क्या जाणें काहे तें अज्ञानोपहित चैतन्य है और
कर्म अज्ञान का कार्य हैं इसें इतने में गुरु रूपी
जोहरी आया तिसें देखा इसके संस्कार रूपी ला
लों तो उत्तम रूपी उजल हैं परंतु इसकी बुद्धी तो
मूढ है ऐसा जानकें पूछा कि तू क्या करें है इस
पूछने में चित्तकी स्थिति कर्मों विषे है किनंही
ऐसा निर्णय करे है तबकिसान नेंकहा किखेता
में पत्थर हैं तिनकों गेरूं हूं बाहर इसकरके या
ह कहा किसान रूपी जीवनें कर्मों विषे विघ्न उ

दे हुवे हैं तिनकों निवर्त करूं हूं तब जौहरी रूपी
गुरू नें कहा कि मैं भी इन्में नें लैने रूपी ग्रहण क
रूं तब किसान रूपी कर्मेष्टी नें कहा कि तुम उ
ठावनें रूपी मेरे विघ्नों कों निवर्त करो तब जौं
हरी रूपी गुरूनें कुछ कलाल रूपी संस्कार लेनें
रूपी समझ करकें किसी राजाकी भेट देनें रूपी।
ईश्वर कों सुनाये तब ईश्वर रूपी राजा लाल रूपी
संस्कारों कों देखने रूपी समझके बहुत प्रसन्न।
हुवा और कहा कि ऐसे लाल श्रोर भी लाव इस
कर के यह कहा कि ऐसे संस्कार और भी बना ओ
तब जौंहरी रूपी गुरूनें कहा कि हे महाराज रू
पी ईश्वर एक महान रूपी राजा कर्मेष्टी है तिस
के मंदिर रूपी कर्म भूमी विषे ऐसे अनेक ला
ल रूपी संस्कार हैं तिस्में मैं मांग लाऊंगा जो
वह देवैगा तो इस्करके यह कहा कि तिस्के संस्का
र जो और भी आपके सन्मुख करूंगा जो इस्की आ
पकी इछा होगी तो कि इछारूपी पुरुषार्थ करे
गा तो तब राजा रूपी ईश्वरने कहा कि ऐसे लालों
रूपी संस्कारों करके जो संपन्न है राजा रूपी कर्मे
ष्टी तिस्कों मैं अपनी पुत्री रूपी मुझ परमेश्वरकों
विषय करने वाली अवस्था यात्मका बुद्धि देऊंगा
तब जौं हरी रूपी गुरूने कहा कि हे महा राज रू
पी ईश्वर जो तुम संबंध करनें रूपी उसकों भक्ति

देवो तो गुरुकों वचन प्रसाद रूपी आज्ञा देवो तब ई
यु० श्वर रूपी राजानें प्रतिज्ञा के करने रूपी निश्चै किया
५८ कि ऐसे मुमुक्षु रूपी पुरुषकों अवश्य व्यवसायात्मि
क रूपी पुत्री हूंगा प्रश्न इसप्रकार ईश्वरकी प्रतिज्ञाक
हां कही है ईश्वरतो आप्तकाम है उत्तर गीताविषै
कहा है सोई कहै हैं येतु सर्वाणि कर्माणि मयि सं
न्यस्य मत्पराः अनन्येनैव योगेन मांध्यायंत उपास
ते १ तेषा महं समुद्धर्त्ता मृत्यु संसार सागरात् भवा
मि नचिरात् पार्थ मय्या वेशित चेतसां २ ॥इसकाअ
र्थ कहै हैं मुझ परमेश्वर विषै संपूर्ण कर्मो का स
मर्पण करके मेराध्यान कर्ते हुवें तथा पुनः अनन्य
योग करके कि एकांत भक्ति करके जो उपासना।
करे है कहे हुवे प्रकार करके मुझ विषै स्थित कि
याहै चित्त जिनोंने तिनों कों मृत्यु करके सहित सं
सार सागरतें में भले प्रकार उद्धार कर्ता शीघ्र क
र्केहोऊंगा इस प्रकार प्रतिज्ञा करी है ईश्वरनें त
ब जोहरि रूपी गुरु उस किसान रूपी उस कर्मा।
ष्ठी केपास आया ओर उस्के हल जोतने रूपी क
र्मको छुडाया फेर अपनें घर रूपी विचार विषैले
जावनें रूपी लगाया ओर बहुत मेल्लालों रूपी सं
स्कारों कों समेट कर्के फेर तिस किसान रूपीक
र्मेष्टी कों विद्या पढावने रूपी श्रवण कराया ओ
र अच्छे वस्त्र ओर भूषण रूपी नवधा भक्ति करा।

और हाथी और घोडे के चढावनें रूपी भक्तिका य
श दिखाया और राजा रूपी ईश्वर के मिलनें रू
लायक॥ पी सन्मुख के बनावनें रूपी स्थित किया औरब
हुत सी सेना रूपी विनयता और शीलकों आदि
लेकर संग लीनी और बरात के चढावनें रूपी मु
मुक्षुता करकें सहित लालों लुटाने रूपी वैराग्य
करकें संपन्न ऐसे मुमुक्षु कों राजा रूपी ईश्वरके
पास पहुंचा वनें रूपी सन्मुख किया तब ईश्वर
रूपी राजानें विधिपूर्वक रूपी संप्रदायक पूर्वक
अपनी अनंद मती नामा व्यवसा यात्मिक रूपी
पुत्री दीनी तिस पीछें व्यवा हके तीन दिन जब
बीत गये इसकरकें यह कहा कि व्यवसा यात्मक
बुद्धिके सन्मुख होने करकें श्रवण और मनन औरनि
दिध्यासन मुमुक्षु के तीनों भये तब चतुर्थी कर्म
रूपी साक्षात्कार के अर्थ राज महल रूपी मुक्ति
विषे बुलाया तब जौहरी रूपी गुरूनें राजा रू
पी मुमुक्षु कों समझाया कि उपदेश किया और
कहाकि तू किसीनें बोलियो मत इसकरकें यहां
कहा कि स्वरूप अनिर्वच नीय है और तथा वच
न भी कहना योग्य नहीं है परंतु वचन विनांतो
कछू कार्य बनता नहीं ऐसा कहा कहाहै जैसातु
म कहो हो हमारे तो सास्त्र प्रमाण है सोई कहें
हैं सर्व संग्रह कर्त्तव्य कोकाले फल दीयते आ

र्थ कहै हैं संपूर्ण संग्रह करने को योग्य है कोई प
पु० दार्थ किसी काल विषे फलदेवे है उत्तर मन वा
५९ दी हमारे श्रुति प्रमाण है सोई कहै हैं नानुध्या
यान् बहून् शब्दान् वाचो विग्लापनं हि तत्‌ इस
का अर्थ कहै हैं वेदांत शास्त्र ते अन्य बहु शास्त्रो
को मत कर निश्चे करके तिन अन्य शास्त्रोंनें वाणी
का वृथा प्रलाप होवेगा और कहाथा जोकछ्छ क
रै सो विचार करके करिये इस करके यह कहा
कि चेतन्य मात्रका ही विचार करियो तब आनं
द रूपी सवेको प्राप्त होवेगा तब वह मुमुक्षु रू
पी राजा महल रूपी मुक्ति विषे गया और एक
विचारात्मिक रूपी साखी साथ हुई और अनेक
प्रकार के अध्यारोपों को देख ने रूपी विचारता
हुवा चलने रूपी वृत्तिको बढावे था तिसचित्रा
म विषे एक स्थान में एक कूप चलता हुवा बा
नायाथा तिसका देख करके मंद मुसकाया इसक
के यह कहाकि आध्या रोपविषे किसे कर्मके फ
लकीयाद आई तिसके विचारनें करके ऐसी फुरीचि
तमें कि यह कर्मो काही फलहै इसते प्रसन्न हुआ
वा तब यह वार्ता रूपी व्यहार विचारात्मिक साखी
नें याद रखने रूपी ग्रहण करा औरजाना कि य
ह मुमुक्षु कलके नीचे स्थानी कर्म फल को चा
हे है ऐसा वृत्ति विषे निश्चय हुवा सोई राजाकी।

पुत्री रूपी वसायात्मिक बुद्धि विषे कहने रूपी।
स्थित किया और मुमुक्षू रूपी राजा चित्रशाला
रूपी मुक्ति मंदिर विषे बैठनें स्थानी स्थित भया
और यह विचारा कि ऐसा सुख उपासनां नें होवै
है मुक्ति रूपी चित्र शाला ब्रह्मलोक कों कहि।
ये काहेतें चार प्रकार की मुक्ति उपासनां विषे कही
है सालोक सारूप सामीप सायुज्य सो ऐसा श्राश्र
म ब्रह्मलोक कों कहिहै काहे ते तत्व ज्ञानीका
होवै है प्रश्न अच्छी कयोल कल्पित स्तुति बनाई
श्राये चारकों सभी उत्तम कहै है विना प्रमाण केह
मतो नहीं मानें उत्तर स्तनवादी मनुस्मृति विषे।
कहाहै सोई कहै हैं वेद वेदार्थ तत्वज्ञो यत्रकु
त्राश्रमे वसन् इहैव लोके तिष्ठन् ब्रह्म लोकाय
कल्पते १ इसका अर्थ कहै हैं वेद श्रोर वेदकाजो
श्रर्थ तिसके तात्पर्य कों जानने वाला पुरुष जि
स्किसी श्राश्रम विषे वसता हुवा इसही लोकवि
षे स्थित होत संतें ब्रह्मलोक के श्रर्थ जोग्यहै
तब राजाकी पुत्री रूपी व्यवसाया त्मिक बुद्धिसें
एणी श्रृंगार रूपी शुद्धिता करके संयुक्त चतसुख
दीपक प्रज्वलित रूपी चारों वेदका सार ज्ञानहै
ज्ञान कांड रूपी थाल विषे तिसकरके संपन्न स
न्मुख श्रावने रूपी उदय हुई तिस्को देख करके
राजा रूपी मुमुक्षू नें ऐसा वचन कहाकि हाय ९

मुझे भक्षण किया इस करके यह कहा किमें बुद्धि
यु. का दृष्य हुवा जो दृष्य होहै सोई परिणामी हो
प. वेहै यातें अप सिद्धांत हुवा ऐसा कह करके छजे
50 कों पकड करके नीचेकों लटक गया इस करके।
यह अर्थ हुवा किमें मुक्ति रूपी महल तें नीचे।
कों गिरनें लगा कि मुझे मुक्ति नहीं संभव होवे-
गी और छज्जे रूपी अभाना वरण कों पकड रहा
है अभाना वरण कहिये आपकों परोक्ष जाना।
नां तब वह राजाकी पुत्री रूपी अव सायात्मिक
बुद्धि थाल मूथा गेरनें रूपी वेद के सारकों त्याग
ती भई और चलनें रूपी मुख फेर गई इसकरके अ
ज्ञान सिद्ध हुवा सोई कहै हैं मामहं नजानामि
इसका अर्थ कहै हैं मेंआप कों नहीं जानता इसी
काल विषे ममत्व रूपी राजाके विचारके उपज
नें रूपी ज्ञान उदय हुवा और जानां कि यह मेरी
स्त्री है इस करके यह अर्थ हुवा कि मुझ विषे।
यह बुद्धी लय होने वाली है ऐसी समझ रूपी
विचार करके उपरकों चढ आवने रूपी ज्ञानात्म
क स्थित हुवा और अवसायात्मक बुद्धि रूपीस्त्री
कों अंग तें लगाव ने रूपी एकाता कों प्राप्त का
री नीचेकों लटकनां सोई अज्ञान है औरस्त्रीकों
थालके पटक नें करके अंधकार का होना सोई
अज्ञान विषे बुद्धि कालय होना है जब आपा

प्रकाश रूप उदय हुवा तिस विषे संपूर्ण सामिग्रीा
करकैं सहित अविद्या लय होगई एक स्वयं प्रकाश
आत्मा ही सिद्ध हुवा तब सबकी प्राप्ति रूपी पर
मानंद ही स्थित हुवा प्रश्न इसका प्रमाण कहां है
उत्तर स्मृति विषे कहा है सोई कहैं हैं स्थूल प्रपं
चं सर्व मपि स्थूल भूतेषु विलाप्य तद्व्यति रेकेण
तन्नास्तीति निश्चित्य स्थूल भूतानि समष्टि व्यष्टि
स्थूल शरीरं च सूक्ष्म भूतेषु विलाप्य तत्रापि पृ
थिवी मप्सु विलाप्य आपस्तेज सि तेजो वायौ वा
यु माकाशे आकाश मज्ञाने ऽज्ञाने चिन्मात्रे विला
पयेत् इसका अर्थ कहैं हैं स्थूल प्रपंच संपूर्णा
को इस थूल भूतों विषे लय करकैं तिन पंच भू
तों तें भिन्न करकैं सोप्रपंच नहीं है ऐसा निश्चया
करकैं स्थूल भूतों कों चपुनः समष्टि व्यष्टि सूक्ष्म
शरीर कों सूक्ष्म भूतों विषे लय करकैं तिन् विषे
पृथिवी कों जलों विषे लय करकैं जलों कों तेजा
विषे तेजकों वायु विषे वायुकों आकाश विषो
आकाश कों अज्ञान विषे और अज्ञान कों चेता
न्यमात्र विषे विशेष करकैं लय करै इसका युक्तिवा
य कहै है वेद विषे प्रसिद्ध कहै है जैसें तैनें एका
मैनेभी ^ वार्त्ता कही थी तैसी ^ प्रश्नका उत्तर समझ नेकी तू
जान प्रश्न हेभगवन् प्रारब्ध और पुरुषार्थ औरा
सगुण निर्गुणकी उपासना इसका निर्णय आप

पु॰
५१
51

आपने कहा तो सही परंतु में नहीं समझा तब प्र सिद्ध करकें कहा उत्तर हे सावधान मति श्रवण कर प्रारब्ध का फल तो लालों के निकलने तें ले करकें राजाकी पुत्री थाल लेकरकें आई तिस पर्यंत कहा और पुरुषार्थ काफल छत्तेतें ऊपर चढनें करकें अ गनें लगावनां मात्र कहा जोपुरुषार्थ नहीं कर्ता। तो माराही जाता और सगुण उपासना का फल ह ल रूपी कर्मके छुडाव ने तें लेकरकें व्यव साया। त्मिक रूपी स्त्रीके सन्मुख होने पर्यंत कहा और निर्गुण उपासनां का फल छत्तेतें ऊपर चढनें कों ले करकें वृत्ति के लय होनें पर्यंत कहा है इसा विषे पूर्व भाग कों आख्या शेष जान लेनां औरउ त्तर भाग कों अपवाद जांन लेनां इति प्रारब्ध पु रुषार्थ सगुण निर्गुण के निर्णय विषे ज्ञान स्व रूपकी प्राप्तिकी युक्ति संपूर्ण हुई २६ औरतत्त्वब्रह्म औएक पुरुषथा तिस्कों इसजगत नें दुःखहुवा सो उसने गुरोंके पास जाके प्रार्थना करी किहे प्रभोऐ सी कृपा करो मेरा जगत रूपी दुःख किसी प्रका र निवृत्ति होवे तब गुरोंने विचार किया कि जगत रूपी दुःखनें इसके किस द्वारे प्रवेश किया जोया। इंद्रिय द्वारेतें प्रवेश किया होगा तोतीर्थ करने क रके निवृत्ति होजायगा सोउसकों आज्ञा दीनी कि तूं तीर्थ यात्रा करतेरा दुःख निवृत्ति होजायगा त

व वह पुरुष संपूर्ण तीर्थ यात्रा करके आया फे
र तिसको गुरोंनें पूछा कि तेरा जगत रूपी दुःखनि
वृत्त हूवा वा नहीं हूवा तब उस पुरुषनें कहा किम
हाराज मैंतो बडा दुःखी हूं मेरा दुःखतो नहीं निवृ
त्त हूवा तब गुरोंनें विचार किया कि पादेंद्रिय द्वारे
जगत नें नहीं प्रवेश कियाथा फेर गुरोंनें उसकों
कहा कि तूं दान कर दान करनें तें तेरा दुःख निवृ
त्त होजायगा तब उसने सर्वदान किया फेर गुरोंने
उसें पूछा कि तेरा दुःखनिवृत्त हूवा तब उसपुरु
षने कहा कि तेरा दुःख नहीं निवृत्त हूवा तब गुरों
ने जाना कि पाणिंद्रिय द्वारेभी जगत नें नहीं प्रवे
श कियाथा तब गुरोंनें इसपुरुष कों कहा कि जा
प किया कर कदाचिद्वाणी द्वारे प्रवेश कियाहोगा
तो निवृत्ति होजायगा तब उसने जप किया फिर
गुरोंनें पूछा कितेरा दुःख निवृत्त हूवा तब उसनें
कहा महा राज मेराज मेरा दुःखनहीं निवृत्त हूवा
तब गुरोंनें विचार किया कि वाणी द्वारे जगतनें न
हीं प्रवेश किया फेर उसें कहा कि ध्यानकर कदा
पि नेत्र द्वारे प्रवेश कियाहोगा तोनिवृत्त होजाय
गा सोई इस पुरुषनें संपूर्ण देवताओंका ध्यानकि
या गुरोंनें पूछा कितेरादुःख निवृत्त होगया तबउ
स पुरुषनें कहा कि मेरादुःख नहीं निवृत्त हूवातब

तब गुरोंनें निश्चय किया नेत्रद्वारे जगत् नें नहीं प्रवे
श किया था फेर इसपुरुष कौं कहाकि कृच्छ्र चंद्रा
यु॰ यणादिक व्रतकर कदापि रसना द्वारै जगत् नें नहीं
५२ प्रवेश किया था फेर इस पुरुषकौं कहाकि कृच्छ्र चं
58 द्रा यणादिक व्रत कर कदापिरसना द्वारै प्रवेश किय
होगा तौनिवृत्त होजायगा सोउस पुरुषनें कृच्छ्र
चंद्रायणादिक व्रत किये फेर गुरोंने पूछाकि तेरा
दुःख निवृत्त हुवा उसने कहाकि मेरा दुःख नहीं
निवृत्त हुवा तब गुरोंने विचार किया कि रसनाद्वा
रै जगत नै नहीं प्रवेशकिया फेरउस पुरुष कौं कहा
कि तूं पंचाग्नि तपकरकदापि त्वचाद्वारै प्रवेशकिया होगा
तौ निवृत्त होजायगा तबउस पुरुषनें पंचाग्नि तपकिया
फिरगुरोंनें पूछाकि तेरादुःख निवृत्तहुवा उसपुरुषनें
कहाकि महाराज मेराज मेरा दुःखनहीं निवृत्त हूवा फेर
गुरोंनें निश्चय किया त्वचा द्वारैभी जगतनैनहीं प्रवेशकि
या तब गुरोंनें कहाकि अष्टांग योग कर कि कदापि घ्रा
ण प्राणरूपस्य द्वारै जगतनै प्रवेशकियाहोगातौ निवर्त
होजायगा फेरउस पुरुषनें अष्टांग योगकिया तबगुरों
नें पूछाकि तेरादुःखनिवर्त हूवा उसनें कहाकि महारा
ज मेरादुःख नहीं निवर्त हूवा तबगुरोंनें विचारकियाकि
इन तीनौंद्वार करकैभी जगत नेंनहीं प्रवेशकियाहै तब
गुरोंने ऐसानिश्चय किया किकर्णेंद्रिय द्वारै जगतनैं प्र
वेशकियाहै यातै उसपुरुषने कहाकि तूंश्रवणकर ते
रा दुःख निवृत्त होजायगा फेरउसकौं श्रवणकरवा।
या [illegible] करवाया

क्या श्रवण करवाया श्रुति स्मृति युक्ति दृष्टांत दा
ष्टांत फेर उस पुरुष कों पूछा कि तेरा दुःख निवा
र्ण हुवा तब उस पुरुषनें कहा कि महाराज आप
की कृपा तें अबतो में परमानंदकों प्राप्त हुवा प्र
श्न वादीका उत्तर जोकहा कि जिस द्वारे प्रवेश कि
या है तिसी द्वारे होके निकल जायेहे इसमें प्रमाण
क्या है उत्तर इसमें शब्द प्रमाण है तत्वमस्यादि क्वा
क्य और एक दृष्टांत कहेंहें जैसें एक घरका एक
द्वारथा और खिडकियां बहुतथी सोउस घर विषे
ऊंठ ने प्रवेश किया सो उस कों जोघरतें बाहर क
रिये तो जिस द्वारे प्रवेश किया है उसी द्वारे नि
कसेगा और द्वारे नहीं निकसेगा काहे तें औरद्वा
र छोटेहें इस प्रकार दृष्टांत जान लेना प्रश्न इस तु
म्हारे कहनें विषें श्रवण इंद्री बडी हुई सो श्रवण
इंद्री किस प्रकार बडी हुई उत्तर सुन भाई अइसप्र
कार बडी है कि वैकुंठ और कैलास ब्रह्म लोकादि
क लोकोंका अनुभव करेहे और किसी इंद्रीकीसा
मै नहीं है प्रश्न तुम्हु कहते होकि श्रवण इंद्रीद्वा
रे जगत नें प्रवेश कियाहे इसविषे प्रमाण क्या
उत्तर दृष्टांत रूप युक्ति प्रमाण है सोई कहेंहें कि
एक राजाथा तिसनें अपने मंत्री प्रति कहा किकेता
न पुरुषों की बुद्धि स्वतः ही विचित्र होती है ता

श्रवणइंद्री

म ^ बनाये नैंही विचित्र होती है राजा नैं कहा कि हम कैसें जानैं कि बनाये ^

ब मंत्रीनें कहाकि महाराज बुद्धि स्वतः विचित्र।
पृ. नहीं होवै है बनाये नेंही विचित्र होवै है फिर।
५३ राजानें कहा कि नहीं स्वतःही विचित्र होवै है फि
र मंत्री नें कहाकि बनाये नें बनें हैं तब मंत्रीनें क
53 हा कि महाराज आप आपना कंवर बी सवर्षकों।
हमें दीजिये तब राजानें कहा किले जावो सोई मं
त्री राजाके कंवरकों लेगया औरएकांत भवरे में ब
ठा दिया किकिसी पशु पक्ष्यादि कोंका भी शब्द।
नहीं सुना जाय और दोस्त्री उस्की टहलकों रखदी
नी और उन स्त्रियों कों कहा कि तुम दोनों एकही
समें नजाना भिन्न भिन्न जानो और खान पानकी
सुद्ध लेती रहनो और मुखतें बोल नो नहीं और।
बाहर निकसनें नदेनो सोइस ही प्रकार उस ल
डकेकों बीस वर्ष बीत गये किसीका शब्द नहीं
सुनाया एक किवाड के खुलनें का शब्दही सुनो
तब एक दिन मंत्री उस लडके के पास गया सोमं
त्री कों देखकैं लडका डरा तब मंत्री उस्का हाथ
पडकै भवरे के बाहर लाया तबचांद नो देखकै।
नेत्र मूंदने लगा औरभी डरा फेर उस्कों राजाके पा
स लेगया और कहा कि येतुम्हारे पिता हैं इनकों
नमस्कार करो तब उस लडके नें कहा कि हूं फेर
मंत्री नें कहा किये तुम्हारे पिता हैं इनकी गोदमें

जांवेदो फेर लड़केने कहा कि हूं तब राजाने कहा। कि क्यावार्ता है तब मंत्रीने कहा कि महाराज आ पका कंवर है आप कहते थे केतान् पुरुषों की बुद्धि स्वतः विचित्र होती है सो इस्का तो बड़ा भा ग्यहै कि आपके ग्रहमें जन्म हुवा फेरभी इस्की बुद्धि स्वतः विचित्र नहीं हुई कि एक किवाड़ के। खुलने का हूं शद्ब सुना है सोई यादहै तब राजा नें कहा सत्यहै स्वतः विचित्र तो नहीं होती परंतु अब इस्का क्या उपाय है फेर मंत्री नें कहा कि। महाराज फेर मुझें वी सवर्ष कों देवो तवराजा नें कहा लेजावो सोई मंत्री उस लड़के कों लेगया ओर चार पंडित बदा दिये उसके पढावनें कों ओर कहाकि इस्कों षटशास्त्र कों आदले के राजनीत ओर चातुर्यता ओर संपूर्ण बोली ओर व्यवहार सब सिखा के बुद्धिवान् बनावो तब पंडितोंनें उसकोंम हान् पंडित बनाया तब मंत्री लड़के कों राजाके पास लेगया ओर राजा पुत्र तेमिल के बहुत प्रस न्न हुवा ओर अंक भर लिया फेर राजाने मंत्रीनें कहा कि तेरा बचन सत्यहै ओर तूं स्तुति केयोग्य है इसही प्रकार दृष्टांत कोंभी युक्ती रूप जानली। जो इसका क्रम यह है कि राजा स्थानी ममत्त्व ओ र मंत्री स्थानी गुरू ओर पुत्र रूपी जीव कहा है प्रथम राजा रूपी ममत्त्व ओर मंत्री रूपी गुरू ऐसा

कहने विषे विरुद्ध आवे है गुरुका पद नीचा कहा
१- और शिष्यका पद ऊंचा कहा उत्तर वेद विषे कहाहै
५५ राजा जनक और शुक देवजीका प्रसंग गृहस्थ आ
श्रमी राजा जनक नीचे पद वाला तिस्कों गुरु क
हाहै और शुकदेव जी संन्यासी थे चौथे आश्रम वा
ले तिनकों शिष्य कहाहै प्रश्न वेद में शब्द प्रमाण
कहे हैं तिस विषे मुख्य करकें शब्दही कों माना
हो इसमें प्रमाण क्या उत्तर कहाहै नैष्कर्म सिद्धि
विषे सोई कहैं हैं नित्य मुक्त त्व विज्ञानं वाक्याद्भ
वति नान्य तः वाक्यार्थ स्यापि विज्ञानं पदार्था
स्मृति पूर्वकं १ अन्वय व्यति रेकाभ्यां पदार्थस्मा
र्यते ध्रुवं एवं निर्दुःख मात्मान मक्रियं प्रतिप
द्यते २ इन दोनों का अर्थ कहैं हैं नित्य मुक्तहूं।
ऐसा ज्ञान तत्वमस्यादिक वाक्य ते होवै है वाक्य
अर्थ का ज्ञान करकें निश्चय करकें पदार्थ की स्मृ
ति पूर्वक होय १ अन्वय और व्यतिरे क दोनों क
रकें पद का अर्थ निश्चै करकें स्मरण करिये है
कहे इवे प्रकार करके दुःख रहित आत्मा अक्रि
य कों प्राप्त होवै है वार्तिक कार नें भी कहाहै
सोई कहैं हैं तच्छत्वा दविद्या आत्मत्वा द्वोय रू
पिणः शब्द शक्ते रचिंत्य त्वा द्विद्मस्तं मोह हान
तः इसका अर्थ कहैं हैं तिस अविद्या कों तुच्छ
होने ते आत्मा कों ज्ञान स्वरूप तें शब्द शक्तिकी

अविंसतैं अज्ञान के नाश होने तें तिस आत्म स्वरूप
कौं जानें हैं प्रश्न यज्ञ दानादि अनेक साधन हैं मोक्ष
के तिनकौं त्याग करकै एक विचार ही कौं मुख्य क
कैं मानोहो इसका प्रमाण कहां है उत्तर श्रीशंकर
स्वामी जीनें आत्म बोध विषै कहा है सोई कहैं हैं
बोधोहि साधने भ्योहि साक्षान्मोक्षैक साधनं पाक
स्य वह्निवज्ज्ञानं विना मोक्षोन सिध्यति २ इसका अ
र्थ कहैं हैं तपमंत्र कर्म योगादिक अनेक साधनों
तैं निश्चय करकै ज्ञान साक्षान्मोक्षका एकही सा
धनहै यहां दृष्टांत कहैं हैं जैसें पाकके अनेकसा
धन होनेतैं भी एक अग्निही साधन है तिसीकी
न्याईं ज्ञानकेविना मोक्ष नहीं सिद्ध होवै है २ इति
श्रवण द्वारै ज्ञान होनेके निर्णयकी युक्ति पूर्ण हुई
अथ युक्ति लिखते दृष्टांत किसी पुरुषकौं सर्पनें
काटा सोपुरुष सर्पके विष करकै व्याकुल भया औ
र गारुडके निकट गया और गारुडतें प्रार्थना करी
कि मुझकौं सर्पनें काटाहै तिसके विष करके अति
व्याकुल हूं मेरे विषकौं निवारण करे तब उसगा
रुडनें उस पुरुषकौं झाडादिया उसके झाडदेनें क
रकै उस पुरुषकौं कछु क्षणमात्र सुख हुवा फि
र वैसाही दुःखहोगया तब दूसरे गारुडके निक
ट गया और उस प्रकार प्रार्थनाकरी तब दूसरे।

पु० ५१
55

गारडु नेंभी उस प्रकार का झाड़ा दिया फिर उसपुरुष
कों कुछ सुख हूवा फिर वैसाही दुःखहोगया त
ब वह पुरुष तीसरे गारडु के निकट गया उसही
प्रकार प्रार्थनां करी उसके भीझाड़ा देनें नें कुछसु
खहुवा फिर वैसाही दुःखहोगया तबचौथे गारडु
के पास जाकर के उस पुरुषनें प्रार्थनां करी किम
हाराज मुझकों सर्पनेंकाटा है सोमेरे विष चढ्याहै
और मैंब्याकुल हूं करुणा करकें मेरे दुःखकों नि
वारण करो तब उसपुरुषनें कहा कि सर्प इस बांवी वि
षैहै तब उस चौथे गारुडनें एक सर कंडाले करची
रा दोभाग करे और एकमंत्र पढके उसकी बांबी
विषै डालदिया वह सर कंडा उस सर्पकों पकड
कर के बाहर लेआया तब उस गारुडूनें उस सा
र्पकों कहाकि तूंनें इस पुरुषकों क्यों काटा तब
उस सर्पनें कहा कि यह पुरुष मुझकों छेड़ताथा
फिर उस गारुडनें उस सर्पकों कहा कि इसकोंला
ग करकें इसका विषतूं खेंच ले इसही प्रकार सर्प
नें जहां काटाथा वहीं लगकरकें विषखेंच लि
या और सर्प चलागया अबदार्ष्टांत कहै हैं जीवरू
पी पुरुषकों मनरूपी सर्पनें काटा देहादिकके
अभ्यास रूपी विषकर के व्याकुलभया और कर्मकों
डके आचार्य रूपी गारडुके निकट गया औरप्रा

र्थना करी कि महाराज मेरा जन्म मरण रूपी दुः
ख निवारण करो तव उस कर्मकांड के आचा
र्य रूपी गारुडनें झाडा रूपी उपदेश किया
तिस्के कर्म रूपी झाडे करकें थोडे सुखस्थानी
स्वर्गादिक के भोग कों भोग करकें फिर दुःखकों प्रा
प्त हुवा फिर उपासना के आचार्य रूपी दूसरे गारु
डके निकट गया और प्रार्थना करी उसनें भी उसा
ही प्रकार झाडा रूपी उप देश किया तिसके उ
पासना रूपी झाडे करके थोडे सुखस्थानी वै
कुंठादिक सुखकों भोग करकें फिर दुःख कोंप्रा
प्त भया फिर पतंजल के आचार्य स्थानी तीसरे
गारुड के निकट गया और उसही प्रकार प्रार्थना
करी तिस्के अष्टांग योग रूपी झाडे करकें थोडे
सुख स्थानी ब्रह्मांड के स्थित रहने पर्यंत सुखभो
ग करकें फिरदुःखकों प्राप्त भया तव चौथे गार
ड स्थानी ज्ञान कांडके आचार्य निकट गया और
प्रार्थना करी कि महा राज मुझकों मन रूपी स
र्पनें काटा है और तिस्के देहा दिक आध्यास रू
पी विष कर के अति व्याप्त है मेरे दुःखकों नि
वारण करो तव उस आचार्य रूपी चौथे गारुड
नें पुछा कि मन रूपी सर्प कहा है तव उस जी
व रूपी पुरुषनें कहा कि विषय रूपी वांवी विषे
है तव उस आचार्य रूपी गारुडनें सरकंडा स्था

नी तत्व मसि श्रुतिके चीरनें रूपी तत्व पदकों भि
यु. न्न किया औेर मंत्र स्यांनी इस महा वाक्य के अर्थ
५६ करके डाल देनें स्यांनी उपदेश किया क्याकि तो
ब्रह्म त्वं असि इस्का अर्थ करे हैं सोब्रह्म तूंहै सो
वह सर कंडे स्यांनी श्रुति औेर तिस्के अर्थस्यांनी
मंत्र करकें उस मन रूपी सर्पकों विषय रूपी बांबी
नें बाहर निकाला तब उस ज्ञान कांड के आचा-
र्य रूपी गारडुनें मन रूपी सर्पते पुछने स्यांनी ।
कहा कि इस पुरुषकों काटनें स्यांनी विषयों वि
षे चंचलता करकें कों दुःख दिया है तब उस म
न रूपी सर्पनें कहाकि यह जीव रूपी पुरुष मेरे
कों छेडनें स्यांनी प्रेरना करे है तब उस आचार्य
नें कहा कि इसकों लगनें स्यांनी अपने स्वरूप वि
षे एक ताकी प्राप्त होजांवे औेर विष खेंचनें स्यां
नी इस जीव रूपी पुरुषकों देहादिक अध्यास नें
निवारण कर इसही प्रकार मन रूपी सर्पनें कि
या औेर चले जांनें स्यांनी लयहोगया तब वह
पुरुष अच्छे होनें स्यांनी परमानंद कों प्राप्त भया
कि परमानंद स्वरूप विषे स्थित भया प्रश्न इस
विषे प्रमाण क्याहै उत्तर श्रुति प्रमाण है अहंक
र्तेत्यहमान महा कृष्णा हि दंशितः नाहं कर्ते ति
विश्वासा मृतं पीत्वा सुखी भव १ इस्का अर्थ क
हे है में कर्ता हुं ऐसा जो अभिमान सोई भया

महा काला सर्प जिसनें काटा तूं में कर्ता नहीं
ऐसे विश्वास रूपी ः मृत कों पीकर के सुखी
हो १ इति युक्ति सर्प काटने के दृष्टांत विषे ज्ञान
होनेंकी पूर्ण हुई १८ अथ युक्ति लिखनें दृष्टा
न कहें हैं एक सांडथा सो गवों के संग चरता फि
रा करे और संतान भी उत्पन्न करे बहुत मग्न रहा
करे एक दिनों चरता चरता किसी के खेत विषे
जा वड़ा उस पुरुषनें लाठीनें पीटा और सींगदो
नों तोड़ गेरे और भार कसके वस करके हलनें
बांध दिया और तृण और जल थोड़ा भोजन दिया
और जब उस सांड़का सार बल निकल गया तब
पांच कोस तक सीमथी उसकों पांच कोश का
बाहर निकास आया वह सांड अति प्रसन्न हुआ
वा विचरे है दार्ष्टांति कहें हैं अहंकार रूपी सांड
है इंद्रियों रूपी गवोंके संग शब्दादिक विषयोंकों
भोगता फिरे है और रागद्वेष रूपी संतानभी उत्प-
न्न करेहै इन विषयोंही विषे जानें रूपी सन्मुख
होकर के ब्रह्म विद्या रूपी चारेकों चरनें लगा
उस ज्ञानी पुरुष नें विचार रूपी लाठी नें पीटा
और पाप पुण्य रूपी दोनों सींग तोड़गेरे और वै
राग्य रूपी भार कसनें वेद रूपी हलनें बांधदि
या और श्रवण मनन निदिध्यासन रूपी चारा
और जलदी या तब उसका अभिमान रूपी ब

ल निवृत्त भया तब पांच कोशरूपी अन्नमयादिक
यु. पांच कोशों नें बाहर निकाल दिया सो वह सांडरू
५७ पी पुरुष परमानंद हुवा विचरै है प्रश्न उस विवे
57 की पुरुषनें पंच कोशोंतें विलक्षण तो कर दिया प
रंतु वैराग्य रूपी जेवडा उसके संगहीं छोडा अथ
वा खोल दिया ~~जोकहो कि वैराग्य रूपी जेवडा उ~~
~~सके संगहीं छोडा अथवा खोलदिया~~ जोकहो
कि वैराग्य रूपी जेवडेनें बंधरह्या है तो मुक्तिक्या
हुई काहेतें वैराग्य भी बंधन ही है किनें महार
ह्या है इसतें और ज्ञानीकी दशा अनेमी कहीहै
और जो कहो कि वैराग रूपी बंधन तोडदिया
का तो स्वेचारी वर्तैगा चाहैगा जैसा अनर्थ करैगा
औरभी कहै हैं व्यवहार में तो सांडके छोडनें
वाले जेवडा बैलका खोल लिया करै हैं सो
तुमनें कैसा वरनन किया उत्तर सुन भाई वैरा
ग्य रूपी जेवडा खोल लिया है और जोतू क
है कि वैराग्य विनां विपरीत वर्तैगा तो अभि
मानरूपी बलतो उसके हैही नहीं विपरीत का
हेतें वर्तैगा जिनें साधनों नें ज्ञान भया है तो सा
धन स्वरूप सूतही रहै हैं इसका विशेष निर्णय
ज्ञानी और अज्ञानी के व्यवहारके निर्णय की यु
क्ति विषे कह्या है देखलीजि यो देखले वारी व्य
व हार विषे भी छूट गया प्रश्न केवल पंचको

षोंके विचार तें ज्ञानहो वे इसका प्रमाण कहो उ
त्तर स्मृति विषे कहाहै असंग आत्म स्वरूप काजो
ज्ञान तिस्के विचार के प्रकार कहैं हैं वपुस्तषा दि
भिः कोशै र्युक्तं युक्त्या वघात तः आत्मान मंत
रे शुद्धं विविच्या त्तंडुलं यथा १ इसका अर्थ कहैं
हैं अन्न मयादि क पंच कोशों करकै सं युक्तश्रं
तर शुद्ध आत्मा कों युक्ति पूर्वक विचार करके
जाननें कों योग्य है जैसें तुषादि करकें संयुक्त चा
वल कों युक्ति कर के छुडने तें इति सांडके दृ
ष्टांत विषे ज्ञान होनेकी युक्ति पूर्ण हुई २९ ॐ
अथ युक्ति लिख्यते ॥ॐ किसी राजाके चित्त वि
षै वैराग्य उपजा है तिस राजानें किसी महात्मा
के निकट जाय करकें प्रार्थना करी किमहाराज
ऐसी कृपा करो जोसंसार रूपी दुःखमेरा निवृत्त
होय सोतिस महात्मा नैं कहाकि तूंही आपने
ऊपर आप कृपा करो तब तेरा दुःख निवृत्त हो।
यगा तबतिस राजानें कहाकि महाराज आप
यह क्या कहोहो में आपने ऊपर किस प्रकार कृ।
पा करूं तब उस महात्मानैं कहाकि यह संपूर्ण
सामिग्री जोतें नें संग्रह करी है इसही तें तेरे दुःख
हैजो तू इसकेंात्याग देवै तो अवही सुखीहो जाय।
यही आपनें ऊपर कृपा करनी है पदार्थका त्याग

मन करके होताहै ऐसा मन बनाउ जो पदार्थका
पृ. त्याग करै और दुःखतें छुडावै प्रमाण इस्का प्रमा
५८ ण कहां कहाहै उत्तर गीता विषे कहा है श्रीभग
58 वान नें उद्धरे दात्मना त्मानं नात्मान मवसा दयेत
आत्मैव ह्यात्मनो बंधु रात्मैव रिपु रात्मनः १ इस्का
अर्थ कहै हैं हे विचार युक्त मन करके आत्माका सं
सार तें उद्धार करै तु पुनः नहीं नीची गति कों ले
जाय इसीकारण तें मन संगतें उपराम हुवा आ
त्माका उपकार कहै ओर जो विषयों विषे आसक्त
है मन सो आत्मा का शत्रु है १ इसतें विषयोंकी
आशक्ति के त्याग सेती मोक्त होहै और विषयाश
क्तितें बंध ऐसा जानकर रागादि क स्वभाव कों
अवश्य त्यागदे तब वह राजा यह वार्ता सुन क
रके आपने स्थान विषे गया उसने खड्ग लेकर संपू
र्ण हाथी घोडे ऊंट बैल सामिग्री थी तिनों कों जे
बडे काटदिये ओर द्रव्यके भंडार कों आदि लेकर
के संपूर्ण सामिग्री लुटाइ दीनी और सारी सेना
कों विदा कर दिया अकेला राजा ही रहा राजानें
इस अर्थ त्याग किया था किमेरा दुःख निवारण
होगा सोराजा का दुःख निवृत्त नहीं भया तबफि
र उस महात्मा के निकट गया ओर जाकर प्रार्थना
करी कि हेभगवन् मेरादुःख नहीं वर्तभया मेरेतो नि
दुःख ओर अधिक होगया मेंने संपूर्ण सामिग्रीका

त्याग कियाभी परंतु दुःख करके आकुलहूं तबा।
गुरों ने कहाकि तैंनें त्याग नहीं किया जैसें को।
ई दुखी पुरुष वैद्य के निकट गया उसवैद्य नेंऔ।
षधि बताई और फिर कह गया कि मेरा दुःखा।
नहीं निवर्त भया तब वैद्यनें जाना कि औषधी।
नहीं खोई ओर जो खोई तो बिपरीत करके खोई
तो नहीं खोई बरा बर है सोई ऐसी गति भई रा
जा तेरी तैंनें त्याग नहीं किया करता तो निश्चे
करकै सुख कों प्राप्त होता तब राजानें कहाकि
भगवन् बल करके देखो मैं ने सामिग्रीका। संपूर्ण
त्याग कर दियाहै तब गुरु शिष्यके स्थान परग
ये ओर कहाकि तू सच्चाहै त्यागतो तैं ने किया।
है परंतु बाह्य त्याग कियाहै आंतरीय त्याग न
हीं किया तेरे यह संपूर्ण सामि ग्री एक तिलव
त बर स्थान विषे वड गई जिस सामिग्री के रह
नें का कोशों विषे स्थान था सोसंपूर्ण सामिग्री
अति सूक्ष्म देश विषे प्रवेश कर गई कहो विशे।
ष दुःख होय कि नहीं होवे जहां ऐसीभीड भई
है तब राजानें फेर प्रार्थना करी कि महाराज
मैं क्या करूं तबगुरोंनें कहा कि यह गंगाहै इस
विषें गोता मारजा ओर उसके परले किनारे जा।
कर के वृक्ष जोदीखे है तिनों के नीचे जाय बैठ।

तेरा संपूर्ण दुःख निवृत्त होजाय गा वहां इस दुः
पु. ख का बल नहीं चलता फिर इधर कों झांकक
५५ रकै मुखकों फेर लीजो तबदुःख का असंता भा
व होजाय गा ऐसे दार्ष्टांत कहे हैं कि जीव रूपी रा
जानें वैराग्यके उत्पन्न होने तें दुःखकी निवृत्तिके
अर्थ गुरोंकी आज्ञा लेकर कै पदार्थों के त्याग क
नेके अर्थ वर्ण आश्रम के धर्म रूपी जोजेव डे
थे सोकाट दिये और जीव रूपी राजानें सेना के
त्यागनें स्थानी संपूर्ण जाग्र की सामिग्री का त्या
ग करदिया जब जीवरूपी राजाकों पदार्थोंका
स्मरण हुवा तब दुःख हुवा इसमें गुरों नें तो जा
ग्रत विषे उपदेश किया था परंतु शिष्य कें ज्ञा
न नहीं भया .फिर गुरों नें प्रश्न किया कि भग
वन मेरा संसार रूपी दुःख नहीं निवृत्त भया त
ब गुरोंनें कहा कि तेंनें त्यागही नहीं किया जो
तूं त्याग करता तो शेष तूंही परमानंद रहता इ
सी पर गुरोंने वैद्य कादृष्टांत भी कहा सोदार्ष्टां
त राजानें वतों प्रश्न कि महाराज दुःख क्यों न
हीं निवृत्त भया तुम चलकर देख लो मैंनें सर्व
त्याग किया है तब गुरोंनें आकर कै देख्या क्या
कि तिसके विचार की परीक्ष्या लीनी तो अधिष्ठा
नका ज्ञान शिष्यकों नहीं भया उत्तर तब गुरों

ने कहा कि यह संपूर्ण सामिग्री तेरे सूक्ष्म स्थान
रूपी चित्त विषे वड गई है ~~तिसको तिल प्रमाण~~
~~कहाथा सो सामिग्री विषे वड गई है~~ तिसको।
तिल प्रमाण कहा था सो सामिग्री अब सूक्ष्म
स्थान विषे प्रवेश कर गई है फिर दुःख किसका
रन होवे तब जीव रूपी राजाने प्रार्थना करीकि
भगवान् मेरा दुःख निवारण करो इसकरके॥
गु^ क्या निश्चे भया कि ^रों ने स्वप्न विषे उपदेश किय
फिरभी शिष्य कै ज्ञान नहीं भया प्रश्न भलाभा
ई स्वप्न विषे किस प्रकार उपदेश किया उत्तर सु
न भाई स्वप्न विषे इस प्रकार उपदेश किया कि।
जीव रूपी राजानैं जाग्रत की सामिग्री संपूर्णत्या
ग दीनी तब चित्त विषे बाहर तै निकस कै सामि
ग्री जाय पडी सोई स्वप्न भया और सूक्ष्म स्थानजो
कहाथा सोपुरीत तीना^कंठ की कही थी उसैं बा। ड़ी^
ह तिल बराबर चित्त प्रवेश कर गया वहां जोसा
मिग्री देखी सो स्वप्नका स्थानथा तो स्वप्न विषे।
भीशिष्य कों स्वयं ज्योतिका उपदेश किया क्याकि
तेरे भीतर जो सामिग्री प्रवेश कर गई है तिसका
द्रष्टा तूही है यही स्वयं ज्योति का उप देश कि।
या शिष्यका जोदुःख निवृत्त नहीं भया इसैं
यही प्रतीति भई कि ज्ञान नहीं भया तबगुरों।

नै सषुप्ति रूपी गंगाजी विषे गोता लगानें का उपदे
प्र. श किया सोयह कहाथा कि सषुप्तिहीं के सावकें
६: तूं अपना स्वरूप नहीं मानता कि यही स्वह आ प्र
60 नंद है और गंगाके पारजो बृत्त कहेथे सोतुर्या वा
स्था का उपदेश किया है और इधर को झांकनेस्यें
नी यह कहा कि तीनों अवस्था का तूं साक्षी है तु
र्या और मुख्यके फेरनें स्यांनी यह कहा कि तुहीं
तुर्या तीत है निर्विकल्प समाधि स्थित तुर्यातलक
तो सवि कल्प समाधि कही और तुर्या तीत करकें
निर्वि कल्प समाधि का उपदेश किया प्रश्न इसपर प्र
माण कहो उत्तर श्रुति प्रमाण है जाग्रत स्वप्न सु
षुप्त्यादि प्रपंचं यत्प्रकाशते तद्ब्रह्मा हमिति ज्ञात्वा
सर्व बंधैः प्रमुच्यते अस्यार्थः जाग्रत और स्वप्न औ
र सुषुप्त्यादि क प्रपंच कों जो प्रकाशे सोई ब्रह्म
मेंहूं ऐसा ज्ञान करकें संपूर्ण में और मेरा इन बंध
नों तें निवर्त होयहै प्रश्न प्रभुसवि कल्प औरनि
र्वि कल्प समाधि किसप्रकार सिद्ध होय है इसकों प्रमा
ण कहो उत्तर स्मृति विषे कहा है सोई कहैं हैं सत्व
रजस्तमो गुणात्मिका शांति घोर मूढ वृत्तयः त
त्र शांतिः सात्व सौदार्थ्यं वैराग्य चचौरस्त कामलो
क्रोध भैस्तृसा मूढः मोहो भ्रांतिः एतासां वृत्ती नां हृद
ये यत्स्फुरणं तद्दृश्यं तस्य द्रष्टा साक्षी अनुस्यूतोह

ह्मिति दृश्यानु विद्ध अंतरीय सवि कल्पक समा
धिः १ वृत्तीनां त्रिगुणात्मक त्वादसंगोह्मिति श
ब्दानु विद्ध अंतरीय सवि कल्पक इति चोच्यते २
अथ बाह्य सूर्यादि कस्य द्रष्टा साक्षी अनुस्यूतो ह
मिति दृश्यानु विद्ध सविकल्पक समाधिः ४ सूर्या
दिकाद संगोह्मिति शब्दानु विद्धः ५ एतदुभय
विकल्पास्फुरण निर्विकल्प समाधिः ६ इस्का
अर्थ कहैं हैं सत्व रज तम त्रिगुणात्मिक शांतिघो
र मूढ वृत्तियां हैं तहां शांति वृत्ति विषे सत्व ऊरउ
दारता वपुनः वैराग्य है तपुनः घोर वृत्ति विषेका
म ऊर लोभ क्रोध ऊर तृस्ना है मूढ वृत्ति विषे मो
ह ऊर भ्रांती है इन वृत्तियोंका हृदय विषे जो फुरना
सो दृश्य है तिस्का द्रष्टा साक्षी अनुस्यूत मैं हूं इस्प्र
कार दृश्या नुविद्ध अंतरकी सविकल्प समाधि है
१ वृत्तियों कों त्रिगुणा त्मकत्वतें असंगमें हूं इस प्र
कार शब्दानु विद्ध भीतर की सविकल्प समाधि है
२ हृदय विषे इन दोनों विकल्पोंका जो नहीं फुर
ना सो असंप्रज्ञात समाधि है तिसीकों निर्वि का
ल्प वपुनः ऐसा कहै हैं ३ अब बाहरकी समाधि
यां कहै हैं सूर्यादिक का द्रष्टा साक्षी अनुस्यूत मैं
इस्प्रकार दृश्यानु विद्ध सवि कल्प समाधि है ४
सूर्यादिक ते असंग मैं इस्प्रकार शब्दानु विद्ध सा

माधि ५ इन दोनों विकल्पों के नहीं फुरने तें निर्विक
यु० ल्प समाधि कहे हैं इति निषेध और विधि द्वारे ज्ञान
६१ के होनेकी युक्ति पूर्ण हुई ३० ॐसच्चिदानंद ब्रह्मणे
नमः अथ युक्ति लिख्यते ॐवादीनें प्रश्न कियाकि
ज्ञानी की अवस्था ऐसी है जैसी बालक की अवस्था
तिसकें शुभ और अशुभका अनुसंधान नहीं है जैसें
एक राजाका बालक था उसनें राजाकी गोद विषे
बैठ कर राजाकी मुछ पकड लीनी तब राजानें क्रो
ध किया कि इस बालक कों मार डालो तब मंत्री
नें कहा और पंडितोंनें कहा और पंडितों ने कहा कि
महाराज यह बात अयुक्तहै यह बालक है इसको
आपके महत्व का अनुसंधान नहीं है और शुभअ
शुभकों नहीं जानता राजानें कहाकि येहम कैसें
जानें तब मंत्री सर्पकों मंगाय करके सर्प्पवालो
नें कहा कि इस सर्पका मुख पकडके इसबालक
के आगे छोडदे उस नें सर्प्पकों छोडदिया बाल
कनें सर्प कों पकड लिया तब राजा कों निश्चै भ
ई कि बालक कों शुभ अशुभ का अनुसंधान न
हीं है सोऐसी अवस्था ज्ञानीकी है उत्तर सिद्धां
तीका कि ऐसी अवस्था ज्ञानीकी नहीं है यह
तो अवस्था मूढ की है और ज्ञानी का अंतःक
रण कैसाकि मदादा शिलाकी न्यांई है और आ

ज्ञानीका अंतःकरण कैसा है किसुद्ध दर्पण कीनाई

याई है कि दर्पण के सन्मुख जो पदार्थ करिये

तिस विषे सोई भान होता है और मुदा दशिलके

सन्मुख जो पदार्थ करिये तिस मुदा दाशिल वि

षे केवल एक मोर ही भान होता है इसही प्रका

र ज्ञानी के सन्मुख जितना कुछ पदार्थ है सोई

संपूर्ण एक चैतन्य मात्र ही भानहोय है और इस

रा विकल्प नहीं उठता और अज्ञानी जोहैं॰ तिस

पदार्थ केही आकार उसकी हृती होजाय है क्या

कि नानात्व जगत ही उसको भान होहै चैतन्य

विषे दृष्टी नहींहै प्रश्न जोतुम ज्ञान कहतेहो कि

ज्ञानीकों एक चैतन्यमात्र ही भान होताहै इस

रा विकल्प नहीं होता तौकहो शिष्यकों अध्या

रोप और अपवाद लेकर कै उपदेश किस प्रका

र कौरैहैंगो उत्तर सुन भाई ज्ञानी के इसरा विकल्प

नहीं होता केवल शिष्य के विकल्प कों लेकरकै

उपदेश कौरैहै किस प्रकार कि जैसें माताजोहै

बालक जब कुछ उतपात करता है तब उसकोंहा

ऊ बतावै है सोसुन माताकी दृष्टी विषे हाऊती

नकाल विषेभी नहीं है केवल कथन मात्रही है

इसही प्रकार दार्ष्टांत समझ लेनां प्रश्न जोपंच

भूत का शरीर अज्ञानी का सोई ज्ञानी काहै

॰तिसकोंजोसन्मु
खपदार्थआवैहैं।

यु॰ ६२ तो ज्ञानीकों जो अधिक मांनते हो इस विषे क्यावि
शेषता है उत्तर सुन भाई जैसें कोई मृतक शरीरा
चेष्टा करनें कों लगै तो तिसका आश्चर्य बडा होता
है इस ही प्रकार ज्ञांनी का जो शरीर सो मृतक श
रीर की न्यांई चर्म देह है परंतु कैसा है मृतक शरी
र कि मरे हूवों कों जिवावे है सो मरे हूवे कौन हैं
कि जे आपनें स्वरूपतें विमुख है उनकों जिवावा
तो क्याहै कि सन्मुख करके स्वरूप की प्राप्ती कर
वावे हैं इसतें मृतक शरीर में यह अधिक ता रहीहै
और जो जीता होता सोक्या करता प्रश्न तुम कहा
ते हो कि आनंद स्वरूप तें विमुख है सोमरे हूवेहैं
इस विषे प्रमाण क्याहै उत्तर श्रुति प्रमाण है सो
ई कहैं हैं मृत्योः समृत्यु माप्नोति यइह नानेव प
श्यति इसका अर्थ कहैं हैं जोपुरुष आत्मा विषे
नाना त्वदेखे है सोपुरुष मरण तें मरण हीकों ।
प्राप्त होय है सोज्ञांनी का मृतक शरीर कैसा है
कि मृदंग की न्यांई मृतक भी है और निर्वि कल्प
भीहै और लोगों कों अपने शब्द रूपी उत्तर कर
कें विशेष आनंद देवे है परंत और के प्रश्न सुर्णेबि
जावने तें इति युक्ति प्रदाद शिल और दर्शन स्या
नी ज्ञांनी और अज्ञानीके निर्णय की एर्ण हुई ३१
ॐतत्सत् ब्रह्मणे नमः ॐतीन सौदागर सन्नेचा

दे लेकरके सोदागरी के गयेथे एकतो तिहाई का साझी था ओर एक आधें का साझीथा ओर एका नवें भागका सांझीया सो आपसमें कुछ्छ विगड होनें नें वन विषे लगे अपनें विभाग भांटनें सोविभाग बांट सका नहीं काहे तें कि सत्रांके आधेभी नहीं होसक्के ओर नवां विभाग भी नहीं होसक्का विना घोडे के छेदन कियें इसे शोचमें थे इतनेमें एक चतपुरुष घोडे पर सवार आया ओर उनोंतें पूछाकि तुमको क्या शोच है उनों ने सभ वार्ता कही तब उसपुरुषनें कहा कि हम तुम्हारे विभाग भिन्न भिन्न करदेवेंगे तब उस पुरुषने अपनाघोडा सभा मिलाया दिया ओर तिहाई वाले को छह घोडे दिये वह बहुत प्रसन्न होकर लेगया ओर ओर आधे विभाग वालेको आधेके नो घोडे देदिये बहुत प्रसन्न होकर लेगया फेर नवें विभाग वालेको दो घोडे दे दिये वहभी प्रसन्न होकर के लेगया सोउस पुरुष नें सर्व सत्रां घोडें उन तीनोंको बांट करकें ओर झगडा निवृत करकें ओरतीनों को प्रसन्न करकें अपनाघोडा लेगया अब दार्ष्टांत कहेंहें विश्वतेजस प्राज्ञ नामो तीन सोदागर हैं तिनों ने सत्रः घोडे स्थानी स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर तीनों का संघात होना यही झगडा भया ओर विभाग नहीं होसकनें रूपी वन तीनों के नकीया इतने विषे चतपुरुषा

स्थानी विवेकी पुरुष आये तिस पुरुषनें पूछाकि
पृ. तुम्हारे उपद्रव रूपी झगड़ा काहै तब उन तीनोंनें
६३ कहा कि हमारे संघात रूपी घोड़े इकटे होरहे हैं
हमें ऐसी बुद्धी विचारात्मक नहीं जोइनका विभा
63 ग करें और विन विभाग दुःख हमारा जाता नहीं
है तब उस पुरुषनें कहाकि तुम्हारे झगड़े रूपी दुः
खको हम निवृत्ति करदेवैं गे फेर उस ज्ञानी पुरुष
नें उनोंके संघात रूपी सत्रह घोड़ों विषे अमें अठा
रवें घोड़े स्थानी चिदानंद कों मिलाय करकें उनोंके
विभाग इस प्रकार कर दिये प्रश्न विभाग किस प्रा
कार किये मेरी समझ विषे नहीं आया येतो स्थूल
सूक्ष्म कारण शरीर हैं घोड़ोंका तो भाग बनगया
हम कैसें जानें कि इनो विषे स्थूल शरी कौनसा है
और सूक्ष्म शरीर कौनसा और कारण शरीर कौनसा
इसकों भिन्न भिन्न कहो उत्तर इस संघात विषे यह ।
=१ २ ३ जन्म मृत्ति वृर्धना स्थूल शरीर षड्विकार वान् प्रसिद्ध है सोतिहाई भा
परिणाम क्षीण ग वाले विश्व नामां जीवकों भिन्न करदिया और तब
नाश ६ अब यवका सूक्ष्म शरीर पुराण विषे प्रसिद्धहै सोतै
जस नामा जीवकों भिन्न करदिया और कारण शरी
र विषे एक अज्ञाना कार वृत्ति और सुखाकार वृत्ति
ये दोहैं सोप्राज्ञ नामां जीव कों भिन्न करदिया इसप्र
कार संघातका विभाग करदिया और अठार वें घोड़े
स्थानी आपो जो चिदानंद रूपी घोड़ाथा सो लेलिया

प्रश्न शून्यवादी का यह तो भला सिद्धांत किया अभाव ही सिद्ध भया उत्तर अभाव सिद्ध नहीं भया चैतन्य ही सिद्ध भया है काहे ते हमारे एक जीव वाद है एक चैतन्य है प्रश्न इस विषे प्रमाण क्या उत्तर इस विषे महा वाक्य प्रमाण है सोई कहे हैं तत्वमसि इसका अर्थ कहे हैं सो ब्रह्म तूं हैं प्रश्न द्वैत वादी का इस श्रुति का अर्थ इस प्रकार नहीं हैं जिस प्रकार तुमने कहा सिद्धांती कहे हैं तुम कहो किस प्रकार होय है इसका इह अर्थ है कि तत्वमसि नाम तिसका तूं है सिद्धांती कहे हैं तिसका तूं कौन है द्वैतवादी कहे हैं कि तिसका मै दास हूं सिद्धांती कहे हैं तूं उसका अंश है अथवा उस ते भिन्न है जो तूं कहे कि मैं अंश हूं तो तुमारा परमेश्वर अखंड नहीं हुवा और अंश अंशीभाव हुवा इसको आदि लेकर के अनेक दोष आवे हैं और जो तूं कहें कि मै भिन्न हूं तो चैतन्य ते भिन्न जड है और तुम्हारा चैतन्य सर्व व्यापी नहीं भया और जड का और चैतन्य का संबंध क्या तुम मिथ्या ही व्यवहार सिद्ध करो हो कि तिसका तूं है तिसका और तीसरा तो संबंध कुछ भी नहीं संभव होता इसको आद लेकर अनेक दोष हैं प्रश्न क्या तुम्हारे विचार करके

प्रयोजन है ब्रह्मका उपासिक ब्रह्मतें अत्यंत भिन्न
पृ. होनेसें तें भी ब्रह्म करकै साथ एकता कों प्राप्तही
६५ होगा अउर मनुष्य धर्म करकै युक्त पुरुषकों उपा
64 सना करकै सत् रूप ब्रह्मकी प्राप्ति नहीं होयहै
इस विचार विषे कोई भी अपने स्वभाव कों अतिक्र
मकी स्यांई नंहीं त्यागै है इसकारण तें अरुजो
अभि निवेश मात्र करकै ब्रह्मकी प्राप्ती ही कल्प
ना करीहै तौजीव के स्वरूप की हानी होय है
अत्यंत विरुद्ध स्वभाव वाले दोनों की एकता के
असंभव ते प्राप्त तो स्वरूप हानि विषे प्रमाणक
हो अउर श्रुति सार समुच्चय विषे कहाहै सोक
हैं है यदि देह भृदेष सदात्म कर्ता प्राप्तिष्यति
वैसदुपासन या नजहास्यति रूप मसौहिनि जो
यत ऐक्य मति नैभवत्युभयोः १ इस्काअर्थ कहैं।
हैं जोयह देहधारी जीव ब्रह्मकी उपासना कर
के ब्रह्मताकों प्राप्त होगया तोयह जीव अपने म
नुष्य स्वभावकों क्यानहिं त्यागैगा त्यागैहीगाइ
सें दोनोंके विलक्षण विरुद्ध स्वभावतें ऐक्यमा
ति नहिं होय है इसें जीवकों ब्रह्मत्वकी प्रा
प्ति उपासनाका फल नहिं कहिवे कों योग्यहै १
१ सोई कहाहै आचार्यों करकै नात्मदस्य द्रुवैत्र
स्मान्नात्म इत्यहि चिंत येत् अन्यस्यान्यात्म भावे

ह्रिनाशमस्य भवेभवे दिति १ इसका अर्थ कहै हैं
अन्य वस्तु अन्य नहिं होइ इसीकारण तें अन्यव
स्तु हो करके अन्यका चिंत वन् अन्यरूप होतें
सेती तिसका नाश निश्चे होय है सो एवं पती क
है है दृष्टांत सहित मनुष्य स्वभाव के नाश होने
सेती और स्वरूपके नाश विनांभी ब्रह्मकी प्राप्ति फ
ल होयगा सोई शास्त्र प्रमाण कहै हैं रस विद्ध
मयः प्रकृतिं सहजां प्रविहाय यथा कनक ता।
मियात् पुरुषोपि तथा सदुपासन या प्रति पत्
स्यत् एव सदात्मक तां १ इसका अर्थ कहै हैं रस
विद्धलोहा अपने नाशके अंतर करके अपनी प्रकृति
लोहताको त्याग करके स्वर्ण ताको जैसे प्राप्त।
होय है तैसें ही पुरुषभी ब्रह्मकी उपासनां का
रके अपने नाश विनां मनुष्य स्वभाव को त्याग।
करके ब्रह्मात्मक ताकों प्राप्तहोय ही है १ सिद्धो।
ती कहे है कि ऐसा दृष्टांत विद्वानों के प्रति नहीं
कहने को योग्य है लोहकों कांचन ता भ्रांति मा
त्र है सोई प्रमाण सहित कहैं हैं अयसो वयवा
न भिभूय रसः स्थित वातत तानु गृहीति मनु
कनक त्व मतिं जनयत्ययसि प्रति पत्तृमयो तत
कांचन तां १ इसका अर्थ कहै हैं लोहके अवेवों।
को आच्छादन करके रस अग्नि विषे तपावनें कंप
मान अपने अनुग्रह के बलतें लोहे विषे केवल।

८ ^ जल और रजत विषे तैसेंही इसभी लोहेके अवयवोंकों आच्छादनकरकै लोह विषे कनकबुद्धि उत्पन्नकरैहै ^

कनक बुद्धि उत्पन्न करैहै तद्युनः लोहा कांचन ता
पृ० कों नहिं प्राप्त हूवा १ इसी अर्थ कों दृष्टांत करकै
६५ वर्णन करैं हैं प्रमाण सहित उदका वयवा नभि
भूप पयो रजता वयवांश्च यथा कनकं विपरीत
मतिं जनयत्युदके रजतेच तथायस्ति हेम मतिम
जैसें दूध और कनक जलके और रजत कें अवय
वोंकों आच्छादन करकै दूध और कनक बुद्धि उ
त्पन्न करै है ^ परंतु कनक नहिं करै है काहे तेरस
काबल जब निवर्त्त होगया तब लोरा लोहा होजाय
गा यह जगत् विषे प्रसिद्ध है तैसेंही दार्ष्टांत जानले
नां प्रश्न जीवकोटी का तो निर्धारभया परंतु ईश्वर
कोटी का तो निर्धार नहीं भया उत्तर तूही अतिप्रिय
वादी है श्रवण कर स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर कें
निषेध विषे समष्टि के अभिमानी विराट् और हिर
ण्यगर्भ अभिमानी और ईश्वर लय होगये औरजा
ग्रत् स्वप्न सुषुप्ती और सतोगुण रजोगुण तमोगु
ण और ब्रह्माविष्णु शिव और ऋग्वेद और सामवेद
और यजुर्वेद औरगार्हपत्य दक्षिणाग्नि और आहव
नीय येतीनों अग्नी और अकार उकार मकार येती
नों मात्रा और पृथिवी अंतरिक्ष स्वर्ग यथा क्रमसें
पूर्ण लय होगये आत्मज्ञानके होनेहीं प्रश्न युक्ती
का एवीं पर विचार करके प्रमाण कहो तब मानूं
गा उत्तर श्रुतिप्रमाण है सोई कहैं हैं ऋग्वेदोगा

हे पत्यश्च पृथिवी ब्रह्ममेवच अकारस्य शरीरंत
व्याख्यातं ब्रह्म वादिभिः १ यजुर्वेदांत रिक्षंच दक्षि
णाग्निस्तथैवच विष्णुश्च भगवानेव उकार परिकी
र्त्तितः २ सामवेद स्तथा द्यौवा हवनीयस्तथैवच ई
श्वरः परमो देवो मकार परि कीर्तितः ३ अस्यार्थः इ
सका अर्थ कहै हैं ऋग्वेद और गार्हपत्य अग्नि च पु
नः पृथिवी ब्रह्माभी तपुनः अकारका शरीर ज्ञा
नियों करके कहाहै १ यजुर्वेद चपुनः अंतरिक्षच
पुनः तैसेंही दक्षिणाग्नि चपुनः विष्णु भगवान दे
वसो उकार कहिये २ साम वेद चपुनः तैसे ही स्व
र्गादिक चपुनः तैसेंही आहवनीय अग्निईश्वर प
रे देव तिसको मकार कहिये ३ इति मंत्रः थोडें केदृ
ष्टांत विषे तत्वज्ञान के निर्णय की युक्ति पूर्ण हुई
अंसिद्धांती कहै है कि तुमजो ईश्वरके औतार मा
नो हो सोऔतार ईश्वरके अंश करके होते है अ
थवा ईश्वर सर्व कला औतार लिया है जो कहोगे
कि ईश्वर के अंश करके होते हैं तोईश्वर खं
डहै खंडाय मान दोष आवे है और जोकहोगे
कि समग्र ईश्वरही संपूर्ण कला करके औतारलेता
नाहै तो एकदेश वच्छिन्न हुवा कि यहां अवतार
लिया औरसो स्थान शून्य हो समस्त कहै है इस
का निर्णय तुमही करो सिद्धांती कहै हैं सुनभा

समग्रऐश्वर्य १ धर्म २ यश ३ श्री ४ ज्ञान ५ वैराग्य ६ इनका
नामषट्भागकहतेहैं ॥

जगत्की उत्पत्ती और प्रलयकी सामर्थ्य होनी और भूतोंकी गति अगतिकोजानना
और ज्ञान अज्ञानकोंजानना इनकानामभीषट्भागहै ॥

ई जिस शरीर विषें षड्भाग होवैहै ऐश्वर्यकों आदिले
करकै तिसहीका अवतार संज्ञाहै इस ही प्रकार ईश्व
रजो है तिसकों कोई ब्रह्मा कहै है कोई विष्णु कहै
है कोई शिव कहै है और वैकुंठ और कैलास सत्य
लोकादिक स्थान बनावै हैं सोईश्वर किसी ने देखा
है औरजो कोई कहै ईश्वरका मरे पीछे दर्शन होगा
अथवा कहै किइस देहनें पूर्व देखाथा तो कहैकि
ईश्वरके दर्शनका यही फल हुवा वारंवार जन्ममृ
त्युकों प्राप्त भया इसें परोक्षकानाम ईश्वर है किपर
देही मात्रहै सोई प्रमाण गीताविषे है सोई कहैं हैं
दिव्यं ददामि तेचक्षुः पश्यमे योगमैश्वरं इसकाअ
र्थ कहैं हैं कि हे अर्जुन इननेत्रों तें मेरास्वरूप ना
हीं दीखनें का तुझकों इसें मैं दिव्य चक्षु देता हूं
तिन नेत्रोंतें मेरा रूप देख यह केवल परदेही की
वार्ता कहीहै क्योंकर जोविश्व रूप प्रगट बनायाहै
अर्जुन को सोयह वार्ता पूछै है हम कि विश्वरू
पका ऐसा विस्तार लिखाहै गीता विषे सोकहैंहैं
सर्वतः पाणि पादं तत् सर्वतो ऽक्षिशिरो मुखं सर्व
तः श्रुति मल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति १ इसका अ
र्थ कहैं हैं सर्व ओर है हाथ और पैर जिसके सोजा
न वेकों योग्य है सर्वओर हैं नेत्र और शिर और मु
ख जिसके सोजानवे कों योग्यहै २ इसें जो ऐसा

महानरूप यातैं अर्जुन नें किस प्रकार देखा ऐसा
जो कहै हैं कि मुख देख करकैं बर्नन किया सोति
स्काल विषे अर्जुनका भी शरीर बिराट के तुल्य व
ट गया था अथवा चारों ओड़ फिरकैं विश्वरूपकी
प्रदक्षिणा करीथी सोतो कहीं प्रमाण नहीं लि
खा और जोतुम कहते हो कि देखाहै ऐसातो लि
खाहै सोकहो इस विषे द्रष्टा कौंन हुवा दृश्य
कौंन,, विराट् है और द्रष्टा अर्जुन है सोदृश्य बडा हुवा दृश्यतो
कि द्रष्टा बडा और यह तो प्रसिद्ध है कि दृश्यतें द्र
ष्टा बडाहै प्रश्न तुमही,, कि अर्जुन नें किस प्रकार कहो
विश्व रूपको देखाहै उत्तर सुन भाई अर्जुन नेअ
पनी बुद्धी के अन्तर देखाहै देखो अर्जुन के एक
देश विषे बुद्धीहै तिस बुद्धी के अन्तर ऐसा वि
राट रूप देखा इस विषें विराट रूप देखा इसविषे
विराट रूप कौन हुवा इसे विराट अर्जुन होगया
यातैं ऐसा महान् पूर्ण रूप हो करकैं और तुछ और
सावयव पाषाणा दिक की मूर्ति हैं तिनकें आ
गे नाक रगडे हैं कि में पतित हूं मेरा कल्याण क
रो यही मूढता है इसकी यातैं ईश्वर जोहै सोपर
देही कानाम है कैसें येयमनादिक जो मृतक शा
रीर मृत्तिका विषे दाव करकें बडा स्थान बना
ते हैं और अनेक प्रकारकी प्रार्थना करें हैं जो

पर्दा उघाड़ करके देखे तो गले हुवे अस्थिमात्र हैं प्र
यु. श्न तुम कहते हो कि ईश्वर परदेही मात्र है तो शा
६६ स्त्र विषे तो ईश्वर कहा है उत्तर सुन भाई जो ईश्वर
कहा है सो केवल मूढ पुरुषों के भय देने के नि
मित्त कहा है कि जिसके भय करके मूढ पुरुष विप
रीत व्यवहार न वर्ते कि जो हम विपरीत व्यवहार
वर्तेंगे तो ईश्वर दंड देवैगा और उपासना दिक जो
कही हैं तो स्त्री पुत्रादिक जो पदार्थ है तिनों की उ
पासना छुडावने के अर्थ कही है इति युक्ति ईश्व
र के निर्णय की पूर्ण हुई ३२ ऊँ तत्सत ब्रह्मणे ना
मः ऊँ एक नगरी में एक राजा रहता था सो एक
दिन राजा गया शिकार कों उस राजा की रानी र
थ में बैठ करके नगर में जावे थी एक दुकान पर
जौहरी का लड़का बैठा था तिस लडके कों रानी
ने परदा उठाय के देखा और उस लड़के ने भी रानी
कों देखा फेर वह रानी महल में आई दासी कों भे
ज कर उस जौहरी के लडके कों बुलाया और का
हा कुछ रत्न लेता आवे रानीजी मोल लेवेगी ज
ब लड़का गया महल में इतने ही में राजा आया
राजा के आवने की सुन करके राणी ने जौहरी के ल
ड़के कों दिशा फिरने के स्थान में पटक दिया ति
स के पीछे राजा आया फेर राजा और रानी तिस को

उपर विष्टा मूत्र करते रहे जब प्रातः काल हुवा तब
बूढ़े ने पट खोल कर देखा तो एक पुरुष है जौं
इसीके बेटेने पदार्थ अन्यो देदिया और कहा मुझें।
कहीं जलके निकट लेचल सोबूढ़ा टोकरे में ध
र करके नदी के निकट लेगया जाकर उसलड़को
ने स्नानकिया रात्रीको अपने घरमें गया फिर वः ल
ड़का व्यवहार करनें लगा तहां पूछते हैं जोउस ल
ड़के को रानी फेर बुलावे तो जावे कि नजावे और
जो जाय तो उस लड़के को क्या कहिये अबदार्ष्टांति।
कहें हैं अज्ञान रूपी नगरी विषे काम रूपी राजा रह
ताथा सोराजा मनोरथ रूपी शिकार खेलनें गया ति
सकी रानी कामना रूपी इंद्रियों के विषय रूपी रथवि
षे बैठ कर अज्ञान रूपी नगरी में गई तहां धर्म रूपी
जौहरी का कर्मेंद्री रूपी पुत्र बैठाथा तिसको कामनारू
पी रानी नें लज्जारूपी पर्दा उठाके देखा उस कर्मेंद्री
रूपी लड़के नेंभी देखने रूपी चित्त चलाया फेर वहक
मनां रूपी रानी संसार रूपी महल में आन करके वा
सनां रूपी महलमें आन करके वासना रूपी दासी।
को भेजा और कहा कर्मेंद्री रूपी लड़के को लाव अर्थ
रूपी पदार्थ लेता आवे फेर वह लड़का अर्थरूपी
पदार्थ लेकर केसंसार रूपी महल में गया तिसीमें
राजा काम रूपी आया तब कामना रूपी रानीने मा
ना के गर्भरूपी दिशा करनें के नरक कुंडमें पटक

सम

दिया तिस के ऊपर भोग रूपी विष्टा मूत्र पडता रहा
जब जन्म समै रूपी प्रातकाल हूवा तब कर्म रूपी।
चूहडे ने देखा कि यह कर्मैष्ठी रूपी पुरुष है तब क
र्म रूपी चूहडे ने प्रारब्ध रूपी टोकरे में डाल करकै
श्रद्धा रूपी नदीपै आन उतारा सोपुरुष श्रद्धा रूपी
नदी विषे स्नान करकै वेसुध रूपी रात्री विषे कर्म।
शाला रूपी घरविषै आया आन कर अवहार रू
पी कर्म करनें लगा अबजो कामना रूपी रानीके
र बुलावै उस कर्मैष्ठी रूपी लडके कों तो वह जावै
कि नजावै ऐसा पूछेनें कहै हैं किन जाय अरुजो
जावै तो उसकों महा पशु कहिये प्रश्न कर्मैष्ठी।
तो स्वर्गका जानेवाला है नर्ककों किसप्रकार प्राप्त
हूवा इसका उत्तर प्रमाण सहित कहो उत्तर श्रीरा
म चंद्रजीनें लक्ष्मण के प्रति रामगीता विषे कहा।
है सोई कहैं हैं सौमित्रिणा हृष्टउदार बुद्धिना रामः
कथा प्राह पुरातनीःशुभाः राज्ञः प्रमत्तस्य नृगस्य।
पापतो द्विजस्य तिर्यक् तमथाह राघवः १ इसका
अर्थ कहैं हैं लक्ष्मण उदार बुद्धी करकै पूछे हूवे।
राम चंद्रजी शुभ और अशुभके तिरनें करनें वाली
प्राचीन राजवोंकी कथा कहत भये फेर रामचंद्र
जी राजा नृगकों भ्रांती करकै ब्राह्मणों कों गवा।
देते हूवें ब्राह्मण के पापनें कृकल स्वरूप की प्रा
प्ति होत भई ऐसा कहत भये १ इसतें कर्मकी गति

वडी दुर्घट है इस्पर भगवान् ने कहाहै गीता विषे
गहना कर्मणो गतिः इस्का अर्थ कहैं हैं कर्मकी
गति गहनहै इति धर्मार्थ कामके निर्णयकी प्रा
क्ति एणी हुई ३४ ॐश्रीगणेशाय नमः एक रा
जा कोट में रहताथा सोउस्के ऊपर चार शत्रु से
ना लेकर के आये लडाई के अर्थ सोराजाने मंत्री
कों आज्ञा दीनी लडनें के अर्थ सोमंत्रीने अमी
सेना लेकरके लडाई करी अरु बलभी किया औ
आया॰ र फिर भागा इसप्रकार उसमंत्री नें कई बार श
त्रुवोंकों बुलाया और बलकिया फिर राजाके पा
स आया तबराजा नें विचार किया कियः सममं
त्री का कामहै यही शत्रुवोंकों बुलावैहै और मि
लजावै है सोइसनें हमकों बडा दुःखदिया इस
नें इस मंत्रीकों मारा चाहिये इस्के मारेंही नें सु
ख होयगा सोएसा विचारके राजानें उसमंत्रीकों
हीरेकी कनी दीनी सोहीरेकी कनी नें नही मरा
तब उस्के टुकडे टुकडे करवाये इस्सेंभीनही मरा।
नें॰ तब राजाकहा इस्को भोजन नही देवो भूखामर
भी॰ जावेगा फिरनही मरा फिर राजाने कहा इस्कों
सूलीपै चढावो सोसूलीपै नही मरा फिरराजा
ने विषदिया तिस्सें भी नही मरा फेर अंधेकुवे
में डालदिया अंधेकुवे में भीनहिं मरा तबराजा

यु.
६९
69

बहुत दुःखीहुवा कि इतने उपाय इसके मारनेंकोंकि
ये यह मरता नहीं इस विचार करकें राजा उदास
हुवा बैठाथा इतनेंमें एक पुरुष आया उस पुरु
षनें कहा किराजा तूं उदास क्यों है तब राजानें
कहा महाराज इस मंत्री नें मुझको बहुत दुःखदि
या और इसके मरने के उपाय बहुत किये फिरभी
नहीं मरा अब मैं क्या करूं उस पुरुषने कहा उस
राजाको कितूं अपने हाथमें खड्ग लेकर कें इसकों
मारेंगा तोही मरेगा और उपाय नहिं है इसकाको
ई मारनेका तब राजाने खड्ग लेकर के उस मंत्री
का शिर छेदन कर दिया उस मंत्रीके मारने तेकोट
चारों ओरतें ठहर गया और सर्व राज राजा काहु
वा अबदार्ष्टांति कहते हैं चेतन रूपी कोट है मनरूपी
तिस राजाका मंत्री है और काम क्रोध लोभ मोहरू
पी शत्रु हैं तेशत्रु मन रूपी मंत्रीके बुलावनें स्यांनी
संकल्प करकें होतेहैं और अनेक प्रकार जो विषय
शब्दादिक हैं सोकाम क्रोधादिक की सेनाहै सोई
मन रूपी मंत्री इंद्रियां रूपी अपनी सेना लेकर कैका
मक्रोधादिक नें मिल गया और लडाई स्यानी काम
क्रोधादिक के संगम तेनें दुःखभी पाया और राजा
के पास आवनें स्यांनी एकाकार भी होगया शत्रु
नें मिलने स्यांनी विषयां कि प्रकार होगया तब

जोराजाहेति सकाअज्ञान रूपी

चैतन्य रूपी राजानैं विचार किया काम क्रोधादिक ।
और शब्दादिक जो हैं शत्रु इन्की सेना सो यह केव
ल मन रूपी मंत्री बुलानैं स्थानी संकल्प करकै च
ड आवै है इस मन रूपी मंत्रीकों किसी प्रकार मा
रिये तब यह काम क्रोधादिक विषयों के दुःखजो हैं
तो निवर्त होवैं हैं सो ऐसा विचार करकै चेतन रूपी
राजाने हीरे की कनी देनी स्थानी मन रूपी मंत्री ।
नैं यत्न करवाया सोई यत्न करनै तें मनका अभाव
नहीं हुवा तब टुकडे टुकडे करने स्थानी नानाप्र
कारके दान करवाये फिर भी मनरूपी मंत्री का मरन
रूपी अभाव नहीं हुवा तब चेतन रूपी राजानें भूवें
मारनें स्थानी कृच्छ्र चंद्रायणादिक व्रतकरवाये ।
फिरभी मरनें रूपी अभाव नहीं हुवा तबचेतन रू
पी राजा नें इसमन रूपी मंत्री कैं सूली चडाव नें
रूपी कर्म करवाये सोकर्म करवानें तें भी मरन रूपी
अभाव नहीं हुवा तब चेतन रूपी राजानैं मनरूपी
मंत्री कों उपासना रूपी विष दिया सोउपासना रू
पी विषनैं भी नहीं मरा प्रश्न उपासनाकों विषरूप
नी किस प्रकार कहा उत्तर विषके भोजन सेतीवे
सोध होय है बेसुध कहिये अपनी सुध नहिं रहै है ।
तैसें ही उपासक भी बेसुध है आपकों यथार्थ कर
के नहिं जानता उपासना इसें विषके तुल्य कहि ।
ये प्रश्न इसें प्रमाण क्या है उत्तर स्मृति प्रमाण है

सोई कहै है विषपान विष वमन इसका अर्थ कहै है देहादिक विषयों को विषकी न्याई त्याग इसका अभिप्राय यह है कि वह देहादिक करके संयुक्त पुरुष उपासना करै है इसतें उपासना रूपी विषतें भी मनरूपी मंत्री का मरण रूपी अभाव नहीं हुवा तब रूप विषै डालने रूपी योगकी समाधि करवाई सोइसी प्रकार योगकी समाधितैं भी अभाव नहीं हुवा जब संपूर्ण उपायों करके अभाव नहुवा मन रूपी मंत्रीका तब चेतन रूपी राजाको उदासीन ता रूपी वैराग्य हुवा किसी पुरुष ज्ञानी ज्ञानीनैं पूछा कि तूं दुःखी काहे तें हुवा चेतन रूपी राजा कहै है कि महा राज मन रूपी मंत्रीनैं कामादिक कि सेनातैं मिलकर कै दुःख बहुत दिया फिर मैं नें इसमन रूपी मंत्री को मरण रूपी शांतिके अर्थ हीरे की कणी आदिक रूपी यत्नादिक बहुत करवाये परंतु यह दुष्ट नहीं मरा यातैं उदासी रूपी दुःखी हुं अब तमनैं पूछा है जोकोई उपाय कहो तब अन्य पुरुष रूपी ज्ञानी कहै है ज्ञानरूपी खड्ग करकै तूं इस मनरूपी मंत्रीका निषेध रूपी नाश किया तिसही काल विषै अज्ञान रूपी गरके टहने रूपी अभाव होगया तब फिर बाहरके संकल्प कर कै रहित चिदानंद राजा आखंड सत चित आनंद रूप करके स्थित हुवा इति युक्ती मनके साधने के निर्णय की पूर्ण हुई।

३५ ॐश्रीगणेशाय नमः ॐएक किसान था तिस
नैं समुद्र के तट विषे खेत बोया सोतिस खेतकी रक्षा
के निमित्त कुदाली लेकर टोया खोदने लगा सोउस
टोये मैंते चार सहस्र लाल निकसे किसान नैं देखा
करकै कहा कि ये पक्के गोलेहैं तिनकों लेकर कै डाम
चे के ऊपर जाबैठा और गोफिये विषे रख करकै पा
खियों कों उडावनें लगा सोऐसा गोला फेंकनें लगा
किसी वृक्षकै भी नहीं लगै और समुद्र विषे जाकरकै
पडा इसही प्रकार संपूर्ण लाल फेंक दिये एकला
ल रहगया तिसकों भी गोफिये विषे रख करकै
लगा फेंकनें इतने में उसकी स्त्री आगई तिसस्त्री
नें कहा कि तुमने आज भोजन करनेकों विलंब
क्योंकरी तब उस पुरुषनें कहाकि आज पक्षी बहु
त पडेथे खेत विषें इसें विलंब भई तबलाल सा
हित गोफिया स्त्रीकों सौंप दिया और कहाकि तूं
इसकों लेचल मैंभी आवता हूं सोवह स्त्री लेकर
कै घरकों गई घरविषे जाकर कै रसोई की सामि
ग्री देखनैं लगी जोदेखै तौघर विषे नौंन नहिं है
और चूनहै सोलून के अर्थ पदारथ देखनैं लगी
कोई ऐसा कौडी नहीं पाया तब उसलालकों ले
कर कैं नौंन लेनें कों बनियेकी हाट पर गई औ
र बनिये केप्रति कहा कि इस बटियाका नौंन कि

हमकों दे तब उस बनियेनें कहाकि और कुछ आ
पु. न्नादिक पदार्थ क्यों नहिं लाई सोई उस लालकों पा
७१ षाण जान कर फेंक दिया और नोंन नहिं दिया फेर
71 उदास करके और मनुष्यकी हाट पर गई तिसनें भी
नोंन नदिया और निरादर ही किया इसही प्रकार
वार हाटों पर फिरी परंतु नोंन किसीनें नहिं दिया
तिसही काल विषे कोई जौहरी सन्मुख आया ति
स जौहरी नें देखा कि यह तो लाल है तब उस जौ
५ तब उस स्त्रीनें कहा कि जो इस्का आवे सो दे^ हरी नें उस स्त्रीनें कहा कि इस्का क्या लेवेगी ^ तब उ
स जौहरी नें कहा इस्का मोल क्या पूछे है जो तेरी
इच्छा हो सो ^ तब तिस जौहरी ने उसस्त्री कों बहुत
कुछ दिया प[illegible] पदार्थ तब उस स्त्रीनें उसे उस व
स्तुका नाम पूछा कि इसका नाम क्या है तब उस
जौंहरीने कहा कि इस्का नाम रत्न है फिर वह स्त्री
संपूर्ण पदार्थ लेकर अपने घर विषे आई फिर उ
स स्त्रीनें एक तंबू लिया और छह दासियां मोल
लीनी और एक बुढिया रसोई करनें वाली और अ
छे वस्त्र सुंदर लिये और बहुत सुंदर शृंगार कर
कै और भूषण पहरकै पाय्याके ऊपर बैठी और दी
एक बाल दिया सोई वह स्त्री प्रथम तो किसानी
थी अब राणी भई इतनेमें उसस्त्री का पुरुष आ
या उस पुरुषनें तंबू देखकै कहा कि मेरा गृह कहां

है सोदेखता हुवा हर खड़ाथा तबउस की स्त्रीनें दे
ख करके कहा कि वहां कोंखड़े हो यहां आवो ^
तब उस स्त्रीनें कहा कि आप स्नान करों और भो
जन करो फिर मेरे निकट आकर बैठो तब बताऊं
गी तब उस पुरुषने स्नान किया और वस्त्र पहरे औ
र भोजन किया और शय्याके ऊपर आकर के बै
ठा तब उसस्त्रीको पूछाकि यह तू कहांसे लाई त
ब उस स्त्रीनें कहाकि वह जो तुमने गोपियोंविषै
धरके दियाथा सोगोला लेकर मैंनें घर विषै धर
दिया और भोजन करने के अर्थ मैंने देखा तोनोंन
नहिंथा सोनोंन के अर्थ उसगोले को लेकरके बनि
येकी हाट पर गई सो बनियें नें कहा कि अन्नादि
क पदार्थ लावने थे यह पाषाण क्या लाई है उस
नें फेंकदिया इसही प्रकार चार बनियों नें गोले
को फेंक दिया इतने में एक जौंहरी आगया उस
नें तिसको देख करके कहा कि इसका क्या लेगीमें
नें उस जौहरी से कहा कि जो इसका आवे सोदेवो
तब उस जौहरी नें ये ह संपूर्ण पदार्थ दिये मैंनें
उस जौहरी सें गोले का नाम पूछा उसजौ हरीनें
कहाकि इसका नाम रत्नहै तिसही रत्न का यह स
म्पूर्ण पदार्थ जोहै सो आया है तब यह वार्त्ता सु
न करके वह पुरुष बहुत पछुताया उसनें कहा
कि देखो एक गोले रूपी रत्नका इतना पदार्थथा

^ तबउसपुरुषने
पूछाइसपदा
र्थकहांसेलाई ^

पु॰
१२
आया है इतनें रत्न मैंनें वृथाही खोदिये फेर उसनें
हर्ष भीकिया किजो गया सोगया इतनों भी बहुत
न है पश्चात उस पुरुष नें स्त्रीनें कहाकि उस जौंह
रीके निकट मुझको लेचल इस्का मोल कुछ ओर
भीरहा होगा तब स्त्रीनें कहाकि अच्छा तब वहस्त्री
उस पुरुष कों लेकर के जौंहरी के निकट गई त
ब उस पुरुषनें उस जौं हरी नें कहा कि उस रत्नका
इतनों ही मोलथा अथवा ओर कुछ विशेष भी
रहा है तब उस जौंहरी नें कहा कि इस्का मोलदे
नेंकी मेरी सामर्थ नहिं है मेरेपास इतनांही पदा
र्थ था सोमेंने दिया जोइस्कामोल चाहो तो हमारे
सेठके पास जावो जिसके हम गुमास्ते हैं तबव
ह पुरुष उस स्त्रीकों लेकर के तिस सेठके पास
गया ओर तिस सेठकों पुछा कि जो तुमनै हमारा
रत्न लियाहै तिस्का इतनों ही मोलथा अथवाकु
छ ओरभी मोलहै इस्कानाम यथार्थ क्या है सो
कहो तब उससेठ नेकहा सुन भाई जोतू इसका
मोल पुछै है सोतो मोल इतनाहै किनेरे जन्मज
न्मांतरों के दरिद्र जाते रहेंगे ओर इस्का नाम लाल
है तब उस पुरुषनें कहाकि इस्का जो विशेष रहाहै
सो देवो तब उसनें उस पुरुष कों इतना पदारथ
दिया उस्के जन्म जन्मांतरों के दरिद्र जाते रहें ओर
दरिद्र के जातेही स्त्रीभी मरगई अकेला पुरुषरा

हो गया आनंद पूर्वक स्थित हुवा अबदार्ष्टांतक
हैं हैं जीव रूपी किसान नें संसार रूपी समुद्रके
अहंकार रूपी तट विषे कर्म रूपी खेतकिया
और वेद रूपी टोये खोदने के निमित्त पुरुषार्थ
रूपी कुदाली लेकरके वेद रूपी टोया खोदा तिसः
विषे मृतिका रूपी तो कर्म कांड और उपासना कीः
श्रुतियां और चार सहस्त्र लाल रूपी ज्ञान कीश्रुः
तियां निकसी तब जीव रूपी किसान नें कहा कि
ये पक्के गोले रूपी श्रुतियां स्वर्गा दिक की प्रा
प्तिकों कहैं हैं स्वर्गा दिक की प्राप्तीही मुक्त है यहां
श्रुति प्रमाण है सोई कहैं हैं अक्षय्यं हवै चातुर्मा
स्य याजिनः सुकृतं भवती ति श्रुतेः इसका अर्थ
कहैं हैं हस्फुटं वैतिंइ निश्चयेन चातुर्मास्य काय
जन करने वाला अक्षय स्वर्ग कों प्राप्त होयहै इ
सकों आदि लेकै और श्रुतियां भी कहैं हैं कि क
र्म कों निरूपण करैं हैं ईशावास्य के भाष्य विषे
कहाहै मीमांसी नें कि इनश्रुतियों को भी मंत्रसं
ज्ञा है सोई प्रमाण कहैं हैं ईशावास्य मित्यादयोः
मंत्राः कर्म शेषाः मंत्रत्वा दीषे त्वे त्यादि मंत्र वदः
तः पृथक् प्रयोजनाद्य भावा द्व्याख्येया इसकाः
अर्थ कहैं हैं ईशावास्य इत्यादिक मंत्र कर्म शेषः
हैं किकर्म हीकों प्रति पादन करै है मंत्रहैं इसते
इषे त्वे इत्यादिक मंत्रकी न्याई इसीतें भिन्न प्रयो

जनादिक के अभाव तें नहिं आख्यान करनेंकों यो
पृ० ग्यहूं तब वह जीव रूपी किसान अभिमान रूपी
७२ डामचे पर चढे होनें रूपी स्थित होकर कें त्रिगुणा
त्मक रूपी गोफिये विषे गोले रूपी प्रकृति कों
स्थित करकें फिरावने रूपी अर्थ लगात भया औ
र ऐसा गोला फेंकनें स्यानी वृत्तके नलगने श्रोर
पतियों कें लगे सो कहा कि पतियों के मारने रू
पी बलदान करत भया श्रोर वृत्तों की रत्नाकरकें
यह कहा कियत्न विषे विघ्न नहिं होवे और समुद्र
विषे डालने रूपी कहाकि संसार विषे अर्थ लगा
वताया कि संसार ही सिद्ध करत भया इसही प्र
कार संपूर्ण लालों के फेंकने स्यानी संपूर्ण प्रकृ
तियों कों कर्म विषे लगाकरकें वती एकलाला
रूपी प्रकृती रहगई तिसकों भीत्रिगुणात्म रूपीगो
फिये विषे धरनें स्यानी अर्थ लगावनें लगा का
र्म विषे इतनें में किसाण रूपी पुरुषकी वुद्धिरू
पीस्त्री श्रावनें रूपी सनमुख भई तब वुद्धिरूपी
स्त्रीनें कहाकि प्रारब्ध रूपी भोजन के अर्थ विलं
व कों करी तब जीवरूपी पुरुषने कहा कि या
त्नकी रत्ताविषे पती मारने रूपी बलदान बहु
त किया इसकरकें विलंब भई तब जीव रूपीपुरु
षनें त्रिगुणात्मक रूपी गोफिये विषे तत्वमसि
प्रकृति रूपी जो लाल धराथा सो वुद्धि रूपी स्त्रीकें

सौंप दिया और यह कहा कि तू लेचल पीछें ते में
भी आव हूं इसकर कै यह निर्णय हुवा कि बुद्धिके
फुरने तें पीछे चैतन्य वर्ते है सोवह बुद्धि रूपी स्त्री
गृह रूपी आश्रम विषे प्राप्त हुई और देखा कि गृ
ह रूपी आश्रम विषे प्रारब्ध केभोग रूपी चूतहैं
परंनोंन नहिं रूपी एक रस स्वाद नंही तब बुद्धिरू
पी स्त्रीकों स्वादरूपी नोंन के अर्थ कोडी पैसा नहिं
पावनेरूपी अन्य शास्त्र वादियोंके मतों विषे इच्छा नहिं पाई
तब वह बुद्धि रूपी स्त्री तत्व मसिश्रुति रूपी ला
लकों लेकरके नैयायक और वैशेषक और पातंज
लि और सांख्य इन चारों शास्त्र वाले वैश्यों रूपी अ
चार्यों के पास गई और नोंन लेनें रूपी यह कहू
कि इस श्रुति करके मुझकों उपदेश दि ऐसा क
रो कि एक रस स्वादकी प्राप्ती होय सोई उन चारों
शास्त्र वाले पुरुष रूपी बनियों नै कहा कि हमारे
मतकी श्रुति रूपी पदार्थ लावतो तब तुझकों
नोंन रूपी स्वाद मिलता तिसही काल विषे वेदां
ती रूपी जौहरी नें देखाकि लाल रूपी तत्व मसी
श्रुति है तब उस वेदांती रूपी जौहरी नें बुद्धिरू
पी स्त्रीके प्रति कहा कि इस लाल के मोल ले
ने रूपी इस तत्वमसी श्रुतिका अर्थ किस प्रका
र ग्रहण करैगी तब बुद्धिरूपी स्त्रीनें कहाकि इ
सका जो भावै सोयी इस करकै यह कहा कि या

पृ. ७५

75

यार्थ जो इस श्रुति का अभि प्राय हो सोई मुझकों
उप देश करने रूपी देवो तव वेदांती रूपी जौहरी
ने कहाकि इसके ग्रावने कों का कहैं हैं जोतेरीइ
छा सो ले इसकर के यह कहा कि जितना तुझ कों
अधिकार है उस प्रकार अर्थ कों ग्रहण कर तव उ
स वेदांती रूपी जौहरी नें उसको बहुत कुछ देनेरूप
नी उप देश किया और बुद्धि रूपी स्त्रीने नाम पूछा
और जौहरी नें नाम बताया इसकरके यह कहा
कि इस श्रुतिका अर्थ इस प्रकार किया तस्मात्।
अस्ति इसका अर्थ कहैं हैं तिसका तूं है प्रश्न जौहा
री रूपी वेदांती ने उपासना विषे श्रुति का अर्थ।
किसप्रकार लगाया उत्तर सुनभाई उपदेश अधिका
री प्रतिहोताहै पश्चा उपासना काही अधिकारीहो
ताहै प्रथम उपदेश सामान्यही होता है फिर विशे
षभी होता है प्रश्न इसविषे प्रमाण क्याहै उत्तर
गीताविषे कहाहै सोई कहैं हैं नबुद्धि भेदं जनयेद
ज्ञानां कर्म संगिनां जोषयेत् सर्व कर्माणि विद्वा
न युक्तः समाचरन् १ इसका अर्थ कहैं हैं अज्ञानि
योंकी और कर्म निष्ठावालोंकी बुद्धियों विषे भेदका
उपदेश नहिं करै कि अकर्ता आत्माका उपदेश न
हिं करै ज्ञानी ज्ञानी आपभी कर्म आचरन् करताहु
वा सर्वथा कर्मों विषे जोड़दे १ तवबुद्धी रूपी।
स्त्री उपासना रूपी पदार्थ कों लेकर के सायनच

नष्ट्य जो बनाये ये विचार रूपी दीपक ग्रोर वैराग्य
रूपी तेल ग्रोर षट संपति रूपी छुट दासियां ग्रो
र सुमुत्तना रूपी शय्या विछाई ग्रोर प्रारब्ध रूपी
बुडिया रसोई करनें वाली स्थित करी ग्रोर संतोष
रूपी भोजन पाय करकें शील रूपी शृंगार करकें।
सुमुत्तना रूपी शय्या परि स्थित होनभई ग्रोरकि
सांनीतें रानी भई रानीरूपी ग्र^अवसायात्मिक बुद्धि होने^
नें ग्रवयात्मिक बुद्धि रूपी रानी होन भई इतने
में जीव रूपी किसांन ग्रागया ग्रोर विचार कर
नेभया कि मेराघर रूपी बरण कहां गया सो
बुद्धि रूपीस्त्री देखनें रूपी सन्मुख होन भई तब।
जीव रूपी किसांन ने कहा कि यह पदार्थ रूपी
साधन कहांतें बनाये तब बुद्धि रूपी स्त्रीनें जी
व रूपी पुरुष कें भीतर बाहर के पवित्र होने रू
पी स्नान करवाया ग्रोर संतोष रूपी भोजन क
रवाया ग्रोर ग्राश्रम रूपी वस्त्र पहराये ग्रोर सु।
मुत्तना रूपी शय्याके ऊपर बुद्धिरूपी स्त्री जीव
रूपी किसान संग एकता कें प्राप्त भई प्रश्न
चैतन्य पुरुषके ऐसे साधन किस प्रकार हैं उत्त
कोंतो सथभी नहीं है ग्रोर इस विषे प्रमाणक्या
है उत्तर श्रुति प्रमाण है ग्रकस्मात्कथं चिन्ते
एव वणान् वेदा दिनें नेश्वरार्थं कर्मानुष्ठा नेनग्र

यगत रागादि मल अनित्यादि दोष दर्शनेन नित्या

यु. वस्तु विवेक इहा मुत्रार्थ फल भोग विरागः वेदां

७५ तेभ्यो प्रतीय मानं ब्रह्मात्म भावं बुभुत्सु इस्काश्र

75 र्थ कहैं हैं अकस्मा त्किसीक पुण्य के वशतें वेद

के कहै ईश्वर के अर्थ कर्मोका अनुष्ठान करके ।

निवृत्त हुये हैं रागादिक मल जिसके अनित्यादिक

दोष करकै नित्य और अनित्य वस्तुका विचार इ

सलोक के अर्थ और फल और परलोक के भो

गोंका त्याग उपनिषदों तें प्रतीति मान ब्रह्मा

त्म भाव के जाननेंकी इछा करै है प्रश्न बुद्धिवि

ना पुरुष नें व्यवहार किस प्रकार सिद्ध किया उ

त्तर मन रूपी संकल्पतें व्यवहार सिद्ध किया त

व बुद्धि रूपी स्त्री चैतन्य रूपी पुरुष के प्रति वृ

त्तांत लगी कहने अर्थका संपूर्ण वृत्तांत जिस कि४

प्रकार भयाथा सो कहा तब उस पुरुषके वृत्तां

त्तांत श्रवण करणे करकै बहुत पश्चात्ताप रूपी

अनिर्वचनीय हर्षी भयी कि असेलाल वृथा

खोनें रूपी मैंनें उन श्रुतियों का अर्थ कर्म वि

षे जान करकै वर्त्ता फेर आनंदभी मानां किमा

ला कर्मादि कों कर कै अधी कारी तो भया फि

र उस जीव रूपी पुरुषनें बुद्धि रूपी स्त्रीने कहा

कि मुझकों वेदांती रूपी ज्योहरी के सनमुखा

कर में एहतुंगा किलाल रूपी स्फटिका अर्थ कुछ
और भी रह्या है तब बुद्धि रूपी स्त्रीनें जीव रूपी पुरुष
कों वेदांती रूपी जोंहरी के सन्मुख किया तब जीव
रूपी पुरुषनें वेदांती रूपी जोंहरी नें कहा कि इ
स स्फटिका यही उप देश है अथवा और भी कुछ
है तब वेदांती रूपी जौं हरी ने कहा कि मेरी इत
नी ही बातके उपदेश करनें मात्र समर्थ थी जोइ
स्का मोल रूपी यथार्थ निश्चय उपदेश चाहे तो
हमारे सेठ रूपी ज्ञानी के निकट जावो प्रश्न वेदां
तीविषे अधिक ज्ञन का विकल्प कों किया उन्न
शिष्य की दृष्टी लेकर कहा है तब जीव रूपी पु
रुष बुद्धि रूपी स्त्री कों संगले करके ज्ञानी रूपी सेठ
के निकट गया और यही प्रश्न किया कि हमारे ला
ल रूपी तत्व मसि स्फटिका मोल रूपी निर्णयका
यही उपदेश है जो उपासनो पर कहा है अथवा
कुछ और भी शेष रहा है और इस्का नाम यथा
र्थ क्या है तब उस सेठ रूपी ज्ञानी ने कहा कि इ
स्का यथार्थ मोल रूपी निर्णय तो इस प्रकार है
जोतूं ग्रहण करेगा तो तेरे जन्मां तरों का दरिद्र रू
पी अज्ञान नाश होजावे और इस्का नाम लाला
स्यामी ज्ञान कहे हैं कि तत् त्वं असि सो ब्रह्म तूं
है और सत् पदार्थ देनें रूपी उपदेश करणे ते

जन्म जन्मांतरों के दरिद्र नाश होने रूपी समग्र अ
पु. ज्ञानका नाश होगया और स्त्रीके मरण रूपी बुद्धि
७९ का अभाव होगया और सूक्ष्म कारण का अभावा
76 होगया आनंद पूर्वक ही स्थित रहा प्रश्न इस पुरु
षकों ऐसे गुरुकी किस प्रकार प्राप्ती होय यह
तो बहुतसे ढूंढनें गयाभी नहीं उत्तर सतभाईज्ञा
नका उपदेष्टाजो आचार्य है तिस्की प्राप्ति ईश्व
रकी कृपातें होय है प्रश्न इस विषे प्रमाण क्याहै
उत्तर रामचंद्र जीके प्रति वसिष्ठ जीका वचन प्र
माण है सोई कहें हैं यावत्तानु ग्रहःसाक्षा ज्जायते
परमेश्वरात् तावन्न सत् गुरुं कश्चित् सत् शास्त्रं
नाप लभ्यते इस्का अर्थ कहें हैं यावत् कि जब
तोई किसी पुरुषकों परमेश्वर ने साक्षात् अनु
ग्रह नहीं होय तब तोई किसी सत् गुरु औरस
त् शास्त्र की प्राप्ति नहीं होय १ इसें इस्कों पूर्वो
उपासनाका उपदेशथा उस्के वशातें ईश्वरकीकृ
पातें सत् शास्त्र करकें संपन्न गुरोंकी प्राप्ति हुआ
ई इति कर्म उपासना और ज्ञान तीनों करकें उत्त
म ज्ञानकी प्राप्तिके निर्णय की युक्ति पूर्ण हुई ३६
ॐ तत्सत् ब्रह्मणे नमः ॐ प्रश्न वादीका जगत्
की उत्पत्ती किस प्रकार हुई उत्तर सिद्धांती का
हैं हैं जगत् ईश्वरके संकल्प तें उत्पन्न हुवाहै।

कहेहै काहेतेकि ईश्वरको॥

प्रश्न ईश्वरतो स्वतः ज्ञान स्वरूप है ईश्वरके संकल्प
कहो संभव होवे उत्तर ईश्वरका लक्ष्यार्थ ज्ञान स्व
रूप है और वाच्यार्थ ते अज्ञानोपहित चैतन्य ई
श्वर कों सगुण कहै हैं सगुण नामहै अज्ञानोपा
हितका प्रश्न ज्ञान स्वरूप विषे अज्ञान कैसें संभ
वे होय उत्तर सतवादी अज्ञान कहिये माया है नाम
जिसका सो ईश्वर के वश वर्ती है ईश्वर मायाके व
शवर्ती नहीं है और जीव अज्ञान के वश वर्ती है
याते जगत् की उत्पत्ति का कारण ईश्वरही है प्रश्न
इस विषे प्रमाण काहै उत्तर यहां व्यासजीका सू
त्र प्रमाण है ईक्षते र्नाशब्दं इसका अर्थ कहै हैं प्र
धानादिक जगतका कारण नहीं हैं काहेतें अश
ब्दत्वात् अशब्दतें किवेद वाह्यतें प्रधानादिक कों
जगत् का कारण कहनां असत्यहै ऐसें तौ जगत
काकारण कौनहै ईक्षण मात्रके श्रवण करने तें ई
क्षण कहिये विचार कि इच्छा मात्र ते श्रवण किं
याहै जगत् वेदकी प्रमाणता विषे हेतु रूपश्रु
तिभी कहै हैं तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेय इसका अ
र्थ कहै हैं सो चैतन्य विचार करत भया कि इच्छा
करत भया कि अनेक रूप होजाऊं और भाईई
श्वरकी माया त्रिगुण त्मिकहै गुणके संयोगतें
जगत् कीकल्पना करतहै वास्तव तें जगत् नहीं
ईश्वर विषे सृष्टत्वके अर्थ अध्यारोप के लियेंई

ईश्वर सर्वज्ञ है

श्वरतें जगत् की उत्पत्ति कहै हैं और जीवतें जगत्।
यु॰ की उत्पत्ति नहिं होती काहेतें कि जीव अल्पज्ञ है
७८ इसतें जो अल्पज्ञ होय है सो सर्वका प्रेरक नहीं स
77 भव होय है और सर्वके पालन करने कों और स
र्वके जान्ने को समर्थ नहीं तोजगत् किसके आ
धार रहै है इसतें ईश्वर ही जगत् काकारण है प्रश्न
इस विषे प्रमाण काहै उत्तर स्मृति प्रमाण है
ईश्वरः सर्व निर्माता नेहास्य इति निश्चयी अंतर्ग
लित सर्वाशः शांतः क्वापि नसज्जते १ इसका अ
र्थ कहै हैं इह अस्मिन् विचारे इस विचार विषे ई
श्वरही संपूर्ण का उत्पत्ति करने वाला है नहींओ
र जीव ऐसा निश्चय वान् पुरुष अंतर गलित हु
ई हैं संपूर्ण आशा जिसकी याही तें शांत होत
संतै कछुभी नहिं कर्तृत्वका अभिमान करै हैं १
प्रश्न भला महाराज जो जगत् वास्तव नहीं पाया
तो मिथ्या हुवा तोमिथ्या वस्तु विषे आशक्तीकौं
हुई उत्तर मिथ्या वस्तु विषे भी आशक्ति होवै है।
जैसें चित्राम विषे स्त्रीकौं आदि लेकर पदार्थ आ
शक्ती करै हैं प्रश्न मिथ्यावस्तु भान कैसें होयहै
अधार तौ कोई भी नहीं इसका उत्तर भ्रांती के आ
श्रय भान होवै है प्रश्न इस विषे प्रमाण काहै उ
त्तर स्मृति प्रमाण अहो मयि स्थितं विश्वं वस्तुतो
नमयि स्थितं नमे बंधो नमोक्षो वा भ्रांतिः शांता

निरा अथवा १ इसका अर्थ कहैं हैं अहो इत्यादि यें मुझ
विषे स्थिति भी विस्व वासनवैं नहीं मुझ विषे स्थि
तहै नमेरे बंधहै अथवा फिर मोक्षभी नहीं है इस
विचारतें भ्रांती ह्नीकी शांतिहै कैसी भ्रांती है कि
आश्रय रहित है प्रश्न यह भ्रांति किस प्रकार नि
वर्त होय उत्तर श्रवण मनन निदिध्यासन तें भ्रां
ति निवर्त होहै प्रश्न तोश्रवणादिक किसप्रकार
बनें उत्तर श्रवणादिक सतसंगत विषे होहैं प्रश्न
सत संगत किसप्रकार होवे उत्तर अमी इछातें
प्रश्न अपनी इछा किसप्रकार होवे उत्तर इछा जा
ब होवै तब पूर्व के संस्कार होवैं प्रश्न इस विषे
प्रमाण क्याहै उत्तर भगवान् का वचन प्रमाण है
अनेक जन्म संसिद्धि स्ततो याति परांगति म इसका
अर्थ कहैं हैं भले प्रकार अनेक जन्मोंकी सिद्धि
होत संतै तिसके पश्चात मोक्ष कों प्राप्त होयहै
सिद्धी कहिये संस्कार प्रश्न तोसंस्कार जन्य ज्ञा
न हूवा पुरुषार्थ का क्या कार्य रहा उत्तर स्मृतभा
ई संस्कारतें इतनां कार्य सिद्ध होहै किस्मृति होहै
सो कहाभी है स्मृति विषे संस्कार मात्र जन्यं ज्ञानं
स्मृति इसका अर्थ कहैं हैं संस्कार मात्र तें उत्पन्न
हूवे ज्ञान कों स्मृति कहैं हैं स्मृति कहिये यादहि
लानें कों जिस वस्तुकी याद आई है तिसकी प्राप्ती
के अर्थ पुरुषार्थ चाहिये और स्मृतवादी संस्कार

भीतेराही पुरुषार्थ है किजन्मा तरों विषे कियाहै ३
यु० हैं प्रश्न श्रवण दिक किसप्रकार हैं उत्तर प्रथमश्र
७८ वण षट् प्रकार है सोई कहै हैं उपक्रम उपसंहार
78 एक लिंगहै अभ्यास २ अपूर्वता ३ फल ४ अर्थवा
द उपपत्ती ६ उत्पत्ती के पहलें यह जगत सत्तामा
त्रही था इसप्रकार छांदोग्य नामा उपनिषद के छ
टे प्रपाठक प्रकरण विषे कहाहै इसकों उपक्रम।
कहैं हैं प्रतीत मान संपूर्ण यह जगत पहले क
हाहुवा सत स्वरूपही है कि अबभी सत स्वरूप
ही है इसकों उपसंहार कहै हैं इन दोनोंका एका
लिंग हुवा प्रकरण जिस आत्मा का चला आवै।
है तिस्के मध्य विषे तत्व मसि इस श्रुतिकों नवा
सोम्या के उपदेश करकें वर्नन करनें कों अभ्यास।
कहैं हैं प्रश्न सो नव गुणना कौनसी है उत्तर उदा
लक जी स्वेत केत् कों उपदेश करै है कि सुषुप्ति
और मरण विषे जिस रूपकर के जीव प्राप्त हो।
वें हैं ब्रह्मको सो ब्रह्म तूंहै इस प्रकार पितानें उ
पदेश किया १ प्रश्न स्वेत केत् कहै हैं किसुषु
प्ति विषे सत स्वरूप कों प्राप्त हुई प्रजा तिस ब्र
ह्मात्म तत्वकों कौंनही जानै है उत्तर जैसें मा
खियों करकें लाये हुये नाना वृक्षों के रसके स
मुदाय ते रस नही जानते किहम अमुके अमु।
के वृक्षहै के तैसें ही सुषुप्ति विषे ब्रह्मकों प्राप्त

हुवे नहीं जाने है इस प्रकार आशंका को निवारण क
रके उपदेश करे है कि सो ब्रह्म तूं है २ प्रश्न सुषुप्ति
विषे इंद्रियों के अभाव ते नहीं जानां उदे हुवे तो जा
ने कि हम ब्रह्म ते उदे इस प्रकार को नहिं जानते
उत्तर जैसें मेघों करके समुद्र ते लाये हुये जलना
दियों को प्राप्त हुवे समुद्र ते आवने को नहीं जाने हैं
तैसें ही ब्रह्म ते उदे हुवे जीव तिस ब्रह्म करके सहि
त एक ता को नहीं जानते इस उत्तर करके फेर सोई
उपदेश करे हैं कि सो ब्रह्म तूं है प्रश्न कि तैसें ही सु
षुप्ति विषे जीव को कारणात्मा करके अभाव की प्रा
प्ति होत संते समुद्र तरंगादिक की न्याईं नाश की
शंका होय है उत्तर जैसें वृक्ष को कुहाड़े आदिको
करके छेदने से ती रस के वहने तें सजीवता हि
तैसे ही सुषुप्ति में देह विषे निश्चे करके लालरंग
के देखने तें नहीं जीव का नाश हुवा इस उत्तर क
र के फेर उपदेश करे हैं कि सो ब्रह्म तूं है ४ प्रश्न
किस प्रकार सूक्ष्म ब्रह्म के सकाश ते स्थूल जगत
की उत्पत्ति होय है उत्तर जैसें वट के सूक्ष्म बीज तें
स्थूल वृक्ष की उत्पत्ति होय है तिसकी न्यांईं सूक्ष्म ब्र
ह्म तें स्थूल जगत की उत्पत्ति के संभवतें इस उत्तर
करके फेर उपदेश करे हैं कि सो ब्रह्म तूं है प्रश्न ज
गत का मूल कारण ब्रह्म को नहिं प्रत्यक्ष भान हो
ता उत्तर जैसें जल विषे डारा लून का डला स्पर्श

होता ५

पृ० ७९

79

और दर्शन दोनों करके नहीं प्राप्त होने सेतें भी जि-
ह्वा तें लवणका सत् भाव निश्चे होतहै तेसेंही च
क्षुरादिक इंद्रियों करकें अग्रहण भीहै ब्रह्म परंतु का
र्य रूप चिन्ह तें अस्ति मात्र सिद्धहै ऐसे उत्तर करा
के फेर उपदेश करै है किसो ब्रह्म तूं है ६ प्रश्न ब्र
ह्मके साक्षात्कार विषे क्या उपाय है उत्तर जैसें गं-
धार देशतें बन विषे चोरों करकें लेया हूवा बंधेहै
नेत्र जिस्के तिस पुरुषकों नेत्रके बंधन का खोल
नो सोई गंधार देशका उपदेश है तेसें ही आचार्य जौ॰
य के किये हूवे उपदेश तें ब्रह्मका साक्षात्कार और
अविद्याकी निवृत्ति होयहै इस उत्तर करके फेर उ
पदेश करै है किसो ब्रह्म तूंहै ७ प्रश्न सोविद्वा
न किसप्रकार ब्रह्मकों प्राप्त होय है इस अपेक्षा
विषे उत्तर कहै है मन आदिकों के लय होने सेती
ज्ञान दीपक प्रकाशे है तब ब्रह्मकों प्राप्त होयहै
नहीं अर्चादिक मार्गकी अपेक्षा करै है किअर्ची
और धूम्रमार्ग की अपेक्षा नहीं करै हैं और अज्ञा
नी जेहै तेदेहां तरकों ग्रहण करै है इस उत्तर कर
के फेर उपदेश करै किसो ब्रह्म तूंहै ८ प्रश्न जो
मरे हूवे और मोक्ष हूवे ब्रह्मकों प्राप्तहो वें है तोअ
ज्ञानीकी न्यांयी ज्ञानी फेर क्यों नजन्मकों प्राप्तहो
य उत्तर जैसें तपाये हूवे कुहाडे कों ग्रहण करतेहू
वे चोरी करने वाले और नहीं चोरी करने वाले दो

नोंकों नपाये हुवे लोह पिंड के स्पर्श ने नहीं चोरीक
रने वालाका हाथ नहीं जले है और चोरीकरनें वा
लेका हाथ जले है तेसेंही मरन काल विषे ज्ञानी
और अज्ञानी की समान अवस्था विषे सम ब्रह्म
कों प्राप्त होने सेंनी ज्ञानी फेर देहकों नहीं ग्रहण
करे है और मिथ्या देहा दिकों विषे आत्म बुद्धिमा
नके अज्ञानी शरीरकों ग्रहण करे है इस उत्तर एवं
क उपदेश करे है कि सो ब्रह्म तूं है और स्वगतभे
द ब्रह्म निरा वयव और निर्धर्मी विषे नहीं संभव
होय है ९ इति नव युक्ति प्रमाणों के मध्य विषे ल
क्षण करके प्राप्त होने कों योग्य आत्मा है नहीं और
प्रकार इस विचार कों अपूर्वता कहें है ३ प्रारब्धके
नाश पर्यंत देह इंद्रिया दिकों विषे मिथ्या प्रतीति
प्रारब्धका समग्र नाश होने सेंनी इस मिथ्या प्रती
तिकी अप्रतीति पूर्वक कि मिथ्या प्रतीति नरहे अ
द्वितीय आत्म स्वरूप करके स्थित है तिसके वरना
न करनें कों फल कहें हें ४ प्रकरण करके प्रति
पादन करनेंको योग्य जो आत्मा तिसके उपदेश कों
है श्वेत केतू तूनें गुरो नें पूछाथा कि जिसकरके
नहीं सुना सुना जाय नहीं माना मानाजाय नहीं
जाना जानाजाय इसकों आदि लेकर श्रुतियों क
रके स्तुतिकों अर्थ वाद कहें हें ५ जेसें मृतिका

तें उत्पन्न भये घट शरावा दिकों की मृत्तिका तें अभि
पृ. ८० न्नता है अथवा स्वर्ण तें उत्पन्न हूवे कटक कुंडला
दिकों की स्वर्णतें अभिन्नता है तैसेंही कारण तें उ
९० त्पन्न हूवे जगतकी कारण तें अभिन्नता है इत्यादि
क श्रुतियों करिके वर्णन करने कों उपपत्ति कहें
हैं प्रश्न मनन का उत्तर युक्ति पूर्वक विचारणे कों
मनन कहे हैं प्रश्न निदिध्यासन का उत्तर सजातीय
प्रत्यय का प्रवाह और विजातीय प्रत्ययका तिरस्का
र तिसकों निदिध्यासन कहें हैं इनश्रवण दिकों क
के आत्म स्वरूपका साक्षात्कार होय है प्रश्न इसकाप्र
माण कहो उत्तर श्रुति कहे हैं आत्मावारे द्रष्टव्यः
श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्यः इसका अर्थ क
हैं हे और मैत्रेयी आत्माही साक्षात्कार करवे कों
आत्माहि श्रवणकरवेकों योग्यहै योग्य है आत्माही मनन करवेकों योग्यहै आत्मा
ही निदिध्यासन करवे कों योग्यहै प्रश्न श्रुतिने
द्रष्टव्य प्रथम कहा और श्रवणादिक पीछे कहे या
तें व्यवस्था नहीं बनी उत्तर सुन भाई वेदांत विषे
है यह रीत पहली फल दिखाय करकै श्रवणादि
कका उपदेश कर्यो है इति युक्ति जगत की उत्पत्ति
के निर्णय विषे मोक्ष स्वरूपकी प्राप्ती की पूर्ण हु
ई ३० ओंतत्सत् ब्रह्मणे नमः ओं एक ग्राम विषे
ब्राह्मण रहे था तिसके एक स्त्रीथी और एक पु

त्रथा और एक कन्याथी उस ब्राह्मण नें अपनी
पुत्रीका संबंध किया एक ब्राह्मण के संग औ
र दूसरे ब्राह्मण के साथ उसकी स्त्रीनें उसीका
न्याका संबंध किया और उसी कन्याका संबंधउ
रा५/१ सही ब्राह्मणके पुत्रने और तीसरे ब्राह्मण केसा
थ किया फेर कोई दिन बीते वह कन्या मरगई
जिन पुरुषोंके साथ उस कंन्याका संबंध किया
था उनोंने सुनां और सुन करके तीनों पुरुष आ
ये उस कंन्या के पिताने काष्ठ संग्रह करके उसक
न्या को दाह करदियो उन्हतीन पुरुषों विषे एक
पुरुष तो उसकंन्याके साथ जल गया जिसकेसा
थ उसके भाई नें संबंध किया था और एक पुरु
ष कुटिया बांध कर उसकंन्या की चिता पर बै
ठ गया जिसके साथ इसके पितानें संबंध किया
था और एक पुरुष देशाटन कों चला गया जि
सके साथ उसकी स्त्रीनें संबंधकिया था औरती
र्थ यात्रा करते हुवे एक ब्राह्मण केघर विषेजा
य करकें भिक्षामांगी उस घर वाले ब्राह्मणनें अ
पनी स्त्रीने कहाकि इस ब्राह्मण कों भिक्षा कर
वाय दे तबवह स्त्रीचूले विषे अग्नि प्रज्वलित
करकें रसोई बनावनें लगी उसब्राह्मणीका लड़
का रोने लगा और कुछ वस्त्र मांगी सोउस ब्रा

ह्मणीनें उस लडके कों समझाया वह बालक न
यु॰ ही समझा तब उस ब्राह्मणीनें उस लडके कासि
८८ र पकड के अग्नी विषे देदिया तब वह परदेशी
ब्राह्मण देष करके चलने लगा इतनें में उसही
का पुरुष आया और उस पुरुष नें उस भिक्षुका
कों कहा कि तुम भिक्षा पाय करके जावो ऐसेंक
ही जावोहो तब उसनें कहा कि तुम दुष्टहो आ
पना पुत्र तुमनें चूले विषे देदिया तुम्हारे किस
प्रकार भोजन कीजिये तब उस घर वाले ब्राह्म
ण ने कहा कि इस पुत्रकों हम जिवा देवेंगे तुम
भोजन करो सोउसनें संजीवनी विद्या पडके उ
स लडके कों जिवाय दिया तब वह भिक्षुक दे
ष कर कै बहुत प्रसन्न हुवा कि यह बडी उत्तम
विद्या है किसी प्रकार यह विद्या इनतें।लीजिये
सो उस ब्राह्मणनें भोजन करके उननें प्रार्थना करी
किमहा राज तुम यह विद्या मुझकों देवो तब
उस घरवाले ब्राह्मण नें कहा कि अच्छा तुम ह
मारा उपदेश लेवो उसनें कहा कि अच्छा हम।
तुम्हारा उपदेश ग्रहण करें गे तुम यह विद्याकें
देवो सोउस ब्राह्मण नें उनका उपदेश लेकरके
वह विद्या पढी जब भले प्रकार वह संजीवनी
या॰ वि॰ उसकों आई तब उसनें ऐसी इच्छा करी जो

हमारी स्त्री दाह करीहै तिसको इस विद्या कर
के जिवावेंगे सो उहां नें चल करके उसीस्था
न पर आया जहां उस कंन्या को दाह किया
था उस स्थान पर आय करके उस विद्याकाउ
च्चार किया उच्चार करतें ही वह कंन्याभी और
उसके साथ जो पुरुष जल गयाथा सोभी दोनों
उठ खड़े भये और तीसरा पुरुष कुटी वांध कर
के उहांही था अब हम यह वार्ता पूछते हैं कि इ
न तीनों पुरुषों विषे स्त्रीका कौन अधिकारीहै
इसवार्ता को श्रवण करके उस कंन्या का पिता
आया तब तीनों पुरुषों ने उस कंन्याके पिता
नै कन्या मांगी कि हम को कंन्या विवाह दे उस
कंन्याके पितानैं जिस पुरुष नैं कंन्या जिवाई
थी उस पुरुष को कहा कि तुमनें तो यह कंन्या
उत्पन्न करी है तूंतो उसका पिता भया तुझ
को इसकंन्याका अधिकार नहीं है और जोपुरु
ष उस कंन्या के साथ जल गया उस पुरुषकें
कहा तूं इसकंन्याके साथ जन्म्याहै तूइसकाभा
ई हुवा तुझको भीइसकंन्या का अधिकार ना
हीं है तब वह तीसरा पुरुष जो कुटी वांधकर
के वैठाथा उसनैं कहा किहमको देवो तबउ
स कंन्याके पितानैं कहाकि तेरेसाथ तोहमनो

संबंध ही किया है तुझकों देवेंगे एक वेद पाठी
यु॰ पंडित कौं बुलाय करकै तेरा विवाह करदेवेंगे
८२ सोई कुटी बांधने वाले पुरुष विवाह के अर्थ ग
या उसका विवाह करकै कंन्या उसकों देदई त
९८ ब वह ब्राह्मण उसकंन्या कौं लेगया उसके घर उ
स कंन्यानैं पुत्र भया उसनैं अपना घर बसाया
दार्ष्टांति कहै हैं कि वेद रूपी ग्राम विषै ज्ञानकां
ड रूपी ब्राह्मण और उपासना कांड रूपी उसकी।
स्त्री कि जिसकौं भक्ति कहै हैं और कर्म कांडरूपी
तिसका पुत्र और पराशांति रूपी तिसकी पुत्री है
सो उसज्ञान कांड रूपी ब्राह्मण नें अपनी पराशां
तिरूपी कंन्या मुमुक्षु रूपी ब्राह्मण कौं संबंधस्था
नी देनी करी और तिसकी उपासना कांड रूपी स्त्री
नें उपासना के जिज्ञासू कौं संबंधस्थानी देनी।
करी और कर्मकांड रूपी पुत्रनें कर्मही जिज्ञासू।
कौं संबंधस्थानी देनी करी सोई कोई कालवि॰
षै मरने स्थानी उस पराशांति रूपी विद्या का वि
लोप पड़गया कि मरण रूपी लोप होगई कि ति
सका अधिकारी कोई नहीं रहा प्रश्न विद्याके।
नष्ट विषै प्रमाण कहो उत्तर गीता विषै कहा।
है सोई कहै हैं एवं परंपरा प्राप्त मिमंराजर्षयो
विदुः सकालेनेह महता योगो नष्टः परंतप २

इसका अर्थ कहैं हैं कहे हुवे प्रकार परं परा करकै
प्राप्त राज ऋषि इस योगको जानै हैं हे अर्जुन।
सो योग महान् कालके वशतें इसलोक विषे।
विछिन्न होगया है इसप्रकार भगवान् नें कहा है
और ज्ञानके लोप होते सेती कर्म उपासना भी।
लोप होवै है तबपरमेश्वर अवतार लेवै है सोई
भगवान ने कहा है यदायदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भ
वति भारत अभ्युत्थान मधर्मस्य तदात्मानं सृजा
म्य हं १ इसका अर्थ कहैं हैं हे अर्जुन निश्चय क
रकै जिस जिस काल विषे धर्मकी हानि होवैहै
और अधर्मकी अधिकता होवै है तिस तिस।
काल विषे मैं आप कों उत्पन्न करूं हूं किमें अव
तार लेवुं हूं और दाह स्यानी इसको अहंगर रू
पी काष्ट और योग रूपी अग्नि विषे दाह रूपी।
लय करदीनी फेर तीनो पुरुष उपासना का
जिज्ञासी और कर्मका जिज्ञासी और ज्ञानका।
मुमुक्षु रूपी तीनो आये सोकर्मे ही जिज्ञासो।
तिसके संगही जल गया तिसें ऐसा जानाकिक
र्मका फलतो योग विषे गया हम क्या करैंगे
रहकरकै क्योंकि कर्म के फल और योग के फल।
एक हैं इन करकै एक अंग है योगका और कर्म।
का सो कर्मही जलगया और ज्ञान काजो मुमु।

तथा सो वैराग्य रूपी स्थिति कों लेकरके स्थित होा
यु. ८२ गया और उपासना का जिज्ञासी जो था सो तीर्थ
यात्रा कों चला गया सो उपास ना का जिज्ञासी
८३ जो तीर्थ यात्रा को गया था सो ब्राह्मण रूपी उपा
सना के आचार्य के घर विषे भिक्षा रूपी उपास
ना मांगी अस उपासना के आचार्य्य नें क्षमा रूपी
स्त्री नें कहा कि यह उपासना का जो जिज्ञासी
आया है तिसकों भोजन स्थानी उपासनादे किस
प्रकार कि धैर्य्य रूपी चूल्हा और तोथा भक्तिरू
पी काष्ठ और संयम रूपी अग्नि इस सामिग्री क
रके इसकों भोजन करदे सो क्षमा रूपी स्त्री इनें सा
मिग्री यों करके उपासना रूपी भोजन बनावती
थी उसकाल विषे तिसकों यशरूपी पुत्रनें व
स्तु स्थानी कोई पदार्थ ईश्वर नें भिन्न स्वर्गादि
क क्षमारूपी स्त्री इनें सामिग्री यें करके मातानें
मांगा तब उसनें समझा वनें स्यानी यह कहा
ज़ो४ कि यश रूपी भक्त होय करके किसी पदार्थो
की वांछा करैगा तो अपसरूप होजावेगा या
ते स्वर्गादिक पदार्थ नहीं दिये जब वह नहीं।
समझा तब धीरज रूपी चूल्हे और संयम रूपी
अग्नि विषे इसकों देकर जलाय दिया तब वह
उपासना के जिज्ञासी रूपी ब्राह्मणनें देष करके

कहाकि तुमनें यश रूपी भक्त पुत्रका अभाव क
र दिया तुमनें भोजन स्थानी उपदेश लेना उचि
त नही है तब उस उपासनाके आचार्य नें कहा तु
मभि प्रायकों नंही समझा है यश रूपी जोभक्ति
पुत्र है जिस्का अभाव नंही होताहै यानें अवस्य
जीवन होवे है प्रश्न इसमें प्रमाण क्याहै उत्तर गी
ता विषे कहा है सोई कहै हैं कौंतेय प्रति जानी
हि नमेभक्तः प्रणश्यति १ इस्का अर्थ कहैं हैं
हे कौंतेय निश्चय करकें प्रतिज्ञा करू हूं मेराभक्त
नंही नाशकों प्राप्त होयहै १ भगवान के वचनहृ
मने सत्यही मानें हैं ईश्वर नें भिन्न फल मांगाथा
यानें इसकों दंड दिया तब जीवने स्थानी यथा
र्थ उपासना के निर्णय वाली संजीवनि विद्या क
रकें यश रूपी पुत्रको खडा किया तब वह उपा
सनां का जिज्ञासी प्रसन्न हुवा और प्रसन्न होक
रकें उपासना केसाधन रूपी भोजन कोंप्राप्त कर
कें उसयथार्थ निर्नयकी विद्याकी वांछा करीकि
उस उपासनांके आचार्य तें प्रार्थना करी किय
विद्या मुझकों दीजिये तब वह विद्या इसकोंदीनी
तब इसनें यथार्थ उपासनांके निर्णयकी विद्या
आई तब दग्ध होनें रूपी लोपहुई यशकीतिस्त्री
के जिवावनें रूपी उदेकी इच्छा कर्तभया किसो

तकी वांछा करी ओर जहां परा शांती विद्या रूपी।
यु. कन्या लय होगई थी तहां इस यथार्थ निर्णय रूपी
८४ विद्याका उद्धार किया सोवह परा शांति विद्या जीव
84 ने स्थांनी प्रगट होई ओर उसके साथ कर्म कांडरूपा
पी जिज्ञासी जले हुये पुरुष स्थानी प्रगट हुवा अ
व इन तीनों जिज्ञासवों विषे परा शांति विद्याका
अधिकार जले हुवे पुरुष स्थानी कर्मष्ठी कोहै अ
थवा तीर्थ यात्रा करने वाले पुरुष स्थानी उपासना
के जिज्ञासू कोहै अथवा कुटी बांध करबैठने वाले।
पुरुष स्थांनी ज्ञानके मुमुक्षू कोंहै किस लिये किस
बंधतीनों के संग हैं परम ज्ञावका तीनोंही चाहे।
हैं सो इस कन्याके पिता स्थांनी ज्ञान कांडनें उपा
सनाके जिज्ञासू और कर्म कांड के जिज्ञासू नें कहा
कि तुमकों उपासना रूपी स्त्री और कर्म कांड रूपी
पुत्रनें संबंध स्थानी उपदेश देना किया था सोतुम
कों कर्म और उपासना ही का अधिकार है परा वि
द्याका अधिकार नहीं है इसपर एक दृष्टांत कहेहैं
एक माताके तीन पुत्रहैं एक रोगी है एक मंदगी
नें उठाहै और एक अच्छा है तिन तीनों के अर्था
माताने भोजन किया दालका पानी और खिच
डी और चूरमा जबतीनों पुत्र भोजन के अर्थ आ
ये तब बडा भाई जोपारोर ने आछाया तिस्ते भो

जन का विचार किया कि यह दालका पानी तो
इसमें दिके अर्थ है यह कि यह खिचड़ी मांदगी
में उठे हुये के अर्थ है और चूरमा मुञ्ज शरीरने
अच्छे के अर्थ है कितीनों भोजन तीनोंके उचि
त है एक एक का विपरीत ओर का बाध करा
ने वालाही है तेसें ही दार्ष्टांतिक हैं हूं श्रुतिरू
पी माता के कर्मेष्टि ओर उपासिक और ज्ञानी।
तीन पुत्र हैं तिन्हों के अर्थ कर्म रूपी दालका।
पानी ओर उपासना रूपी खिचडी और ज्ञान रू
पी चूर्मा किया बडे पुत्र स्थानी ज्ञानी ने विचारक
र के तिनों के विभाग करके दिया यह बेदका
अविरोध अर्थ है तब उसकुटी बांधकर बैठा।
ने वाले स्थानी ज्ञान के मुमुक्षु पुरुष नें तिसा
परा शांति विद्या रूपी कंन्याकी वांछा करी तब
ज्ञान कांड रूपी पिताने कहा कि तूंतो अधिका
रीहै तुझकों हम विवाह देवेंगे तब बेदपाठी।
ब्राह्मण रूपी ज्ञान के आचार्य ने विवाह करवा
नें रूपी उपदेश करदिया और कंन्यादेनें स्थानी
परा शांति रूपी विद्या दिई और पुत्र होनें रूपी
ज्ञान हुवा ओर वरबसावनें रूपी इसकों अपने स्व
रूपकी प्राप्ति हुई असें वैराग्यादिक साधनों क
रके पुरुष शीघ्र ही मोक्षहोवे है प्रश्न इसवि

षे प्रमाण कहो उत्तर श्रीभगवान का वचन प्रमा
गु. णहै सोई कहैं हैं श्रद्धावां लभते ज्ञानं तत्परः सं
८५ यतें द्रियः ज्ञानं लब्ध्वा परां शांति मचिरे णाधिग
८५ च्छति १ इसका अर्थ कहैं हैं श्रद्धावान् पुरुष श्र
द्धा होने सेतीभी कोई मंद बुद्धि मान है तिसपर
कहैं हैं तत्पर गुरोंकी उपासना दिकों करके युक्त
ज्ञानकी प्राप्ति के उपाय विषे श्रद्धावान् और त
त्पर भीहैं परंतु इंद्रियां नहीं जीती हैं इसपर कहैं
हैं संयतें द्रियः भले प्रकार करके विषयों ते निवृ
त भई है इंद्रियां जिसकी ऐसा हुवा श्रद्धा वान् औ
र शीघ्र करकें मोक्षकों प्राप्त होहै प्रश्न आत्मा
तो पुत्रकोंभी कहैं हैं श्रुतियां और युक्ति सोई दि
खावैंहैं आत्मावै जायते पुत्र इत्यादि श्रुतेः इसका
अर्थ कहैं हैं निश्चय करके आत्मा पुत्र होत भया
इसकों आदि लेकर श्रुतियां कहैंहैं जिस प्रकार
अपनें प्रेमहै तिसही प्रकार पुत्र विषेभी प्रेमको
देखने ते युक्तीभी कहैं हैं पुत्रके नष्ट पुष्ट होनेसे
ति मेंभी नष्ट पुष्ट हूं इत्यादिक अनुभवते पुत्रको
आत्मा कहैं हैं प्रति प्राकृत उत्तर स्तनवादी तौरे
र समय इत्यादि श्रुतेः चार्वाक सपष वा पुरुषोंत
र पुरुष अन्तर समय है इसका अर्थ कहैं हैं सोईय
ह पुरुष अन्तर समय है इसकों आदि लेके श्रु

तियां कहै हैं जलते हुवे घरतें अपने पुत्रकों त्या
गकर के अपने भाग जानें तें स्थूल हूं दुबला हूं
इत्यादिक अनुभवतें स्थूल शरीर कों आत्मा क
हैं हैं प्रश्न तौ स्थूल शरीर ही आत्मा है उत्तर औ
र चार्वाक कहैं हैं तेह प्राणा प्रजापतिं समेत्य ब्रू
युरित्यादि श्रुतिः तिस्का अर्थ कहैं हैं इस्फुटे
ते प्राणाः तेइंद्रियां प्रजा पतिं संपत्य ब्रह्मकों
भले प्रकार प्राप्त होकर के ब्रूयुः कहत भये इस
कों आदि लेकर के श्रुतियां कहैं हैं इंद्रियों का
अभाव होने सेती शरीर के चलने के अभाव तें।
काणा मैं बहरा मैं हूं इत्यादिक अनुभवतें इंद्रियों
कों आत्मा कहैं हैं प्रश्न तौ इंद्रियां ही आत्मा है
उत्तर और चार्वाक कहै हैं^ और अंतर आत्मा प्रा
ण मय है इसकों आदि लेकर श्रुतियां कहैं हैं प्रा
णके अभाव होने सेती इंद्रियादिकोंके चलनेके
अयोग्यतें मैं भूखा हूं मैं प्यासा हूं इत्यादिक अनु
भवतें प्राणकों आत्मा कहैं हैं प्रश्न तौ प्राणही
आत्मा है उत्तर तिस प्राण कों खंडन करै है और
चार्वाक अन्योंतरात्मा मनोमय इत्यादि श्रुतेः इ
स्का अर्थ कहैं हैं और अंतर आत्मा मनो मय है
इसकों आदिले करके श्रुतियां कहैं हैं मनके हो
वने सेती प्राणादिकों के अभाव तें मैं संकल्पवा
न मैं विकल्पवान हूं इत्यादि अनुभवतें मनकों।

^ अन्योंतरात्मा प्राणमय इत्यादि श्रुतेः इस्का अर्थ कहै हैं

आत्मा कहें हैं प्रश्न तो मनहीं आत्मा है उत्तर म
नकोंभी खंडन करहै बौद्ध अन्योन्तरात्मा विज्ञा
न मय इत्यादि श्रुतेः इसका अर्थ कहें हैं और
अंतर आत्मा विज्ञान मय है इसको आदि लेकर
श्रुतियां कहें हैं कर्त्ताका अभाव होने सेती क
रणकी प्राप्तिके अभाव तें मै कर्त्ता हूं मैं भोक्ता
हूं इत्यादिक अनुभवतें बुद्धिकों आत्मा कहैंहैं
मनको करणत्व और बुद्धिकों कर्तृत्व सिद्ध कि
या प्रश्न तो बुद्धि आत्मा है उत्तर बुद्धिकों खंड
नकरै हें मीमांसाका आचार्य प्रभाकर औरनै
य्यायिक दोनों अन्यो न्तरात्मा नंद मय इत्यादि श्रु
तेः इसका अर्थ कहें हैं और अंतर आत्मा आ
नंदमय है इसको आदि लेकर श्रुतियां कहैंहैं
बुद्धयादिको के अज्ञान विषे लीन देखने तें मैंअ
ज्ञहूं मैं अज्ञानी हूं इत्यादिक अनुभव तें अज्ञा
नको आत्मा कहें हैं प्रश्न तो अज्ञानही आत
मा है उत्तर अज्ञानको खंडन करै है मीमांसक
दूसरा आचार्य भट्ट प्रज्ञान घन एव आनंद म
य इत्यादि श्रुते इसका अर्थ कहैं हैं प्रज्ञान घ
न आनंद मय है इसको आदि लेकर श्रुतियां
कहैं हैं सुषुप्ति विषे प्रकाश और अप्रकाश
दोनो के सत भावतें अज्ञहूं मैं आपको नहीं
जानता इत्यादिक अनुभव तें अज्ञानोपहितचै

तन्यकों आत्मा कहैं हैं प्रश्न अज्ञानोप हित चैत
न्यही आत्मा है उत्तर तिस अज्ञानोप हित चैतन्य
कों खंडन करै है इसका बोध असदेवेद मग्र आ
सीदित्यादि श्रुते: इसका अर्थ कहैं हैं इस प्रपंचा
तैं असत् ही पूर्व था इत्यादिक श्रुतियां कहैं हैं
सुषुप्ति विषे संपूर्ण के अभाव तैं मैं सुषुप्ति विषे
नहींथा इसप्रकार उठे हूयेका जोस्वभाव तिसके
विचारकाजो विषय तिसके अनुभवतैं शून्यकों
आत्मा कहैं हैं प्रश्न तो शून्यही आत्माहै उत्तर शू
न्यकोतो नहीं जानेहै क्योंकि अभावका सिद्ध का
रनेवाला तूंभाव रूप है प्रश्न हेभगवान तोमैं कों
नहै श्रुतियों और हेतु और युक्ति अरु अनुभ
वतैं सिद्ध करके कहो उत्तर श्रुति कहै है नस्था
ऽस्थूलोऽवस्तुर प्राणोऽमनोऽकर्ता चैतन्यं चिन्मा
त्रं सदित्यादि श्रुते इसका अर्थ कहैं हैं साक्षी आ
त्मा न स्थूलहै नवस्तुहै नप्राणहै नमनहै नकर्ता
है नअचैतन्य है चैतन्य मात्र सत् रूपहै इसकों आ
दिलेकर श्रुतियां कहैं हैं इत्यादिक बलवान् श्रु
तियोंके विरोध तैं पुत्रकों आदिले कर शून्यपर्यं
त जडवर्गकों चैतन्यतैं भासने करके आकाश के
वृध्यादिक की न्यांई अनित्यताहै अहं ब्रह्मेति वि
द्वदनुभव प्राबल्याच्च इसका अर्थकहैं हैं चपुनः

मैं ब्रह्म हूं इस प्रकार ज्ञानियोंके अनुभव बलवा
पृ. नतें जानने कों योग्य है इति युक्ति वेदके सार अ
८७ र्थके निर्णय की संपूर्ण हुई ४८ ॐ तत्सत् ब्रह्म
87 णे नमः प्रश्न हे भगवन् किसी पुरुष कों ज्ञान
शीघ्र होवै है और किसी कों चिरकाल विषे होवै है और
इस विषे क्या कारण है उत्तर कोई साधन वाला पु
रुष श्रवणादिक कर्ता हुवा शरीर कों त्याग कर
के अन्य शरीर कों प्राप्त होवै है क्योंकि पूर्वजन्म वि
षे साक्षात्कार नहिं हुवा है इसें ऐसे पुरुष कों
शीघ्र ही ज्ञान होवे है और साधनों की न्यूनता है
जिसके सो चिरकाल विषे साधन संपन्न होकरके
मोक्ष होवै है प्रश्न शरीर छोटे पीछे कुछ नेम
नहिं है कि उत्तम शरीर कोंही प्राप्त होवै क्योंकि
संचित कर्मों विषे अनेक योनियों के जन्म हो
ने रहे हैं इसें उत्तर ऐसा पुरुष उत्तम देह कों प्रा
प्त होकरके शीघ्र ही ज्ञान कों प्राप्त होवे गा प्रश्न
इस विषे प्रमाण कहो उत्तर गीता विषे कहा है
सोई कहे हैं अथवा योगिना मेव कुले भवति धी
मतां एतद्धि दुर्लभं तरं लोके जन्म यदीदृशं इ
सका अर्थ कहे हैं चिरकाल पर्यंत अभ्यास कि
या है जिसने सो पुरुष योगियोंके कुल विषे कि
योग निष्ठा वालोंके कुल विषे अथवा ज्ञानियों

के कुलविषे जन्मकों प्राप्त होवै है अथवा शिष्या
दिकभाव कों प्राप्त होवैहै ऐसे जन्मकी स्तुति क
रै हैं ऐसा जो जन्महै सोजगत् विषे दुर्लभ तरैहै
मोक्ष के हेतुहै १ प्रश्न गुरोंका ज्ञानतो एकही
है तिस विषे शीघ्रता और चिरकालता कैसी उ
त्तर शिष्यके साधनोंकी तारतम्यता है गुरोंकी
कृपा दृष्टी तो समान है प्रश्न शीघ्रज्ञान जिस प्र
कारहोवै सोई प्रकार युक्ति पूर्वक वर्णन करिये
उत्तर जैसें तोफ विषे स्थित गोला बारूद करा
कै संयुक्त अरु प्यालेविषे भरीहै रंजक जिस्के
तिस्कों कोई पुरुष छोडने वाला बलता हुवा
तोडा लगावै तब तत्काल हीं गोला लाल हो
कर्कै भिन्न होहै यह युक्ति रूप दृष्टांत कहा
अब दार्ष्टांत कहैं हैं तोप रूपी संघात विषे स्थि
त जीव रूपी गोला बारूद रूपी साधनों करिके
संयुक्त प्यालेरूपी शुद्ध अंतःकरण की वृत्ति
विषे रंजक रूपी आतुरी है जिस्के तिस्कों को
ई तोपके छोडने वाले रूपी ज्ञानी पुरुष महा
वाक्य रूपी हाथविषे अर्थ रूपी तोडाज्ञान रू
पी अग्नि कर्कै संयुक्त उपदेश रूपी संयोगके
होने सेती गोला रूपी जीव लाल होनें रूपीप
रमानंद कों प्राप्तहुवा तत्काल ही तोपरूपी सं

यु
८८
तातें भिन्न होगया प्रश्न हे भगवन् ज्ञानके होा
नेकी रीत कहो उत्तर संपूर्ण साधनों करकें युक्त
ऐसा मुमुक्षु काष्टादिक हाथ में लेकरकें और सा
ष्टांग नमस्कार करके और सन्मुख बैठकें प्रार्थ
नाकरे कि हे भगवन् संसार रूपी अग्नी करकें अति
संतप्त हूं मेरे इस दुःखकों निवारण करो ऐसेव
चन कोश्रवण करके गुरु उपदेश करें कि हे शि
सोसंसार ष्य हे जिस संसार ते डरा इतनाही नहीं है जिन
तातें ने जानाहे सातलोक नीचे के और सातलो
लाख क ऊपरके इनचौदः लोक में चौरासी योनियां हैं
अंडज और स्वेदज और उद्भिज और जरायुज और
तैजस कहिये अग्नी ते उत्पत्ती जिनकी और आ
पज कहिये जलतें उत्पत्ती जिनकी और वायव्य
कहिये वायुतें उत्पत्ती जिनकी और मानस कहि
ये मनतें हैं उत्पत्ती जिनकी ऐसी अष्ट प्रकारकी
चौरासी लाख योनियां हैं जिस विषे और ब्रह्मा
विष्णु शिव आदिक संपूर्ण देवतादिकों करके
संयुक्त ब्रह्मांड है ऐसाबड़ा जगत है सोतैंने जा
ना तहां शिष्य कहे है कि हे भगवन् भलेप्रकार
मेने जाना तहां गुरु कहे हैं कि हे शिष्य तो देह
इंद्रियां प्राण मन इत्यादिक संपूर्ण का जानने
वाला है इनतें भिन्न है नजाननें मात्र कहिये ज्ञा

न मात्रंही है प्रश्न हे भगवन् मन आदिक संपूर्णो
कों मैं भले प्रकार जानूं हूं इसविषे प्रमाण कहो
तहां गुरु प्रमाण कहे हैं श्रुतिः कोदेवो योमनः
साक्षी मनोमे दृश्यते मया नहि देवत्वमेवास्मि प
कोदेव इति श्रुतेः१ इसका अर्थ कहे हैं शिष्यक
हे हे कोदेवः कौन देव है गुरु कहे हैं यः मनः सा सोइदेवहै ४
क्षी जोमनका साक्षी है शिष्य कहे है मेमन मया
दृश्यते मेरामन मैंने देखा है गुरु कहे हैं नहिदे
वत्वमेव अस्मि तो देव नहीं है शिष्य कहे है इस
विषे प्रमाण कहो गुरु कहे हैं एको देव इतिश्रु
तेः एकही देव कहिये स्वयं प्रकाश है इसप्रका
र श्रुति कहे हैं १ और साधनों की अपेक्षा रहि
त करके स्वयं प्रकाश मान हुवा अपने विषे आ
रोपित संपूर्ण पदार्थों का प्रकाशक चैतन्य तूं
है प्रश्न- तो भग वन् चैतन्य मात्रंही मैंहूं औरकु
छ नहीं उत्तर तूं चैतन्य सत रूप ही है किसी क
र के भी नहीं नाश होनेतें कालत्रयो विषे विद्यमा
नतें तूं सत्यरूप है प्रश्न अबाध्यता विषे प्रमाण
कहो उत्तर स्मृति कहे हैं नैनं छिंदंति शस्त्रा
णि नैनं दहति पावकः नचैनं क्लेदयंत्यापो न
शोषयति मारुतः इसका अर्थ कहे हैं इसआ
त्माको शस्त्र नहीं छेदन करसके हैं वह्निः

इस आत्माकों अग्नि नहिं जलाय सकै है वपुनः
पु. इस आत्माकों जल नहिं भिजोय सकै है वपुनः
८९ इस आत्माकों पवन नहिं सुकाय सकै है १ इसदे
हके पूर्व और पश्चात् और देहके विद्यमान हो
तेंही तूं चित सत आनंद रूपही है प्रश्न तोमैं स
त चित रूपहूं निश्चे करकै परंतु आनंद किस प्र
कार है उत्तर परम प्रेम केस्थान तें आत्माही परा
मानंद रूपहै काहेतैं कि जिस जिस वस्तु पर तें
आनंद चखावै है तहां तेंही आनंद रूप भानहो
वै है प्रश्न इस विषै प्रमाण कहो उत्तर स्मृति प्रा
माण कहैं हैं पर प्रेमास्पद त्वेन परमानंद रूपता
सख वृद्धिः प्रीत वृद्धौ सर्व भौमा दिषु श्रुता १ इ
सका अर्थ कहैं हैं पर प्रेमके स्थान करकै परमा
नंद रूपता है सार्व भौमा दिषु कहिये चक्र वर्ति
कों आदिले कर हिरण्य गर्भ पर्यंत जिन जिन पा
दों विषै प्रीति वृद्धौ कि प्रीति वटै तिनेंति नेपदों
विषै सुखकी वृद्धी है इस प्रकार तै तित्तीय और
बृहदारण्य की श्रुतियों का अभिमत है श्रुति
भी कहै है सत्यं ज्ञान मनंतं ब्रह्म इसका अर्थक
है हैं सत्य ज्ञान मनंत ब्रह्महै यह तेरे सनत्वा
त्म विषै प्रमाण है अत्रायं पुरुषःस्वयंज्योति
र्भवति यस्यभासा सर्व मिदं विभाती त्यादिश्रु

ते: इसका अर्थ कहें हैं इस विचार विषे यह पुरुष
स्वयं ज्योतिहै कि स्वयं प्रकाश है जिसके भासक
कैं यह संपूर्ण प्रपंच भान होहै इसकों आदिलेकरा
श्रुतियां कहें हैं यहजेरे चित लक्षण विषे प्रमाण
है आनंदो ब्रह्म इसका अर्थ कहें हैं आनंद ब्रह्महै
यह श्रुति तेरे आनंद लक्षण विषे प्रमाण है तिस
ते तूं चित सत आनंद रूप ही है जैसें इन देहादि
कों तैं तूं भिन्न है तैसें ही संपूर्ण जगततें भिन्नहै
साक्षी मात्र एकही सर्व व्यापी है प्रश्न तो हेनाथ
ति रही उत्तर नाम रूपात्मक संपूर्ण जगतकों आ
स्तिभाति प्रियता मात्र करके आच्छादन करले।
तिस पर एक युक्ति कहें हैं भाष्य कारकी जैसें चं
दन की एक लकडी वा अगर की जलकैं संयोग
तें दुर्गंधित हुयी तिसके रगडने सेती निकसीजो
^तिसका गंध^ सुगंध^ करके संपूर्ण आच्छादित होगई कि चंदन
अथवा अगरही मात्र हुई तैसेंही कर्तत्व भोक्तृत्वा
दिकों करके मलीन हुवा जोजीव सोरगडनें रूपी
श्रवणा दिकों करके उत्पन्न हुई जोसच्चिदा नंदात्म
क पार मार्थिक गंध तिसक कें आपको सच्चिदा
नंद मात्रही जान करके नाम रूपात्मक संपूर्ण दे
हा दिक जगतकों आच्छादन करले कि मैं सच्चिदा
नंद मात्रही हूं प्रश्न इसविषे श्रुति प्रमाणक
हो उत्तर वाचारंभणं विकारो नाम धेयं मृतिको।

ध्येय सत्य मित्यादि श्रुतेः इसका अर्थ कहे हैं विचा
यु. र मात्र जो नाम धेय है सो संपूर्ण वाणी करकें कह
ए. ने मात्र है मृत्तिकाही सत्य है इसकों आदिले कें श्रु
90 तियां कहे हैं यह युक्ति रूप श्रुति कही १ और प्र
कार भी शीघ्र ज्ञान होनेकी रीत कहे हैं एक रा
जा गृहस्थ कों त्याग करकें और अति आतुर होक
रकें कोई ऋषी गंगाके निकट बैठेथे तिनकी श
र्णकों प्राप्त भया और बिनती करी किहे भगवन्
मैं अति दुखित हूं मुझकों ज्ञानके उपदेश करकें।
शीघ्रही परम शांति करो किपरम सुखी करो त
ब ऋषी बोले किहे राजन् मुझकों उपदेश करनें
का अवकाश नहीं है तूंगंगा जीके निकट जाय।
करकें प्रार्थना कर कि हे भगवन् कोई ज्ञानी पुरुष
होय तो मुझकों उपदेश करो सोउस गंगाजी विषे
एक मत्स्य रहताहै सोतुझे उपदेश करेगा इसवा
र्ताकों श्रवण करके राजा गंगाजीके निकट गया
पीछे तेंऋषी मत्स्यका रूप धारण करके जलवि
षे प्रवेश कर गये तबराजा बोला कि हेभगवन्
कोई ज्ञानी पुरुष होवे तो मुझकों संसार दुःखतें
निवृत्त करो ब्रह्म ज्ञानतें तब मत्स्य रूप ऋषी ज
लतें भिन्न उदय होकरकें बोले कि हेराजन् मैं तुझ
कों उपदेश करूंगा परंतु कछु कार्य मेरा है सोतूं
प्रथम× ×करदे प्रथम क्याकि मैं अभि तृषावान हूं मुझकों।

पहली जलवत्ता तब राजा बोलाकि हेभगवन्
जल तुम्हारे नीचे और ऊपर तुम्हारे जल और
जल तुम्हारे पीछे और जल तुम्हारे पीछे औरज ९४
ल तुम्हारे आगे और दाहने और जेवामें औरहे
भगवन् जलरूप तुम हो बडा आश्चर्य हेकि
तुम जलकी वांछा करो हो तबऋषी बोले कि
हेराजन् पहलें सत्यकहा ते नें परंतु मेरे कंठ वि
षे दे छिद्र में जल किस प्रकार पीऊं तबराजा
बोला कि हेभगवन् तुम मुखवाय कर कैऊ
परकों पलटा खाय जावो तब मत्स्य रूप ऋ
षीबोले किहे राजा जेसे उपदेश हमे करेहे ते
सा तेंही केंानहीं समझता जल रूप ब्रह्मतेरे
नीचे और तेरे ऊपर ब्रह्म आगे औरपीछे ब्रह्मतेरे
दाहने और ब्रह्महीं वामे है और ब्रह्महीं यह संप
र्ण है और ब्रह्म स्वरूप तेंही है बडे आश्चर्यकी
वार्ता है कितें ब्रह्म रूप होकर्के ब्रह्मकी वांछा
करेहे अब तें जल रूप ब्रह्म विषे तत्पद औरत्वं
पद रूपी दोनो छीद्रों कों वायकर्के कि परोक्ष
अपरोक्ष त्वादिक और कर्तृत्व भोक्तृता दिकों तें
ऊपर कों पलटा लेनो कि अभिस पद शुद्ध ब्रह्म
रूप मेंही हूं इस वाक्यकों समझ कर्के और कं
ठके छिद्र रूपी असंभावना दिकों कों रोककेब्र

त्म मात्रही जानै आपकों तब राजा बोला कि हे भ
पु. गवन् मैं कृत्य कृत्य हूं मैं परमानंद स्वरूप हूं ऐ
९८ सा कह करकैं और नमस्कार करकें राजा वनांतरकों
91 चला गया प्रश्न हे भगवन् सेद विषे श्रुति प्रमा
ण कहो उत्तर श्रुति कहै है अथात आत्मा देशा
एवात्मै वाध स्तादात्मोप रिष्टादात्मा पश्चा दात्मापु
रस्तादात्मा दक्षिणत आत्मोत्तरत आत्मै वेदं सर्व
मित्यादि श्रुतेः १ इसका अर्थ कहै है इसके पश्च
न इसकारण तें आत्माही कों दिखावै है आत्मा
ही नीचैतें हैं आत्माही ऊपर तें है आत्माही पी
छैतें है आत्माही आगेतें हैं आत्माही दाहनेतें
हैं आत्माही वामेतें हैं आत्माही यह संपूर्ण है।
इसकों आदि लेकर श्रुतियां कहैं हैं प्रश्न हे भ
गवन् किसीकों ज्ञान त्रिकाल विषे होवै है तिस
का निर्णय करो उत्तर जिसके शीघ्र ज्ञान होता है।
तिसकों उत्तम मुमुक्षु कहैं हैं और जिसकों चिरका
लमें ज्ञान होवै है तिस विषे दो भेद हैं एक मध्य
म मुमुक्षु है और एक मंद मुमुक्षु है तिन्हों विषे
मध्यम मुमुक्षु कहिये साधनों करके संपन्न प
रंतु श्रवणादिक नहीं भये जन्मांतरों विषे जि
सके तिसकों वारंवार श्रवणादिक करने कों यो
ग्य है प्रश्न श्रवण मनन निदिध्यासन एक वे

र भए तब ज्ञान होताहै वारं वारका नेम कहो का
हा है और जो नेम है तो प्रमाण कहो उत्तर व्यास
जीका सूत्र प्रमाण है सोई कहैं हैं आवृत्ति रसकृ
दुपदेशा दिति इसका अर्थ कहैं हैं श्रवण दिकों
की आवृत्ति करनेकों योग्यहै काहे ते वारं वार केउ
पदेश ते और राज योगके आठो अंग भी चाहिये त
व इसकों ज्ञान होवैगा प्रश्न इस विषे प्रमाण क
हो उत्तर स्मृति प्रमाण है सोई कहैं हैं रागमुक्ते
लोह युते हेम यथाग्नौ योगाष्टांगे रुज्वलित ज्ञान
मयाग्नौ हृत्मात्माने ते परि शिष्टंच विद्दर्य तंसंसा
र ध्वांत विनाशं हरिमीडे १ इस्का अर्थ कहैं है राग
मुक्ते रागादि कों करके मलीन किये हुवे आत्माने
आत्माकों दग्धा तपाय करके किशोधन करके व
पुन परिशिष्टं शेष रहा जोचेत न यं विदुः तिस
कों साक्षात्कार करें हैं तंहरिं अहं ईडे तिस हरिकी
मैं स्तुति करूंहूं सो कौन है संसार ध्वांत विनाशं सं
सार का कारण जो अज्ञान तिसका नाश करनेवा
लाहै काहे विषे तपाय करके इस आकांक्षा विषे
कहैं हैं योगाष्टांगै रुज्वलित ज्ञान मयाग्नौ योगक
हिये सम्यक् चेतना और ब्रह्मचेतन्य दोनोंकी एक
ता तिस्की प्राप्तिविषे साधन भूत निर्गुण के विष
य करने वाले आठों अंगों करके निर्गुण योग के आ
ठों अंग आत्म योग ग्रंथयोग विशेष कानिस विषे

यु॰ २२ 92

कहैं हैं सोई दिखावें हैं देह और वस्त्र आदिक इंद्रि
यों विषे जो विरक्त ता सो यम कहिये इस यम विषे
नियम दिखावें हैं कि आत्म तत्व विषे जो प्रीति सो
नियम कहिये बाह्य के विषयों विषे उदासीन ताकों
ही आसन कहैं हैं और चित्तादिक संपूर्ण भावों वि
षे ब्रह्म करके भाव करने तें संपूर्ण वृत्तियों का जो
निरोध तिसकों प्राणायाम कहिये आपनी बुद्धी की
विषयों तें जो विमुखता सो प्रत्याहार कहिये और
आत्म निष्ठा कों धारणा कहिये ब्रह्म में हूं तिसकें
ध्यान कहिये दृष्टातें भिन्न कछु नहीं अज्ञान रहि
त जो फुरणा मात्र सो समाधि कहिये तिन काष्ठ
स्थानी आठों अंगों करके बलता हुवा जो ज्ञान रूप
अग्नि तिस विषे और जो मंद मुमुक्षु हैं साधनों वि
षे हूं अंतर जिसके और नहिं परि पाक हुवा मन जि
सका तिसके प्रति कहैं हैं पतंजलितें वर्णन कहिये॰
प्रसिद्ध ही यम नियमादिक आठों अंग हठयोग के
तिन काष्ठ स्थानी आठों अंगों करके बलता हुवा
जो ज्ञान मय अग्नि जिस विषे दृष्टांत लोह युक्त हे
म यथा जैसे लोह करके मिले हुये सुवर्ण कों अग्नि
विषे तपाय करके लोह कों त्याग करके सुवर्ण कों।
जैसें ग्रहण करिये है तिसकी न्याई चिर काल विषे
और अति चिरकाल विषे मध्यम और मंद मुमुक्षु।
दोनों आत्म पद कों प्राप्त होवें हैं॥ ओं तत्सत् राम

यह युक्ति शीघ्र और चिरकाल विषे ज्ञान के होनें
के निर्णय की पूर्ण हुई ॥ हरिः ॐम् नमस्त ब्रह्मणे
नमः ॥
ॐ श्रीगणेशायनमः अथाप निषद् कोशल राजाका
भारद्वाज प्रति षोडश काल कौन पुरुष है ॥
प्राणान् श्रद्धां खं वायु ज्योति रापः पृथिवींद्रियं।
मनो न्न मन्नाद्वीर्यं तपो मंत्राः कर्म लोका लोके
षु नाम च सयथेमा नद्यः स्यंद मानाः समुद्रायाणाः
णाः समुद्रं प्राप्या स्तं गच्छंति भिद्येते तासां नामरू
पे समुद्र इत्येव प्रोच्यत एव मेवास्य परि द्रष्टु रिमाः
षोडश कलाः पुरुषा यणाः पुरुषं प्राप्यास्तं गा
च्छंतीति ॥ ॥ ॥ राम राम राम राम राम रा।

93

ॐश्रीगणेशाय नमः ॐएक सेठथा ॐर एक सि
ठाणी दोनें यात्राकों चले तब चलते हुवे एकस्थ
न विषे डेरा किया उसथान विषें एक सूरदासथा
तिसने कहाकि मेंभी तुम्हारे साथ चलताहूं तबसे
ठने मानोंभी किया परंतु सिठाणीनें अपनी गाडी
में बठा लिया तब कुछेक अगेरा जारहताथा
राजाके समीप जाय कर सूरदासनें पुकारा किय
मेरी स्त्रीहै सेठ कहे मेरी स्त्रीहै इसप्रकार उनका
विवाद हुवा तब भिन्न भिन्न सेठ ॐर सिठाणीकें
ॐर सूरदास कों कोठडीमों मूंद दिया ॐर चाकर
नेंसें कहाकि जोकुछ रहे कहें सोजाद रखना इत
नेमें सूर दासने कहा कि मेरीइस्त्री तो नहीं परंतु
होयतो अछा हे नहीं होय तों नही हो इयबाता
सुन केसेव कोंने राजाके संग कहा राजाने सुनके
कहा कि सूर दास झूठाहे ॐर सेठ सचाहे इहन्या
य हुवा इह दृष्टांत हुवा अबदार्ष्टांत कहें हें हें सो
ठ कोन किमात्ती चैतन्य ॐर सिठाणी कोन किबु
द्धी यात्रा स्थानी बुद्धी रूपी सिठाणी को मायक
र जन्म अोर मरण रस्ते मे सूर दास को न किचि
दाभास तब दोनें के विवाद होने स्थानी भिन्न ता
न नहीं हुवा तब चिदाभास रूपी सूरदासनें राजा
रूपी गुरुके अग्र भाग विषें पुकारणे स्थानीया

र्थना करी किहे प्रभूजी ऐसी क्रुपा करो जिस प्रका
यु. र निर्धारण होय तब गुरु रूपी राजानें सखुप्तिस्या
९४ नी कोटडी विषें परीक्षा करी तबसेवक कोंनकि
श्रुती स्मृती ओैर अनभव दृष्टांत दार्ष्टांत ओैर युक्ती
इन सभनते यही निश्चय किया कि सखुप्ति विषें
चिदाभास रहता नंही ताते जो कहता है कि मेंचि
र काल से आ कुछ नंही जानता हुवा यहीसा
क्षी चैतन्य सत्ता है ओैर बुद्धीकी वृत्तिस्यांनी गाडी
विषें प्रतीत हो असोके बल मिथ्या भासहे रहे
गुरु रूपी राजा ने न्याय करणे स्यानी निर्धारण
किया इति बुद्धी रूपी पिंडारी विषें युक्ती पूर्णहु
ई १ ओैंराम ओैंश्रीराम ओैंश्रीगणे शायनमः एक
घरहे उसविषें एक कुरसी धरीहे उसके ऊपर ए
क पुरुष बैठाहे ओैर तब उस घर विषें एक चूहे
ने आए कर बुहारी दीणी उहो पुरुष देखता रहा
तिस्से पीछे एक पुरुषणे आए कर सिंचण कि
या उस पुरुषणें उसको भीदेखा तिसें पीछे ए
क पुरुषणे आएकर सिंचण किया उस पुरुषा
णें उसकोंभी देखा तिसें पीछे ओैर एक आएआ
उसनें बेटाखारण कीये उसको भीदेखा तिसके
पीछे ओैर एक आनतब एकलाही रह गया रहा
दृष्टांत हुवा अब दार्ष्टांत कहे हैं देहरूपी घरा

विषे बुद्धी रूपी कुरसी तिसकी ऊपर बैठणे स्थाा
णी तिसते पौरं पुरुष कौनकी साती ऊेर चूडाको
नकी तमोगुण तिसकी मोह क्रोधादिक वृत्ति
तिनको भी देखने स्यानी अनुभव कि आनन्दने
तर जो गुण रूपी पंखा ऊेर कामादिक वृत्ति
तिनको भी अनु भव किया ऊेर बेद पाठ कौन
की सतो गुण ऊेर सत् संतोषादिक वृत्ति तिा
नको भी अनुभव किया जिसमें तीनो कालाा
विषें तीनो गुणां का अभाव है उस समें आा
त्मा स्वयं प्रकाश मान है इति सुर विषें युक्तीए
णाकृई ऊंब्रह्मणे नमः तीन चोडे थे सोभली प्रा
कार पुष्ट किये जिस काल विषें तिस्रार हूए उ
सकाल विषें एक चोडे के समीप बहुत तोफा
दिकें का शब्द किया तिसकें श्रवण कर्ने एका
स्थान विषेंही खडा रहा एवं पश्चिम यो बंधन
हैं सोको ई दूर नही होआ इसी प्रकार दूसरेचो
डेके पास शब्द किया उसने श्रवण करके बंधन
भी तोडदिये ऊेर कोटकें उलंघन करके खाई
विषें गिरा तबतीसरे पास भी शब्द किया उस
ने बंधन भी दूर किये ऊेर कोट खाई कें भी उ
लंघन किया इह दृष्टांत हूवा अब दार्ष्टांत कहें
हैं तीन चोडे कौन हैं किमंद मध्यम उत्तम इहैा

तीन जिज्ञासु और उनों का फली प्रकार पालना।
पु. कि साधन संयुक्त होना प्रथम घोड़े स्थानी मंद।
९५ जिज्ञासु समीप शब्द कराणे स्थानी तत्वमस्यादिक
९६ महा वाक्यों का उपदेश किया तिसकों श्रवण क
रके स्त्री पुत्रादिक जो एवं पश्चिम बंधन हैं तिन्होंनें
नहीं निवृत्त हुवा इसी प्रकार मध्यम जिज्ञासूकों
भी श्रवण कराणें स्थानी उपदेश किया उसनें।
स्त्री पुत्रादिक एवं पश्चिम बंधन दूर करके वर्ण
रूपी कोटकों उलंघन करकें आश्रम स्थानी खाई विषें गिरा गिरणेकी
निसआश्रम — विषें भ्रमि माण होणा इसी प्रकार तृतीय घोड़े
स्थानी यो उत्तम अधिकारी हैं तिसकोंभी उपदेश
किया उसनें श्रवण करके स्त्रीपुत्रादिक एवं प
श्चिम बंधन दूर करके वर्ण रूपी कोटकों भी उ
लंघन किया इतिघोड़े के दृष्टांत विषें युक्ती प्र
ण हुई ३ ॐ तत्सत् ब्रह्मणे नमः ॐ एक ब्राह्म
ण विद्या ध्ययण करताथा तिसने एक दिनग
णी कों देखा देखके विद्याकों त्यागता भया और
तिस विषें चित्त लगावता भया और उस राजधा
नी विषें एक पुरुषथा उसकों कुष्ठरोग था उस
की निवृत्ती के अर्थ वैद्यसें औषधी कराई और उ
स राजधानी विषें एक पुरुष कों वैद्यने प्रति
ज्ञा करी इसरोग बिना जोकोई और पुरुषय सोम

न्यूकों प्रामहोग्र एक इह प्रतीज्ञा और हमरे इहे खा
लन करणे से न्यून नहीं होग्र तब ओही ब्राह्मण
उस औषधी कों खलल करणे लगा करते हुए कुं
छ औषधी कों भक्षण किया परंतु मरा नहीं ज
ब उस औषधी कों तोलातब न्यून होई तब उस
वैद्य कों राजा ने पूछा कि औषधी न्यून होई
और जेकिसी ने खाई तो मरा नहीं दोनो प्रतिज्ञा
हानी होग्रा तब वैद्य बोला महाराज आप प्रति
तबमैंउसब्रा ह्मणकोपूछों हम ज्ञा करो तब वैद्यनें पूछा उसके पूछने थें ब्रा
ह्मण नें कहा कि में ने भक्षण किया हे औरमे
रे कों राणी की इछाहे तब वैद्यने उसी प्रकार
राजा कों कहा राजानें अपनी प्रतिज्ञा कों देख
कें कहा कि राणी इसकों देओ राणीकों देखतेः
ही मृत्युकों प्राप्त हुवा इह दृष्टांत कहे हे ब्राह्म हुवा अवदार्ष्टांत
ण कौंन हें कि मुमुक्षु तिसने सर्व विद्या कारा
णी रूपी वासना के अर्थ त्याग किया परंतु मोक्ष
की भी इछा करी किसी प्रकार पुरुष कों कुष्ठ
रोग कौन कि जन्म मरण तिसकी निहत्ति को
वैद्यनेवेदरूपी अर्थ गुरु रूपी राजाके समीप सत्संग रूपी औष
धी खरल करणे स्थानी सत्संग करते हुहे ई उस
पुरुषणे भक्षण करणे स्थानी सेवण किया प
रंतु राणी रूपी वासना केवल नें सत्संग रूपी औ

पु॰
९६

षधी करके नहीं मरण होणे स्यानी औषधी सत्संग
का आराम कुछ नहीं हुआ और जिसकाल विषे
राणी के देखने स्यानी वासना निवृत्त हुई उसीकाल
विषे मरण स्यानी मुमुक्षु पुरुष जीवन मुक्त हुआ
ऐसेही सभ मुमुक्षु पुरुषों के यावत्काल वासना वी
ज बनाहै तावत्काल सत्संग और शास्त्रोंका श्रवण
जो औषधी है सोकिसी पुरुषको भी आराम नहींहो
ता इति वासना की युक्ती पूर्ण हुई ४ ॐरामायनमः
एक उलू मरण लगा उसके प्राणही निकसे तब यि
तने दिनो धजीव हैं सोसभ अपने राजाको पुछने
लगे महाराज क्या कारणहै यो प्राण नहीं निकस
दे तब इतना सुनके उलू कहताहै कि हे भाई मेरेको
मरजादा पालने वालाकोई नहीं दीखता इसवास्ते
मेरे को चिंताहै तब सभ जीव कहते हैं महाराज
जो मर्जादा है सो कहो तब उलू कहता है किलो
कका हते हैं किसूर्य उदय भयाहै सोतुमने मानना
नहीं इह दृष्टांत हुवा अबदार्ष्टांत कहते हैं किउलू
कौन यो अज्ञानी आचार्य दिनांध कौन यह सभजी
व उलू रूपी आचार्य सभको कहते स्यानी उपदेश
करता है कि हे शिक्षा सूर्य स्यानी ज्ञान उदय भा
या कोईलोक स्यानी आचार्य ज्ञान कांड के कहते
है सोतुमने नहीं मानणा किकलयुगमें ज्ञान कहा

है और इस विषे प्रमाण भी कहा है अन्धेन नि
यमानायाः नमः कूपे पतंतिहि इसका अर्थ क
हे हैं अन्धे करके प्राप्त करे या अंधे है सो अर्त
न कूप विषें गिरते हैं इति उलूके दृष्टांत कीए
की पूरण हुई ५ रामाय नमः ऊपक सरांयहै
तिस विषे दोस्त्रीयें रहती थीं एक युवा एक वृ
द्धा तिसविषें रेस्त्री एक मुसाफर है सोमुसाफ
र अपने स्थानमों पहुंचा चाहे है युवान स्त्रीके
वश वर्ती है तब अर्धरात्र में वृद्धा स्त्रीने उसकों
उठाए आ और युवाने नही जान दिया प्रहर रात्रीर
हते फेर जगायआ तब उसनें फेर हटाए आ तब
फेर वृद्धास्त्रीनें चार घडी रात्र रहते में जगाए आ
फेर हटाए दिया इतने विषें सूर्य उदय होयआ
उस पुरुषने बडागंभीर बन लङ्घना था और तीन
पर्वत की घाटी लङ्घनी थी और सवन विषें सिंह
हस्ती आदिक बहुत रहते थे और उस पुरुषका
खरचबी मुकगया तब सूर्यको देख करके ब
होत बिलाप करता भया इह दृष्टांत हुवा अब
दार्ष्टांत कहते हैं सरां कौन कि यह शरीर और
स्त्रीआं वृद्धा युवास्थानी सुमति और कुमती औरमु
साफर कौन यह जीव और पहुंचने स्थानी स्थान

अपना स्वरूप तिसकी रक्षा करेहैं जुवान स्त्रीस्था
पृ. नी कुमती के वशवर्ती हूं और अर्धरात्र स्थानीषो
८० डश वर्षकी अवस्था तिस विषें जगाउने स्थानीशु
भ मार्गकी प्रेरणा करी सुमती नें तब^युवास्त्रीस्था तिस^
नी कुमतीनें हटायदिया और प्रहर रात्रस्थानी चा
लीस वर्षकी अवस्था में वृद्धा सुमतीने जगाया
युवा^ आ और कुमतीने फेर हटाए आ तब फेर वृद्धा
स्थानी सुमती नें चार घडी रात्रस्थानी साठ वर्ष
की अवस्थामें जगायआ तब फेर युवा कुमती
नें नहीं जान दिया और सूर्य उदय स्थानी मरण
काल प्राप्त हुवा तब कौन लड़ना किसेसार औ
रतीन पर्वत कौन कि तीनो गुण और सिंह हस्ती
आदिक कौन काम क्रोध लोभादिक और आयुरू
पी खरच मुक गया और सूर्य रूपी मृत्युको देख
करके बहुत पश्चाताप करता भया इति पहियारी
के दृष्टांत विषें युक्ति पूर्ण हुई ६ ॐसर स्वतै नमः
ॐएक बनथा उस बनेविच बडथा उसके नीचेए
क सिंह रहताथा सोसिंह भग्नपाद होताभया तब
तिस बनके मृग उसके समीप आवते भये तबउ
नकों सिंह कहता भया हेभाई जोराजाकों विपद
पडे तो प्रजा रक्षा करे अनें जोप्रजा प्रजाकों विप

द पडे तो राजा रक्षा करे इह सनातन धर्म है ता
ते अब मेरेकों विपदकाल है तुम मेरे भोजनका
उपाय करो तब इह सुनके मृग चुप रहे औरगि
दड़ उपाय करते भये क्या नगर के समीप गर्धा
भ यहां तृणको खातेथे तहां आय कर कहते
हैं इसगर्धभ को अपने राजाकी कन्याका तिल
क करें तो तिलक करके अखियां मूंद कर राज
के सन्मुख किया तबसिंह ने उसको पंजेकरा
मार दिया तब उहो सिंह मारके जलके स्थान
परजाता भया पीछे उसगर्धभ के अंग समग्र ही
भक्षकर गये गिदड़ जब सिंह आय कर पूछता
है इसके अंग कहां हैं उह कहते भये कि यहा
तो अगाड़ी ही रुंड मुंड गया है जो अंग होते तो
अपने आपको बचाव ताना ही इह सुनके सिंह
चुप रहा इह दृष्टांत हुवा अब दार्ष्टांत कहे हैं
बन कौन कि चउदां लोक भरत खंड रूपी उसमे
बट हैं काल रूप उस विषें सिंह रहता है औरका
म क्रोध लोभ मोह अहंकार दंभ मद मान ईर्षा
स्पर्धा इह सभ उस बन के मृग हैं तिनमें काला
रूपी सिंहके सन्मुख कराणे में काम क्रोध अरु
लोभ इह तिन्नों शृगाल हैं यो कोई कहे इसमें प्र

प्रमाण कहे हैं तो श्रीभगवान जीने गीता विषें कहा
पु· है त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः कामः
६८ क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् १ इसका
98 अर्थ कहे हैं तीन प्रकार का नरक द्वार है हे अर्जु
न कैसा द्वार है आत्मा का नाश करण हारा है कौ
न है काम अरु क्रोध अरु लोभ तातें मुमुक्षु पुरु
ष इनें तीनों का त्याग करें तब मृत्युरूपी पंडितनें
काल रूपी सिंहनें जीव रूपी गर्धभ को गिराय
दिया तब चले जाने स्यानी मृत्युके उत्तर कालवि
षें पूछने स्यानी कहाकि इसके सब अंग थे तब
शृगाल स्यानी कामादिकों ने कहा कि यह तो रुंड
मुंड स्यानी अंग हीन गर्दभ रूपी जीव है कैसे कि
हस्त इसको नहीं है कि साधुसेवा भगवत्पूजना
दिक नहीं बनें और पादेन्द्रिय भी नहीं हैं काहेतें
तीर्थादिक भी नहीं बनें और श्रवण इंद्रिय भी न
हीं है काहेतें सत्शास्त्र का श्रवण भी नहीं बना इ
सतें और वागींद्रिय भी नहीं है जिसतें भगवन्ना
म उच्चारण नहीं होआ और नेत्रेंद्रिय भी नहीं है
जिसतें भगवत का दर्शन भी नहीं करया तातें
यह जीव रूपी गधा सिंह रूपी काल को उद्यम
करणे स्यानी विषय वासना करके जो ना जीते ।

सोजीव गधाहै जोकोई कहे कि जीव रूप गधेवि
षे क्याप्रमाण है तोइस में स्मृति प्रमाण कहेहें
बुद्ध्वाप्यन्तं वैरस्यं यः पदार्थेषु दुर्मतिः बध्नाति
भावना भूयो नरो नासौ सगर्धभः १ इस्का अर्थ।
कहे हैं जिस पुरुषने जानाहे कि पदार्थ वैरस्
का मूलहै तोभी उन विषे जोभावना बांधे सो
पुरुष गधाहै इतिगाथाके दृष्टांत विषे युक्तिए
ण हुई ७ नमः सर स्वत्यैः ॐएक गंधर्व नगर है
तिसविषें भूषण संपन्न एक कुमारको चोरोंने
निकासके एकवगीचे मो प्राप्तकिया फेर वनमें
लेआए कि उसके भूषण सभ उतार लिए कैसा
वनहे जिस विषें सिंह हस्ती मच्छरादिक बहोत
हैं तब मुसको बांध खातमो गेरदिया, उसकेरो
दनको श्रवण करके किसी पुरुषने खातसे निक
स दिया और उसकियां मुसको खोलकर केवडे
मार्गके कनारे सामान्न मार्ग करके कहाकि इह
गंधर्व नगर कामार्ग है इस करके प्राप्त होजा।
वेंगा सो बालक गंधर्व नगर को प्राप्त हुवा इह
दृष्टांत हुवा अबदार्ष्टांत कहें हैं गंधर्व नगरको
न सखुप्ति तिस विषें भूषण संपन्न कौमारकौ।
न शुभ कर्म संयुक्त जीव तिसको भाविफल दो
ण बाले चोर रूपी कर्म तिनोंने निकास के ब

कहा ^ (left margin, at "पुरुष गधाहै")

के ४ (left margin, at "हैं तब मुसको")

^ उसकेनेत्रभीमुंद
दिए नववालक
वहोतरोदनकर
णलगा ^ १३

यु॰ ९९ गीवेस्थानी स्वप्न में प्राप्त किया तदनंतर जाग्रा
त गढ्वर वन विषें प्राप्त किया औरं शुभ कर्म रूपी
पी योभूषण हैं सो सभ उतारने स्थानी इनसेति
हत्न किया तिस जाग्रत अवस्था में सिंह हस्ती।
कौन काम क्रोध मत्छर कौन ईर्षा स्पर्धा दिकों
करके बालक अती व्याकुल है मुसकों कौनस्त्री
पुत्रादिक तिनों करके अती बद्ध हैं खोता कौन
कि दुःख जन्म मरण नेत्र वेधना की अपने स्व
रूप कों नहीं जाणना रोदण स्थानी निर्वेदकों
प्राप्त हुवा तब कोई पुरुष कौन कि गुरु उनोंने
उसकों बाहर निकास के स्त्रीपुत्रा दिक मुसकों
दूर करियें औरं तत्वमसी वाक्य करके आखों
खोलणे क्या अज्ञान का दूर करणा औरं बडेर
से स्थानी वाद विवाद का जो मार्ग है उसकों।
त्याग करके सामान्य रस्ते करके जोगंधर्व नगर
का उप देश सोई अपने स्वरूपका उपदेश है ति
स उपदेश करके गंधर्व नगर स्थानी अपने स्वरू
पकों प्राप्त हुवा तैसेही उदालक मुनि छांदोग्य
नामा उपनिषद विषें श्वेत केतु पुत्रकों उपदेश
करे हैं किहेपुत्र तूंभी असे स्वरूप कों प्राप्त हो।
इति गंधर्व नगरकी युक्ती पूर्ण हुई ८ छांदोग्य
के ग्रंथ एक घोडा था तिस घोडे केतीन चरण

पृथ्वीमें लगते हैं और एक नहीं लगता तबब
हुत वैद्योंने यतन किया परंतु उहो चरण पृ
थिवी में नहीं लगा तब एक और श्रेष्ठ वैद्यआ
ए उसने आइकरके तोफ और तुपक जंजा
ल और जंमूरा तियार किया और एक हाथमें
कोरडा ले करके एक स्यानी एक साथ सभतो
फादिक दाग दिए और उसी काल कोरडाभी
मारा तब चारो चरण सहित घोडा सुखीभ
या इह दृष्टांत हुवा अब दार्ष्टांत कहैं हैं घो
डा कौन कि मुमुक्षु तीन चरण कौन कि।
विश्व तैजस प्राज्ञ पृथिवी कौन कि जाग्रत्स्व
म सुषुप्ति एक चरण नहीं टिकणा किवा
अपने स्वरूप कों नहीं जाणना तब बहुतवै
द्य कौन सभ शास्त्र वादी तिनों करके जन्ममर
ण रोग नहीं निवृत्तहोआ तबश्रेष्ठ वैद्य कौन
कि सद्गुर उनोंने श्रुती स्मृती स्यानी यों तोफ
तुपक उन साधनों सहित उपदेश रूपी जब
कोरडा मारा तबी घोडे अच्छे होने स्यानी मु
मुक्षु संदेह रहित स्वरूपा नंदको प्राप्त हुवा
और जन्ममरण स्यानी रोग जाता रहा ॥ ९

इति घोडेके दृष्टांत विषे युक्ति पूर्ण हुई ९ और
यु. औरएक सेठथा उसने मालदा जहाज भरा भर
९९ के समुद्रमें गेरदिया जिस समें समुद्रके मध्य
100 में गया तिससमे समुद्र से निकल करके एक
मत्स्यने टक्कर मारी तब जहाज टूट गया।
माल सभ बिखर गया तब सेठ बडा दुखिता
हो करके किसी पुरुष के पासगया उसनें क
हा कि मेरा जहाज पार नहीं लंग सकता
एक मत्स्य है उसने बहुत वखत भन्निआहै
तांते उसका कोई उपाय कहो इह सुणके उस
पुरुषणें एक दर्पण दिया कहाकि इसकों।
लगाय के तू जा तेराजहाज पार हो जायगा
उसने उसी प्रकार किया तब जहाज पार हो
गया और सेठ सुखी होगया इह दृष्टांत हुवा
अब दार्ष्टांत कहें हैं कि मुमुक्षु रूपी सेठने।
बुद्धी रूपी जहाज विषें शम दमादिक जो सा
धन हैं सोमाल भरणे स्यानी संपादण किये।
संसार रूपी समुद्र लंघने वास्ते तबमत्स्य रू
पी अहंकार ने टक्कर लगायके विषरणे स्या।
नी सभ निष्फल होने भए तब मुमुक्षु रूपी
सेठनें पुरुष पूछने स्यानी सत्पुरुष की प्रा

र्थना करी हे महाराज संसार रूपी समुद्र के उत्त
रण का यतन किया परंतु अहंकार रूपी मत्स्य पा
र नहीं जाने देता उसका कोई उपाय कहो तब उ
नों ने विचार रूपी सीसा दिया तब अहंकार रूपी
मत्स्यने अपनाही प्रतीबिंब देख देखा देखके ल
य होय गया औैर सेठके अछे होने स्यानी मुमु
क्षु जन्ममरण ते रहित सुखी होय गया ॥ २१
इति सेठके दृष्टांतकी युक्ती पूर्ण हुई ९ ॥राम

यह युक्तीकापुस्तक श्रीमन्महाराजासाहिब रणवी
रसिंह बहादुर जी सी एस आई इंद्र महेंद्र सिपर
सलतनत जंम्बू काश्मीर व तिब्बतादिपतिके पढने
को है ॥

